अथ श्रीविजयराघवखराडे

लङ्काकाराडप्रारम्भः ॥

सुमिरण ।

बन्दौं श्रीगुरुपद पङ्कजरज सिर्जकसुमति कुमतिकर नाश ।
मोद प्रसूती जन पूती कर भूती दानि खानि परकाश ॥
भव गद मर्दनि यशवर्द्धनि अति गति बर देनि श्रेनि सुरधाम ।
अमृतचूरण परिपूरण गुणदायक सेव्य सुकृत आराम ॥
जन मन दर्पण द्युति अर्पण कर निर्मल बुद्धि शुद्धि दातारि ।
मोह नशावनि सरसावनि सुख पावनि रामभक्ति उरकारि ॥
प्रेम दृढ़ावनि हरि पाँयन महँ ख्वावनि बिषै जनित सन्ताप ।
त्यहि करि अञ्जन दृग अञ्जित पुनि गावहुँ रामचरित हर पाप ॥
करौं बन्दना द्विज चरणन की जे श्रुति नीति शास्त्र बक्तार ।
परम पियारे नारायण के धारे राम भक्ति उर हार ॥
सुजन समाजन पुनि प्रणवत हौं जे परकाजन खड़े तयार ।
अड़े अहर्न्निशि उपकारै महँ हरि गुण गड़े बड़े दातार ॥
कड़े न होवैं जे स्वपन्यो महँ कबहुँ न पड़े बिषय के जाल ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जड़े यथोचित नित धर्मै महँ नाहिंन हर्ष शोक क्यहु काल ॥
पुनि पद बन्दौं द्वैपायन के जिन अष्टादश रचे पुरान।
सेतु बनायो भव उतरन कहँ करि हरि चरणकमलगुण गान ॥
तिन भजि भाषत हौं रघुबर यश कलिमल हरन करन बरज्ञान।
जानि स्वकिंकर अनुकम्पा करि करिहैं सब प्रकार कल्यान ॥
पुनि पद बन्दौं मुनिनायक के ध्यायक जौन राम पद केर।
हरि गुण गायक सब लायक ते देहैं बुद्धि जानि निज चेर ॥
पुनि पग परसौं तुलसिदास के जिनके राम नाम आधार।
कामधेनु इव रामायण जिन रचि कलि मध्य कीन बिस्तार ॥
स०। देव अदेव ऋषी मुनि सिद्ध असिद्ध गुणी निगुणी गण जोऊ।
शाकत वैष्णव शैव तपी श्रुति नीति पुराण प्रमाणक सोऊ ॥
थावर जङ्गम जीव जिते जग रामसों मानत नातहैं कोऊ।
गावत तासु यशै सुदया करि दासके खास सहायक होऊ ॥
बचन समुन्दर के सुन्दर सुनि गुनि मन कह्यो मन्त्रिसन राम।
करहु बिलम्ब न अब आनँद सह बिरचनकरहु सेतु अभिराम ॥
अटक न होवै जेहि कारणते उतरै कटक भटक सब त्यागि।
सुनि अस बानी धनुपानी की बोल्यो जामवन्त अनुरागि ॥
हे रघुनन्दन जन मन चन्दन है भव तरन सेतु तुव नाम।
सहजै मानुष चढ़ि जापर त्वर गमनत अमरराज के धाम ॥
तौ लघु अम्बुधि यह तरिबे कहँ लगि है कितक बार हे नाथ।
पलहु न बीतै मन चीतौ तौ सब दल तरै जलधि इक साथ ॥
यहि बिधि भाषत जामवन्तके मन अभिलाषत सुबुधि सुजान।
प्रभु रुख राखत मुद चाखत इमि भाखत भयो बीर हनुमान ॥
शास्त्र बखानत जग जानत सब है बड़वानल नाथ प्रताप।
आप आगमन लहि प्रथमैं तेइँ सोक्यो सकल जलधिको आप ॥
तव रिपु रमनी के रोदन ते नैनन बही जौन जलधार।
ताते भरिगो पुनि सागर यह और न कछू बात कर्तार ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

युक्ति उक्ति अस कपिनायककी सुनि मुसक्यान भानुकुलभान।
सबिधि प्रशंस्यो आनन्दित ह्वै हे हनुमान धन्य तुव ज्ञान॥
लखि अभिलाषा सीतापति की मन्त्री जामवन्त हर्षाय।
निकट बोलायो नल नीलहि पुनि सबरो हालकह्यो समुझाय॥
तुमपर दाया रघुनन्दन की परसत करहि तरत पाषान।
रचौ सेतु अति आतुरता ते धरि हरिचरण कमल को ध्यान॥
देर न लागै दल उतरै ज्यहि पूरण होय स्वामि को काम।
यह कहि पुनि गुनि पविलावनहित टेर्यो भालु कपिन लै नाम॥

क०। हे मतिसीव सुग्रीव गवय गय बालितनय अतिशय बल जोरा।
हे दधि आनन वीर गवाक्ष मयन्द गयन्द बली न अथोरा॥
सेतु समुन्दर बांधन के हित लावहु बेगि घने पवि रोरा।
एक तौ श्रीरघुराजको काज औ दूसर मानिकै मोर निहोरा॥

सुनि अस बाणी जाम्बवन्त की कपि अरु भालु रामपद ध्याय।
चले असंख्यन भट जय जय करि दक्षिण दिशा गये हर्षाय॥
एक फलङ्का महँ शङ्का बिन तरु अरु शैल लेहि कर तानि।
आनि देहिं सो नल नीलहि पुनि लागे रचन सेतु सुखदानि॥
समय न बीतो मन चीतो शुभ सुन्दर सेतु कीन तय्यार।
लखि अति हर्षे रघुनन्दन मन जनु निर्मयो जक्ककर्तार॥
तब अस पूछ्यो नलनीलहि प्रभु इतकछु लखि न परत सामान।
कर्तब कीन्ह्यो कहजाते यह इक महँ जुरे सकल पाषान॥
इहि बिधिबाणी सीतापतिकी सुनि नल बिहँसिकह्यो समुझाय।
हे प्रभु संशय कछु यामहँ नहिं जो बिधि कियो कहत सो गाय॥

क०। राउर पावन की रजको प्रभु गारो बनायकै यामहँ पाग्यो।
भक्तिप्रभावको तावदियो मलजारिकै चूनाकियो सोइ राग्यो॥
नाम प्रताप को कै बरमा पुनि तासन ये पवि कोणन दाग्यो।
बन्दि जड़्यो यशके हथुरा अरु टांको रकार मकारको लाग्यो॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

यहि बिधि सुन्दर बच नलके सुनि अति आनन्द भये रघुराय ।
जामवन्त अरु शुभकण्ठहि पुनि बोलि समीप कह्यो समुझाय ॥
है मन रमनी यह धरनी अति बरनी छटा न मोपै जात ।
चित उतकण्ठा मन आवत इक तुमसन कहत बरणि सो तात ॥
इहां थापना शिवशंकर की करिहौं अवशि सहित उत्साह ।
करहु सो आतुर तेहिसामा तुम जेहि परिपूर होय मम चाह ॥
लखि यह इच्छा रघुनन्दन की बृन्दन चले बँदरवा धाय ।
बोलि लयाये बहु मुनियन कहँ आये ऋषि समूह हर्षाय ॥
बुद्धिबिशारद ऋषि नारद सह आये श्रीबिरञ्चि सुखपाय ।
हरि गुण गायन द्वैपायन सह पहुँचे मुनि पराशरहु आय ॥
भरद्वाज अरु घटसम्भव मुनि गौतम अत्रि अङ्गिरा गाधि ।
देवल लोमश मार्कण्ड मुनि आये सुष्ठु मुहूरत साधि ॥

स० । कण्व क्रतू कपिलादिकलै पुनि और ऋषी जग जौन गनाये ।
सिद्ध सुरेश गणेश जलेश समेत सबै सुर आनँद छाये ॥
योगीजपी बनबासी तपी द्विज बन्दि सदा जे रहैं हरि ध्याये ।
बोधि कै राम मनोरथ ते सब शोधि कै सुष्ठु मुहूरत आये ॥

नमस्कार करि तिन सबहिन को भेंटे कण्ठ लाय रघुनाथ ।
स्वच्छासन पर बैठास्यो पुनि बोल्यो बचन जोरि युग हाथ ॥
हृदय कल्पना मम आई इक सो भाषत हौं सबै सुनाय ।
त्यहिसुनि मन गुनि शुभ सम्मतकरि वेश निदेश देहु फुरमाय ॥
अति प्रिय लागत यह अस्थल मोहिं है तट सिन्धुकेर सुखदाय ।
इहां थापना शिवशङ्कर की चाहत करन बेद बिधि लाय ॥
नहिं मोहिं प्यारो शिवशङ्करसम दूसर सुरन नरन महँ आन ।
बसौं सर्वदा हिय शम्भू के धारे रहत सदा हिय ध्यान ॥
शम्भु बिरोधी स्वहिं भावै ना होवै चहै मोरही दास ।
नहिं कोउ रक्षक शिवद्रोही को पावै अवशि नरकमहँ बास ॥

स० । है शिव ध्यान निरन्तर जाउर अन्तर मो शिवमें न विचारो ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

नाम जपै शिवको निशि बासर राखै पदाम्बुज प्रेम अपारो ॥
शम्भु स्वरूपहि पूजै सदा दृढ़ भक्तिके भावते होय न न्यारो ।
सो तन मानुष धन्य धरामधि है स्वहिं प्राणहुँते अति प्यारो ॥

सुनि इमि भाषण जगतारण को सुर मुनि सब समाज हर्षाय ।
अमृत बाणी कहि भाषत भे हे प्रभु! भक्तबछल मन काय ॥
यहि सम कारज परमोत्तम अरु नाहिन करन हेतु क्यहुकाल ।
अवशि थापना शिवशङ्कर की करिये सकल त्यागि जंजाल ॥
होय जो आयसु हम सबहिनको शीघ्र सो करहिं शीशपर धारि ।
जाते कारज मङ्गलीक यह पूरण होय बिघ्न परिहारि ॥
देहु सुआयसु कपिनायक को लावैं बेगि यज्ञ सामान ।
चन्दन अक्षत दधि दूर्वा अरु पल्लव पञ्च पुष्प दल पान ॥
सकल तीरथन को चाहिय जल कदली खम्भ अम्ब पालास ।
अरु खदिरादिक के खम्भा बर यव तिल धूप दीप कर्पास ॥
कुशा कलश घृत अरु पूगीफल शुभ मिष्टान आठहू धात ।
शहद शर्करा नारिकेल अरु हरदी दुग्ध तुलसि का पात ॥
इन्हें आदि ले अरु सामा जे चाहिय शम्भु प्रतिष्ठा काज ।
बेगि सो आवन का चाही प्रभु है शुभ दिवस मुहूरत आज ॥
सुनि मुनि भाषण इमि सीतापति पुनि सुग्रीवहि कह्यो बुझाय ।
बेगि मँगावहु यह सामा तुम हनुमानादि बीर पठवाय ॥
पायकै आयसु इमि स्वामी को शुभगर लीन बीर हंकारि ।
कहि समुझायो तिन सबहिन को चले निदेश बेश शिरधारि ॥
सप्त जलधि को जल लावन हित आतुर चले बीर हनुमान ।
शेष पधारे वन गावँन कहँ लावन हेत यज्ञ सामान ॥
मुनियन सामा बतलाई जो सो सब खोजि खोजि कपि भालु ।
बेगि लयाये रघुनायक ढिग को कहि सकै तौन सब हालु ॥
प्रापत ह्वैगइ सब सामा जब तब प्रभु बिधिसन कह्यो बुझाय ।
हे बिधि! दाया करि मोपर अब शिव थापना देहु करवाय ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

हाथ जोरिकै बिधि भाष्यो तब करिये नाथ बचन परमान।
शम्भु प्रतिष्ठा करवावन हित कोउ आचारज चही सुजान॥
जबलग होय न आचारज कोउ केहिबिधि होय अरम्भन याग।
योग्य होय जो आचारज के करिये ताहि सहित अनुराग॥
यहि बिधि बाणी सुनि धाता की बोले ब्यास देव हर्षाय।
तुम सम उत्तम आचारज अरु ह्वै है अन्य कौन इत आय॥
शम्भु प्रतिष्ठा बिधि ज्ञाता इत तुमसम नहीं और कोउ आन।
ताते यहि क्षण रघुनन्दन के तुम आचार्य होहु सबिधान॥
बचन मनोहर द्वैपायन के सुनि इमि सृष्टि करन शिरनाय।
हाथ जोरिकै पुनि बोलतभे मुनिबर श्रवण करिय मनलाय॥
यावत बैठे इत सुर मुनि ऋषि एकते एक बुद्धि आगार।
लोक बेदकी बिधि जानत सब हैं अति दक्ष नीतिके कार॥
पै शिव अर्चा की चर्चा बिधि करिबो बेद शास्त्र अनुसार।
ज्ञाता रावण सम दूसर नहिं राच्छत जक्त मध्य अधिकार॥
वा सम पण्डित मति मण्डित अरु दूसर शम्भु भक्त कोउ नाहिं।
परम पियारो शिवशङ्कर को निशिदिन जपै शम्भु उरमाहिं॥
उत्तम नाती मुनि पुलस्त्य को मुनि बिश्रवा केर है तात।
सोहै लायक आचारज के कीरति जासु जक्त बिख्यात॥
इमि बिधिबाणी धनुपाणी सुनि गुनिमनकह्यो बिधिहि समुझाय।
केहि बिधि ऐहै इत रावण सो कहिये बृत्त तौन मन लाय॥
भाष्यो धाता तब रघुबर ते करिये अस उपाय हे नाथ।
पत्र निमन्त्रण को लेखन करि भेजिय हनूमान के हाथ॥
प्रभुकर अङ्कित खत देखत सो अइहै अवशि इहां हर्षाय।
ह्वै आचारज करवैहै सो शिव थापना बेद बिधि लाय॥
यह मत भायो रघुनायक मन लै लेखनी मोद सह हाथ।
नाम दशाननके लिखिकै खत पुनि सबलिख्यो आपनी गाथ॥
आतुर सौंप्यो सो हनुमत कर औ सब दियो बृत्त समुझाय।
CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

करि रघुनन्दन पद बन्दन तब हनुमत चले लङ्कपुर धाय ॥
को छबि बरणै कपिनायक के पायक प्रबल राम को जौन ।
पौन गौन करि आतुरता ते पहुँच्यो लङ्कबङ्क बल भौन ॥
कह्यो सँदेशा दरमानी ते सो रावणहिं सुनायो जाय ।
पायक आयो रामचन्द्र का आवन चहत आपु ढिग साय ॥
अज्ञा दीन्ह्यो तब रावन ने पठवहु त्वरित दूत मम पास ।
आय सो भाष्यो हनूमान ते पहुँचे सभा बीर बलरास ॥
स्वर्ण सिंहासन पर आसन किये राजत जहां निशाचर नाथ ।
माथ नाय के तहँ सम्मुख ह्वै दीन्ह्यो पत्र लङ्कपति हाथ ॥
लियो बाम कर हँसिपाती सो बाँचन लग्यो अधिक लवलाय ।
जानि निमन्त्रण रामचन्द्र को उर असमंजस कियो बनाय ॥
शोचन लाग्यो त्यहि अवसर यह कारण कौन निमन्त्रण क्यार ।
काह जानि के रघुनायक म्वहिं प्रेरयो बैर भाव परिहार ॥
चही जाइबो यहि अवसर म्वहिं आतुर रामचन्द्र के पास ।
करि निर्धारन मन जैबे को कीन्ह्यो सभा बेगि बर्खास ॥
ह्वै आनन्दित कपिनायक सँग चलिभो बैर भाव बिसराय ।
आय पहूंच्यो झट सागर तट जहँपर राम लषण दोउ भाय ॥
इकदिशि राजत मुनिमण्डल जहँ इकदिशि सुरसमाजको साज ।
चहुँ दिशि सैना कपि भालुनकी मध्यम अवधराज बिरराज ॥
आय दशानन तहँ प्रापत भो कपि केशरी सुवन के साथ ।
रावण आवत लखि ठाढ़े भये बिधि सह सुरसमाज रघुनाथ ॥
करि अभिबादन तब रावण को आसन स्वच्छ दीन बिछवाय ।
लाय सहादर बैठारयो तहँ पूछ्यो कुशल प्रश्न हर्षाय ॥
बिहँसि दशानन तब भाषत भो सुनिये राम सन्त सुख धाम ।
दियो निमन्त्रण केहि कारण मोहिं कहिये ममागमनको काम ॥
बचन मनोहर सुनि रावण के श्रीरघुनाथ हर्ष के साथ ।
अमृत बाणी सों बोलत भे आशय सुनिय मोर दश माथ ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

है मन रमनी यह धरनी अति अम्बुधिनिकट प्रकट शुभथानि।
इहां थापना शिवशंकर की चाहत करन चित्त अनुमानि॥
भाष्यों सम्मत सुर मुनियनते तिन यह कह्यो मोहिं समुझाय।
शम्भु प्रतिष्ठा करवावन हित श्रीरावणहिं लेहु ब्वलवाय॥
शम्भु समर्चा बिधि जानत सो जस श्रुति शास्त्र कीन निर्धार।
ताहित तुमकहँ दियो निमन्त्रण उचित सो करहु लङ्क भर्तार॥
सुनि रघुनन्दन मुख बाणी यह अति आनन्द भयो दशमाथ।
उर मुद खोलत तब बोलत भो कीन्ह्यो पर बिचार रघुनाथ॥
शिव आराधन सम साधन अरु है नहिं नरन करन अह्लाद।
नर बर देवत सब सेवत ज्यहि तजि शिवभक्त और जग बाद॥
धनि शिवसेवी नर दुनिया महँ पावत चारि बस्तु अनयास।
सदा अनन्दित सो रैहै जग जो शिव चरण कमल को दास॥
अज अबिनाशी सुखराशी नित बासी शुभ्र मेरु कैलास।
नाशी पाशी यम समनक भ्रम जन मन रमन दमन भवपास॥
ज्ञाता त्रय गुण तीनि काल के घालक भाल कुअङ्कन माल।
धरिधाता तन जगसिरजत जो पुनि ह्वै विष्णुकरत प्रतिपाल॥
शम्भुरूप धरि पुनि नाशत सोइ ज्यहिडरडरत काल को काल।
निर्गुण सर्गुण निर्विकार सो ध्यावत भगत जगत जंजाल॥
करत थापना तिन शङ्कर की हे अवधेश वेश यह काम।
पूरण ह्वै है मन चिन्तित सो प्रापत होन यही सब साम॥
श्रुति बिधि ज्ञाता बिधि बैठे इत ये आचार्य होहिं अभिराम।
नतरु पराशर द्वैपायन मुनि ये हैं करन योग्य गुरु राम॥
सुनत दशानन मुख बाणी यह बोले सृष्टि करन मुसक्याय।
तुम हौ सेवक शिवशङ्कर के निश्चय सदा बचन मन काय॥
बसें निरन्तर शिव मानस तुव पूजत रहत नित्त शिव पायँ।
ताहित ह्वैबो आचारज को यहि क्षन उचित तुमहिं को आय॥
ह्वै आनन्दित तब बोलत भो सांचो शम्भु भक्त दश माथ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

है असमञ्जस इक यामहँ अरु तुमसन कहत तौन रघुनाथ॥
शम्भु थापना बिन पत्नी के करब न उचित अहै क्यहु काल।
जेते कारज मङ्गलीक जग होत न बिना युक्त किये बाल॥
प्रथम कीजिये निर्धारण त्यहि तत्पश्चात् होय कछु काज।
सुनि इमि भाषण दशआनन को शोचन लगे राम रघुराज॥
युक्ति न भावै कछु हिरदै महँ तब दशबदन कह्यो मुसक्याय।
करिय याचना रघुनन्दन जो तौ सिय देहुं काज यह पाय॥
शम्भु प्रतिष्ठा के करिबे हित केवल सीय देहुँ मँगवाय।
पुनि लैजैहों मैं लङ्का को जब थापना पूरि ह्वैजाय॥
लङ्कापति को सुनि भाषण इमि शङ्का युक्त भये रघुराय।
सम्मत पूछ्यो सब मुनियन ते रावण कथित बृत्त समुझाय॥
मुनिन बुझायो कहि रामहिं तब है प्रभु काज शीघ्रता क्यार।
युक्ति न बनि है यहि अवसर अरु ह्वै है यही भांति निर्धार॥
आकृति सुबरण कै जाते बनि पै यहि समय कठिन है राम।
ताते मांगिय सिय रावण ते जाते होय शीघ्र यह काम॥
सुनि मुनि सम्मत चित चिन्तनकरि भाषतभये भानुकुल भान।
हम न माँगिबे सिय रावण ते लेबे जीति समर मैदान॥
लागत लघुता यह कीन्हे ते रघुकुल रीति होत बिपरीति।
याते शोचिय कछु दूसर मत ज्यहि त्वर होय काज बिन ईति॥
यहि बिधिबाणी धनुपाणीकी सुनि पुनिकह्यो मुनिन मन शोधि।
औरौ युक्ती है याकी प्रभु चाहिय समय लेहु त्यहि बोधि॥
अनुचित यामहँ कछु नाहीं है ना कछु शोच करन को काम।
है श्रुति सम्मत यह भाषतसो सुनि मन गुनिय ताहि हे राम॥
आगे करि कै अपमानहिं अरु करि पश्चात् मान को ठान।
स्वारथ साधत सोइ ज्ञानी नर स्वारथ नशे कहत अज्ञान॥
याते उत्तम शुभ कारज अरु दूसर करन हेतु जग नाहिं।
किये याचनौ जो पूरण होय तौ समझिये धन्य मन माहिं॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

यहि बिधिभाषत सुरमुनियनके सुनिमनशोचि मोचिभ्रमजाल।
कियो याचना तब रावण ते सुनिये सत्य बचन दशभाल॥
देहु जानकी मोहिं माँगे ते केवल शम्भु थापना काज।
पुनि लै जायो तुम लङ्का को पूरहु मोरि याज्ञा आज॥
यहि बिधि भाषत रघुनन्दन के आतुर उठ्यो निशाचरराय।
रथ चढ़िलीन्ह्यो पथ लङ्का की पहुँच्यो भवन जाय हर्षाय॥
पुष्पवाटिका महँ प्रापत भो जहँ पर रहैं जानकी माय।
बोलि कहारन सजवायो शुभ शिबिका परम अनूपम लाय॥
बिहँसि जानकी सों बोलत भो हे रघुबंश बिभूषण बाम।
मोसन यांच्यो रघुनायक त्वहिं केवल शम्भु थापना काम॥
मुद सह गमनो अब सागरतट तुवहित सज्यो सुखासन यान।
काज अवश्यक तुव स्वामी को चलिये बेगि न कारण आन॥
यहि बिधि भाषत सुनि रावण के हर्षित भईं जानकी माय।
ध्यान धारिकै रघुनन्दन को आतुर चढ़ीं सुखासन जाय॥
बढ़ी लालसा उर दर्शन की भारिगो महामोद सों गात।
बनै न बरणत त्यहि समया को सिय हिय प्रेम नेम नवजात॥
यथा चन्द्रमा निशि पूनो का निरखन हेतु जलधि सरसाय।
पावस आगम जस हर्षे शिखि रवि आगमन कमल बिकसाय॥
जानि अवाती जिमि स्वाती की चातक हृदय होय आनन्द।
तैसइ सीता मन बीता सुख पावत जानि भानुकुल चन्द॥
चढ़ीं पालकी जगदम्बा जब इत उत जुटे कहरवा चारि।
अति बल बगरे लैंडगरे तब ज्यहि दिशि परे भक्त भय हारि॥
चल्यो पछारी रथ ताही पथ अकथ जुझार लङ्कपति क्यार।
जोते खच्चर त्वर वाहक युग झनकत मन्द मन्द झनकार॥
समय न लाग्यो मुदजाग्यो हिय सिय पालकी सहित दशमाथ।
आय पहूँच्यो झट सागरतट ज्यहि थल सदलबसे रघुनाथ॥
सिय पिय आश्रम जब पहुँचतभइँ कहरन पलकी धरी उतारि।
CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

उतरि भूमिजा भुवि आईं तब साईं सुरति दीन्हि दृगपारि ॥
जलधिसमीपै विमलस्थल अति आसन बिछे सुभग मृगछाल।
डसे कुशासन तिन ऊपरबर तिनपर बैठ अवधनृपलाल ॥
जग अस को भा जो शोभाशुभ त्यहि क्षण केरि कहै सब गाय।
जिनगुण गावत श्रुति हारेहिय शेश न सके लेशहू पाय ॥
खलदल दूषण रघुकुल भूषण निजजन पूषण भक्त अधार।
पार न पावत ब्रह्मादिक ज्यहि छबिलखि मारखात धिरकार ॥
त्रयजग त्राता लघु भ्रातासह सोहत दीप्तिमान जनुभान।
चार शरीरन शुचि बल्कल के पूति बिभूति अङ्ग निर्मान ॥
शरद चन्द्र सममुख राजत शिर लटकत जटा छटा छहरान।
पान करनको जनु अमृत रस शशिमहँ शेश बाल लपटान ॥
लसै जनेऊ सुख देऊ हिय माल बिशाल ललत गलमाहिं।
सरकस तरकस शरनिकरनयुत औ पटपीत फँसितकटि पाहिं ॥
कञ्जन खञ्जन छबिहारी चष चञ्चल तकनि मन्द मुसकानि।
पाणि लजावत द्युति मृणाल की गोलकपोल माधुरी बानि ॥
यती सुबेषन सों सोहत युग बन्धव धरे हाथ धनुबान।
बामदहिन दिशि जामवन्त अरु शुभगल बालितनय हनुमान ॥
इत उत राजत सुर मुनियन गन नैनन लाहुलेत हर्षान।
धन्य जन्म जग उन पुरुषनको जे मन मगन सदा यहि ध्यान ॥
यहि बिधिबैठे लखि रघुबर को सिय मनहीं मन कीन प्रणाम।
सहित दशानन तब सीता को आवत निकट लखतभे राम ॥
भे उठिठाढ़े सुरमुनियन सह लीन्ह्यो मुदित अगारी आय।
लाय सुआसन बैठारतभे सीता सहित निशाचर राय ॥
यावत सैना कपिभालुनके शुभ कण्ठादि वीर बलधाम।
श्री जगदम्बा के चरणन महँ हितसह करतभये परणाम ॥
पुनिकछु अवसरके बीततपर सुरमुनि मन्त्र पाय रघुनाथ।
बिहँसि दशानन सों भाषतभे अब जो उचित करिय दशमाथ ॥
CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तब दशकन्धर यह भाषत भो हे अवधेश बेश बरराम।
आयसु दीजै कपि भालुन कहँ प्रापत करैं लाय इतसाम॥
पुनि शुचितन ह्वै दृढ़ आसन लै करिये आप मन्त्र शिवजाप।
जाते पूरैं तुव कारज सब मङ्गल सहित शम्भु परताप॥
निश्चरपति को यह भाषनि सुनि मनगुनि त्वरित जानकी कन्त।
प्रापत करिबे हित सामासब आयसु दियो बोलि हनुमन्त॥
पुनितन पावनकरि आसन लहि अपना करनलाग शिवजाप।
जेती सामा यज्ञादिककी रावण निकट कीनि कपि प्राप॥
ध्याय सहायक शिवशंकर तब रावण बेदरीति सबिधान।
लैसुर मुनियन को सम्मत शुभ बरबेदिका कीन निर्मान॥
पुनि मखमण्डल की रचना करि यज्ञस्तम्भ दीन गड़वाय।
सबिधि स्वस्त्ययन पढ़ि ताही क्षण घट अस्थापन दीनकराय॥
पुनि गठिबन्धन सिय राघवको निकट सुआसन लीन बिठाय।
लग्यो करावन सुरअर्चा सब जस कछु शास्त्र बेदमत आय॥
पुनि गणनायक अरु गिरिजासह दशहू दिशाकेर दिग्पाल।
कियो प्रतिष्ठा इन सबहिन की नाशन हेतु बिघ्न के जाल॥
पुनि आवाहन अरु पूजन बिधि रघुनायकहि दीनि बतलाय।
सो सब कीन्ह्यो प्रभु हर्षित ह्वै जामहँ सुफल काज ह्वै जाय॥
लग्यो बतावन जस रावन पुनि तस बिधिकरन लाग रघुनाथ।
गणपति गौरी को पूजन करि कीन्ह्यो ध्यान जोरि युगहाथ॥
पुनि आचारज के करिबे हित कीन्ह्यो बरण दशानन क्यार।
करि शुचिजल सों प्रक्षालन पग दीन्ह्यो शुभ रोचना लिलार॥
सबरे जगको आचारज जो जाते प्रकट भये श्रुति चारि।
कथैं निरन्तर गुण शारद सुर शेश महेश जात हिय हारि॥
सो प्रभु लीला बिधि करिबे कहँ हरिबे हेतु धरा को भार।
सो प्रभु दीन्ह्यो करि रावण को निज आचार्य केर अधिकार॥
पुनि दशआनन यह भाषत भो सुनिये भक्तभावते राम।
CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जाननवाले श्रुति चारिहु के मुनि इत करहिं आय तुव काम ॥
यजुर्बेद को अधिकारी जो सो अध्वर्यु होय यहि काल ।
जो मुनि ज्ञाता सामबेद को सो उद्गाता होय बिशाल ॥
होता कीजै ऋग्वेदज्ञहि पोता ज्यहि अथर्व अधिकार ।
बर्ण कीजिये इन चारिहु के तब कछु और काज निर्धार ॥
सुनि इमि भाषण भट रावण को प्रभु मुनियन ते कह्यो बुझाय ।
आतुर चारिहु श्रुतिज्ञाता ते निज निज थलन बिराजे आय ॥
रामचन्द्र तब आनन्दित ह्वै तिनके बर्ण कीन मन लाय ।
भयो अरम्भन तब बेदन को रहिगे दशौं दिशा स्वर छाय ॥
पुनि आचारज बिधि बिधान सों बाचन करत भयो पुण्याह ।
जाके पढ़तै दुख भागत सब जागत हृदय बिबिध उत्साह ॥
पुनि ब्रह्मादिक सब देवन को क्रमते पूजन कीन खरारि ।
पुनि सब देवन के मन्त्रन को कीन्ह्यो जाप प्रीति प्रतिपारि ॥
पुनि आवाहन नवग्रहन को कीन्ह्यो भिन्न भिन्न भगवान ।
श्रुतिबिधि अर्चाकरि तिनहुनकी अस्तुति सहितकीन सन्मान ॥
पुनि आवाहन अग्नि देव को कीन्ह्यो रमारमण श्रीराम ।
दिव्यरूप धरि त्वर प्रगटे सो आसन सुष्ठु लीन बिश्राम ॥
बिधि सह पूज्यो प्रभु तिनहूं को चन्दन गन्ध पुष्प दल माल ।
शीश चढ़ायो मन भायो अति पुनि रोचना दीन दै भाल ॥
हवन करन की लै सामा पुनि अग्निकुण्ड तट धर्‍यो सँभारि ।
सुर मुनि मण्डल आचारज सह लागे हवन करन भय हारि ॥
को छबि बरणैं त्यहि समयाकी धनि सो धरा सुमङ्गल मूरि ।
हवन करत जहँ जनजीवन प्रभु स्वाहा शब्द रह्यो अति पूरि ॥
हवनौ होइगो परिपूरण जब तब दशबदन कह्यो हर्षाय ।
शम्भु थापना बिधि करिबो अब वाजिब तुम्हैं अहै रघुराय ॥
मन अभिलाषा बतलाइय अब जाको पढ़ो संकलप जाय ।
तब रघुनन्दन यह भाषत भे दशमुख सुनहुँ बात मनलाय ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तुम कहँ मारन हित संगर महँ पावन हेत बिजय संग्राम।
करत थापना शिवशंकर की जाते होय प्रपूरण काम॥
सुनि रघुनन्दन मुख बाणी यह दशमुख हँस्यो हृदय हर्षाय।
सबहि सुनावत मन भावत इमि भाषत भयो रामरुख पाय॥
हम कहँ मारन हित चाहत जो शिव थापना करन तुम राम।
तौ कछु शङ्का म्वहिं नाहीं है पूरण करहु आपनो काम॥
है असमञ्जस इक भारी यह तुम सन कहत तौन समुझाय।
बिधि सह कारज करवावन को तुव आचार्य भयों इत आय॥
क्रिया प्रथम की परिपूरण सब बिधि सह तुम्हैं करायों राम।
पढ़ब संकलप को आयो अब रावणमारणार्थ यह काम॥
डिगै कदाचित जो मेरो चित रावण मारणार्थ यहि ठायँ।
औरक औरै पढ़िजावों मैं तौ तुव काज बादि ह्वै जायँ॥
ताते तुमका समुझावत हौं हे रघुबंश बिभूषण राम।
पढ़त संकलप मैं आदिहि ते जस कछु शास्त्र रीति अभिराम॥
रावणमारण हित इतनो पद तुम निज मुख ते कह्यो उचारि।
जामहँ तुव हिय अभिलाषा सब पूरण होय बिघ्न परिहारि॥
यह कहि रावण पुष्पाक्षत अरु मुद्रा स्वर्ण पूगिफल साथ।
देव आपगा को पावन जल लै धरि दियो राम के हाथ॥
बिधि बिधान सों पुनि आदिहिते शुभ संकलप पढ़न तब लाग।
तत्सत ते लै पढ़िहुवँ लगगो रावणमारणार्थ ज्यहि आग॥
निज मुख भाष्यो रघुनायक सो आगे पढ़्यो फेरि दशमाथ।
अहं करिष्ये तक पूरण कै भुवि जल छोंड़ि दीन रघुनाथ॥
पुनि शिव पूजन आरम्भित भो ज्यहि बिधि शास्त्र कीन निर्धार।
शयन करायो अन्नादिक महँ करि २ सुष्ठु मन्त्र उच्चार॥
पुनि प्रदक्षिणा वहि अस्थल की कीन्ह्यो यथालोक ब्यवहार।
शिव अस्थापन करि बिधिवत पुनि लागो होन मङ्गलाचार॥
नभते बर्षा भइ फूलन की हर्षित करन लाग सुर गान।
CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बजे नगारा धुधकारा करि घण्टा शंख शब्द घहरान॥
नाम मनोहर श्रीरामेश्वर शिवको धर्यो मुनिन अभिलाषि।
भये अनन्दित कपि भालुन गन जय जय शब्द रहे सब भाषि॥
भयो प्रपूरण सब कारज जब तब मन मुदित भये रघुनाथ।
त्यही समइया के अवसर महँ बोल्यो मधुर बचन दशमाथ॥
हे रघुनन्दन यहि अवसर पर मैं आचारज अहौं तुम्हार।
हर्षित माँगौ बर मोसन तुम तजि दुइ बस्तु केर अधिकार॥
इकतौ सीता कहँ मांग्यो ना सन्मुख भये बिना संग्राम।
बस्तुसु दूसरि यह मांग्यो ना तुमसन लरब नाहिं हे राम॥
सुनि दशआनन की बाणी यह रघुकुलचन्द मन्द मुसकान।
ह्वै आनन्दित यह भाषत भे सुनिये लङ्कनाथ बलवान॥
हिय अनुरागत बर माँगत मैं हर्षि सो देहु लेहु यश शाख।
तुम कहँ जीतन हम संगर महँ हैं जिय यही एक अभिलाख॥
सुनि मन बिहँसा दशआनन तब भरिगो रोम रोम आनन्द।
बचन अशङ्कित ह्वै भाषत भो सुनिये बिमल भानुकुलचन्द॥
तुव अभिलाषित मुखभाषित बर दीन्ह्यौं अनायास मैं राम।
अब बर माँगत मैं तुमहूं सन हौ तुम लङ्कनाथ अभिराम॥
जब लगि तुम सन रण सन्मुख करि जूझिनजाउँ मध्यसंग्राम।
तब लगि मेरी मति याही रहै बाम न देहुँ लरे बिन राम॥
हिय अभिलाषा सुनि दशमुख की कह्यो तथास्तु जानकीनाथ।
धन्य सराह्यो हित चाह्यो अति धनि रे धीर बीर दशमाथ॥
सबिधि प्रशंस्यो सुर मुनियन ने सुनि बीरता लङ्कपति केरि।
लखि शुभ अवसर त्यहि समया पर रावण कहत रामसन फेरि॥
हे रघुनन्दन तुव कारज सब पूरण भयो हर्ष के साथ।
देहु सुआयसु अब मुख ते कहि मांगत बिदा जोरि युगहाथ॥
यहि बिधि भाषण सुनि रावण को बोले रामचन्द्र हर्षाय।
जो अभिलाषा तुव लङ्कापति होय सो करहु शोच बिसराय॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

स० । श्री अवधेश के वेश निदेशहि पाय हिये हर्षाय दशानन ।
साज्यो महाछबिको गथसोरथ निन्दत जो सुरइन्द्र बिमानन ॥
लायचढ़ाय सियाशिविकापर हैमनमग्न सदाज्यहि ध्यानन ।
आतुरलै गमन्यो घरको सह राघवबन्दि मुनीन्द्र सुजानन ॥
गमनत सीता पुनि लङ्कापथ शङ्कित भईं अधिक मन माहिं ।
लगीं निहारन जगतारन मुख दुखसो कहत बनत कछु नाहिं ॥
भे असमञ्जस वश राघव तब कहि नहिं सके बचन कछु भाखि ।
भार उतारन हित बसुधा को लीला करत मनुज तन राखि ॥
अवसर बीत्यो कछु मारग महँ लङ्का पहुँचि गयो दशमाथ ।
सीय बाटिका पुनि प्रापत भईं हिय महँ जपत रामरघुनाथ ॥
सिद्ध उदासी बनबासी अरु मुनि ऋषि सुर समूह सुरराज ।
दिक्पत्यादिक लै जेते कोउ आये शम्भुथापना काज ॥
लै लै आयसु रघुनन्दन को ते सब गये आपने धाम ।
बिधिहू गमने ऋषि नारद सह हियमहँ जपत जगतपति राम ॥
शम्भु थापना बिधि पूरण यह मति अनुसार बखान्यो गाय ।
मातु शारदा की दायाते पूरण भयो प्रथम अध्याय ॥

इति श्रीभार्गववंशावतंसश्रीमन्मुंशीनवलकिशोरात्मजस्यश्रीमुंशी
प्रयागनारायणस्याज्ञाभिगामीउन्नामप्रदेशान्तर्गतमसवासी
ग्रामनिवासीपण्डित बन्दीदीनदीक्षितनिर्मितश्री
विजयराघवखण्डेलङ्काकाण्डेसेतुबन्धरामेश्वर
स्थापनावर्णनन्नामप्रथमोल्लासः ॥ १ ॥

होहु सहायक सिधिदायक शिव दे शुभ ज्ञान शारदा माय ।
श्रीरघुनायक यश घायक अघ गावत फेरि तोर बल पाय ॥
कथा मनोहर शिवअर्चा की सुनि मन मेरुसुता हर्षाय ।
पुनि यह पूँछत भईं शङ्कर सों हे रघुनाथ भक्त मन काय ॥
शम्भु प्रतिष्ठा परिपूरण जब बिधिवत कियो सन्त सुखसेतु ।
भयो अगारी फिरि कौतुक कह सो समुझाय कहहु वृषकेतु ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

शम्भु भवानी की बानी इमि सुनि हर्षाय ध्याय रघुनाथ।
जनमनरञ्जनि भवभञ्जनि शुभ भाषण लगे मनोहर गाथ॥
मम मनभावन सुरसावन सुख है तुव प्रश्न नशावन पाप।
सोइ चितचावनसों बरणत मैं करिये प्रिये श्रवण त्यहिआप॥
भरद्वाज प्रति जो बरण्यो कहि श्रीमुनि याज्ञबल्कि सुखपाय।
कह्यो भुशुण्डी पक्षिराज सों कहत सो रामचरण चित लाय॥
बिजय मुहूरत को सुन्दर दिन आयो जानि पाय रघुराय।
जामवन्त अरु कपिनायक सन सुन्दर बचन कह्यो समुझाय॥
हे दलनायक सुखदायक दिन लायक गमन करन को आज।
उतरिय सागर चलि आतुर अब करिये सिद्धि अग्रको काज॥
बारिधि उतरन की शङ्का कछु हती सो दूरिकीनि नल नील।
लै दल चलिये अब हर्षित ह्वै कारण कौन करन को ढील॥

स०। पाय सु आयसु या बिधि ते हर्षाय सुग्रीव बली बिन शङ्का।
धाय बोलाय कपीसमुदाय दियोबजवाय पयानको डङ्का॥
बन्दि अनन्दसों पूरि महा कपिवृन्द चले करिकै अहसङ्का।
मानो त्रिकूटसमेत उठाय पयोधिमें बोरन चाहत लङ्का॥

जय रघुनन्दन आनन्दन जन जय अवधेश बेशबर राम।
यह कहि कपिदल बल पूरित ह्वै हरषे धारि बीर इतमाम॥
निज निज सैना सहचैना सजि इतउतगरजि तरजि हहकारि।
ह्वै मदमत्ता बलवत्ता भट डगरे करे अग्र दैत्यारि॥
कपिदलगमनतलखिअवसरत्यहि रघुपतिसन सुकण्ठ हरषाय।
पाणि जोरिकै यह भाषत भे हे प्रभु भक्तबछल मनकाय॥
यद्यपि मारग भइ अम्बुधि महँ उतरब बेप्रयास दिखरात।
तद्यपि चलिबो बहु परिहै प्रभु ताते कहत शोचि यह बात॥
अञ्जनिनन्दन की पीठीपर हर्षित आप होहिं असवार।
अङ्गद पीठीपर लक्ष्मण चढ़ि सहजै होहिं जलधि के पार॥
नभपथ गमनैं ये योधा दोउ क्षणमहँ उतरि सिन्धु को जायँ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सुख सह जैहैं लै तुमकहँ प्रभु यहि हित खड़े आपु ढिगसायँ॥
यहिबिधि बाणी शुभगरकी सुनि मन मुसक्यान भानुकुल भान।
मन्त्रमानिकै शुचि सचिवन को पुनि सोइ बात कीनि परमान॥
चढ़े सुमित्रासुत अङ्गद पर हनुमत पृष्ठि चढ़े भगवान।
सरकस तरकस करिहायें महँ बायें दहिन हाथ धनुबान॥
प्रभु पदपङ्कजरज हियमा धरि नभपथ उड़े युगल बलवान।
जुड़े बिहङ्गम द्वै मानहुं नभ जात उड़ान बायु परमान॥
उड़े सुकण्ठौ सँग तिनहींके नभपथ चले भले हर्षात।
इत उत गमने अरु बानरगण ऋक्षसमूह साथही जात॥
औरौ बानर बहु धावत भे प्रभुके अगल बगल फहराय।
मानहुँ बाहन खलदाहन के सहसन रहे ब्योम मड़राय॥
सेतुकि रस्ता कोउ कोउ धाये इत उत पुच्छ भ्रमाये जात।
कोउ जल पैरत चले बिजैरत धरि जलचरन गात पर लात॥
चढ़ि गिरिशिखरनते फांदत बहु करि करि घोर शोर हहकार।
कोउ कोउ बन्दर जल अंदर महँ बुड़ी मारिजात वहिपार॥
तिनको कौतुक अवलोकन हित जलचर निकर महासुखपाय।
काढ़ि काढ़ि शिर चौगिर्दाते सागर उपररहे उतराय॥
दै दै तारी किलकारी करि भारी यूथ बानरन क्यार।
चल्यो बयारी सम दक्षिण तट सेतु मँझाय सिन्धुके पार॥
पुनि कछु अवसर के बीते पर अङ्गद और बीर हनुमान।
लै रघुनन्दन अरु लक्ष्मण कहँ सागर पार जाय नगिचान॥
रघुकुलभूषण के बैठन हित हनुमत धरा रम्य थलझारि।
डासि साथरी कुशपावन की दोऊ बन्धु दीन बैठारि॥
साथै पहुँचे कपिनायक अरु दलपति जामवंत बलवान।
निरखि शुभस्थलतट दक्षिणपर निवसितभये धारि प्रभुध्यान॥
जेती सैना कपि ऋक्षनकी बृक्षन छाहँ देखि किय थान।
जहां जलाशय जलपूरित अरु हैं फल मूल खान सामान॥
CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कर्म अकारित यह रघुबर को देखि सुपर्ब सर्ब हर्षाय।
आय आयकै रघुनायक ढिग किय अभिषेक नेक गुणगाय॥
दै दै आशिष पुनि गमनत भे तब रघुनाथ जानिकै शाम।
संध्याबन्दन करि बन्धव दोउ ह्वै आसीन लीन बिश्राम॥

स०। लक्ष्मण जानु पै माथधरे सुपरे रघुनाथ धराकुश आसन।
अञ्जनिनन्दन बालितनै कर लै पद चापत आपतनासन॥
दक्षिण बामबली बलधाम खरे सुधरे कर बान शरासन।
बन्दिअनन्दसदा नरसो यहिध्यान लुभानहै अन्य हुलासन॥

भोर भोरहरे पह फाटत खन दिनकर उदयकाल अनुमानि।
जागे रघुकुलमणि निद्रा तजि अशकुन लख्यो दृष्टि दृग आनि॥
बोलि सुमित्रासुत शुभगर अरु हनुमत जामवन्त युवराज।
लगे दिखावन समुझावन सोइ होइ जो रह्यो अमङ्गल साज॥
बीर अशेषहु दृग देखहु यह अशकुन जौन आय प्रगटान।
याते निश्चय मन आवत यह चाहत होन युद्ध सामान॥
हवा हहारा करि डोलत अरु बोलत काक भयंकर बानि।
बाज कुररत स्वर सेरत बहु टेरत शिवा गिद्ध मड़रानि॥
हालत पर्वत जनु चालत जग डोली धरा धराधरमाथ।
टूटत तरुबरतर फूटत थर छूटत रक्तबुंद जल साथ॥
नभ बिनबादर को गरजत अरु तर्जत देव नाथ हथियार।
लाली संध्या भइ चन्दन सम मानहुँ बन्दन केर पहार॥
प्रकट हुताशन रबिमण्डल सब बर्सत मनहुँ मणिन के जाल।
खग मृग सुर्थनतन करि करि मुख रोदन करत महाबिकराल॥
टूटत तारागण इत उत बहु ह्वै गो मन्द चन्द परकाश।
धूरि पूरिगै नभमण्डल महँ बौंड़र भूरि लाग आकाश॥
याते निश्चय मन आवत यह बीते दिवस अवशि दुइचारि।
प्रबल निशाचर अरु बनरनसों ह्वैहै महा भयानक रारि॥
शोणित आमिष के कीचड़सों जैहै पूरि लङ्क तट थानि।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तातें कर्तब अब कीजिय सोइ जाते होय बिघ्नकी हानि॥
कोट बनाइय सजि सैनाको चहुँदिशि राखि बीर रखवार।
भिन्न भिन्न दल थलन युक्त करि रचिये ब्यूह शास्त्र अनुसार॥
नीलसहित लै दल अङ्गद निज पूरुष ब्यूह मध्य टिकिजायँ।
तिनके दहिनीदिशि सैना सह निवसैं ऋषभ बीर बलसायँ॥
अति मदमत्ता बलवत्ता जो भाषत गन्धमादनी नाम।
सो निज सैना लै चैना सह निवसित होहिं जाय दिशिवाम॥
हम अरु लक्ष्मण धनु धारण करि रक्षैं सैन्य केर शिरभाग।
कुक्षिरखावैं जाम्बवान अरु बीर सुषेण सहित अनुराग॥
घनी अनीके जघनभाग के रक्षा करहिं हर्षि कपिनाथ।
जिमि सब लोकनके पीछे कहँ रक्षत अर्धभाग पति पाथ॥
इहि बिधि आयसु जगतारणको सुनि मुदसहित शीशपरधारि।
लैलै सैना सब रक्षक भे चहुँदिशि धीर बीर भट पारि॥
रघुकुलभूषण की दाया ते जे ह्वै रहे अमित बलधाम।
कालहु आवै चढ़ि सम्मुख जो तौ किलकारि करैं संग्राम॥
निर्भय रक्षक भे सैना के बली अपार भये रखवार।
गर्जैं तर्जैं निज पहरन पर करि किलकार देत ललकार॥
फिरत निशाचर लखि पावैं जो इतउत कटक निकट भटसांच।
आतुर धावैं गहिलावैं त्यहि सब मिलि घेरि नचावैं नाच॥
कसि भुज दण्डै दोउ हाथन सों लातन घातन करैं प्रहार।
मसी लगावैं गहि गातन महँ खर चढ़वाय लाय मुख क्षार॥
सैन प्रदक्षिण करवावैं पुनि दांतन काटि नासिका कान।
सुयश सुनावैं रघुनन्दन को यह रावण ते कियो बखान॥
महा दुर्दशा महँ ब्याकुल सो लेवै राम शरण अपनाय।
तब तेहि छाँड़ें दुख माड़ें बहु भागि सो त्वरित लङ्क पुर जाय॥
हाल बुझावैं सब रावण को कहि धृष्टता बानरन केरि।
दलबल संख्या बतलावैं पुनि रघुपति सुयश सुनावैं टेरि॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कौनौं निश्चर गहि तस्कर गति आवैं सिन्धु पास चुप चाप।
दल प्रबन्ध अरु जलधि बन्ध लखि सरहहिं रामचन्द्रपरताप॥
जाय सुनावैं सो रावण को जस कछु कर्म कीन रघुनाथ।
सुनि सो श्रवणनजरि तनमनते अतिशय कुपितभयो दशमाथ॥
निज मुख करणी कहि बरणी बहु सबहि सुनाय बीर रसछाय।
सेतु बँधाये इक बारिधि महँ का दुष्कर्म कीन रघुराय॥
चण्ड न जानत भुजदण्डन मम खण्डन खण्डन बिदित प्रताप।
बरबरबण्डन गहि जीत्यो मैं छापी दशौदिशा यश छाप॥
कितक नीरनिधि अरुजलनिधि मैं बाँध्यों उदधिसिन्धु नदिनाथ।
जलधि तोयनिधि अरु पयोधि पुनि बाँध्यों बारिईश इकसाथ॥
बिश्व करन के सुत बानर द्वै जिन कर बिदित नील नल नाम।
बिप्राशिष ते यह करणी तिन कीन्ह्यों कछु न राम को काम॥
काह बिचारे बयबारे वै धारे तपी बेश कृश गात।
धनु धरि लरिहैं मम सम्मुख महँ रन घनघोर देखि भय खात॥
यहि बिधि बातैं युक्ति उक्ति की भाषि सुनाय सबहिं समुझाय।
सभा बन्द करि आनन्दित सो मन्दिर चल्यो बिहँसि मुसक्याय॥
बृत्त मँदोदरि सुनि राख्यो यह प्रथमैं चतुरचार मुख बानि।
बाँधिकै सागर गुणनागर प्रभु आये उतरि लङ्क तट थानि॥
जायकै प्रापतभो अन्तःपुर जहँ मयसुता बाम को ठाम।
लख्यो मँदोदरि पति आवत तब चलिकै अग्रलीन अभिराम॥
करगहि तुरतहि लै आवति भै जहँपर बनो शयन आगार।
चन्दन पलिका बैठावति भै पुनि बर बचन कीन उच्चार॥
हे पिय हियते तजि दुस्सहरिस मम शिषकरहु कानिमन मानि।
अचलरहै ज्यहि अहिवातौ मम अरु निश्चर कुल होय न हानि॥
बुधजन भाषत शुभ सम्मत यह बेद पुराण देत परिमाण।
ब्याह बैर अरु हितनिज समसन करिबो उचितकरन कल्याण॥
भूल तुम्हारी पिय अतिशय यह जो मन मानुष मानत राम।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

खल दल घालक जनपालक वे हैं कालेश बेश बलधाम ॥
अलख अगोचर अबिकारी प्रभु अनत अनीश ईश जगक्यार ।
अगुण अलक्षण अन आतम जग पालत सृजत करत संहार ॥
भार उतारन हित बसुधाको टारन हेत भक्त उर ताप ।
दुष्ट सँहारन हित आवत इत धरि सोइ सगुणरूप प्रभु आप ॥
कहिकहि हारे गुण शारद श्रुति शेश महेश सृष्टि कर्तार ।
मर्म न पायो लेश मात्र ज्यहि सोइ भगधाम राम अवतार ॥
सतयुग धाखो जिन नरहरि तन माखो हिरणकशिपु बलवान ।
आरत टाखो कायाधव को सोइ सुखधाम राम भगवान ॥
धरा उबाखो धरि शूकर तन माखो हिरण्याक्ष अमरारि ।
शंख सँहाखो श्रुति राखनहित मत्स्यस्वरूप धारि भय हारि ॥
प्रतिबल बाँध्यो बलि बामनह्वै छलिकै कियो इन्द्र को काज ।
सोइ जगकर्ता भगधर्ता ये भर्ता गुनहु राम रघुराज ॥
बीर बिनाश्यो मधुकैटभ सो कीन्ह्यो सहसबाहु जिन नाश ।
दुष्ट निकन्दन रघुनन्दन सोइ हियपिय भजहु तजहु सब आश ॥
राम दिवाकर के सम्मुख महँ जुगनू सरिस तेज तुव नाथ ।
किये ते रिपुता बरिऐहौ ना है गुण काल कर्म जिन हाथ ॥
मुनिमखराख्योहतिनिश्चरगण कीरतिबिमल कीनि श्रुतिगान ।
खल सुकेतकी सुता ताड़ुका कीन्ह्यो एक बान बिन प्रान ॥
पदरज पावन तनपरशन करि क्षणमहँ तारिदीन मुनि बाम ।
जनक स्वयम्बर प्रण पूरण करि भञ्ज्यो शम्भु धनुष अभिराम ॥

स० । बीर बिराध अगाध बली खर दूषण से खल बृन्दनको ।
त्रयशीश कबन्ध सुबाहुहि लै जिननाशकियो दितिनन्दनको ॥
द्विजबन्दि सुकण्ठहि भूपकियो क्षण में हतिकै दुखद्वन्दनको ।
तिनदुष्ट निकन्दनको भजिये तजिये पिय ये भ्रमफन्दनको ॥

जाहु शरण तकि तिन चरणनकी हियते बैर भाव तजि नाथ ।
सौंपि जानकी क्षमामाँगि पुनि नायहु चरण कमलमहँ माथ ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तुम्हैं उचित है यह करिबो अब स्वामी करहु बचन परमान।
राज काजदै सुत अपने कहँ बन महँ जाइ भजहु भगवान॥
जीति सुरासुर निज भुज बल तुम बीरन मध्य बढ़ायो नाम।
सुयश तुम्हारो जग छायो पिय कीन्ह्यो करन योग्य जो काम॥
श्रुति अससम्मत कहि भाषत प्रभु चौथे पनहिं बनहिं नृपजाय।
भजि भगवानै मन आनै शुचि सुन्दर योग भोग बिसराय॥
बिधिशिवदेवतसहसेवतज्यहिनिशिदिन किये गुणन उरमाल।
नारद शारद सनकादिक पुनि ध्यावत रहत नाम त्रयकाल॥
ज्यहि लगिसाधत मुनिजपतपअरु बुधजनकरत पुराणनगान।
भूप बिरागी होत राज तजि बन बसि करत भजन पद ध्यान॥
सन्त सहायक रघुनायक सोइ तुम कहँ करन कृतारथ नाथ।
इत चलि आये लव लाये दृग देखहु जाय नाय पद माथ॥
मोर सिखावन पिय मानहुँ जो पावन सुयश होय जग माहिं।
विश्वकरण के चरण शरण समसुख है अन्य बस्तु महँ नाहिं॥
यहि बिधि भाषणकरि मयजा तब नव पाथोज दृगनभरिबारि।
झम्पित मोहहि तन कम्पितबच कहत बहोरि जोरि करतारि॥
अमला कमलाकर सेवित पग श्रेयद जगत सदृश जलजात।
सन्तन प्रिय हिय भजहु कन्त जो होय अनन्त मोर अहिवात॥
महिमा जिनकी प्रकट चहूँदिशि घटमहँ धरे रहत शशिभाल।
कटत फटत त्वर भवबाधा सब सुमिरण करत बन्दि तत्काल॥
जपत रहत अहनिशि नारद अरु शारद करत गुणन को गान।
अजरज जिनकी शिरलावतअरु त्यहिबल करत सृष्टि निर्मान॥

स०। गौतम नारि तरी जिनते दुख क्षार करी निसरी शुचि गङ्गा।
शीश फणीश के थापित जो नित सेवत इन्दिरा लीन्हें उछङ्गा॥
सन्तत सन्त जपैं जिनको भय अन्तक हन्तक दारिद दङ्गा।
कन्त भजौ सब तन्त बिसारि सो होहु न निश्चर बंश पतङ्गा॥

सुनि यह भाषण मन्दोदरि को रावण हृदय गई रिस छाय।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

नैन बङ्क करि निश्शङ्कित तब लाग्यो कहन आपु प्रभुताय ॥
बकत काह तैं प्रिय मिथ्या बच तकत न मम भुजान बलथाह।
सकत न योधा कोउ सम्मुख लरि नर सुर नाग लोकके माहँ ॥
कसकत छाती दिग्पालन की जिनते भिर्यो जाय बरिआय।
तबते खसकत म्वहिं आवतलखि भागि छिपात भवनमें जाय ॥
धसकत बसुधा पग धारत ज्यहि ससकत शेश सहत नहिंभार।
धनद पानिपति यम आदिक लै भुजबल जिते सृष्टिकर्तार ॥
देव दनुज नर बश राख्यों करि कोउ न करत समर समुहाय।
तव उर उपजा भयकारण क्यहि कहु सो प्रिया मोहिं समुझाय ॥
कुम्भकरण अस भट बन्धव ज्यहि बेटा मेघनाद बलवान।
ताकी नारी भयकारी इमि धिक मति पोच शोच अरु ज्ञान ॥
यहि बिधि शिषदै मन्दोदरि को पुनि उठि सभा गयो दशभाल।
स्वर्ण सिंहासन पर राजत भो जा महँ जटित रत्नमणि जाल ॥
हिय अस जान्यो मन्दोदरि तब रावण मीचु आय नगिचानि।
काल हवाले हालहि ह्वैहै मानत नहीं तासु हित बानि ॥
सभा जाय कै शुचि सचिवन सों बूझत भयो मन्त्र दशमाथ।
रिपुसन करिये रण कौनी बिधि आवै बिजय जासु हित हाथ ॥
सुनि अस बाणी दशआननकी बोले सचिव बचन मुसक्याय।
ऋक्ष बानरन रिपु मानत प्रभु डारत जिन्हैं निशाचर खाय ॥
राउर अज्ञा जो पावन हम यांहे क्षण धाइ सिन्धु तट जाय।
गहिगहिभक्षन कपिभालुन कहँ बिनरणकिहे सैन्यअधियाय ॥
यहिबिधि भाषत सुनि सचिवनको मन्त्रिप्रहस्त हस्तयुग जोरि।
निश्चरपति सों इमि बोलत भो सुनिये बिनयनाथ इकमोरि ॥
मति अति थोरी तुव मन्त्रिन महँ भाषत ठकुरस्वहाती बात।
तुम्हैं न चाहिय शिष मानब यह धीर गँभीर बीर बिख्यात ॥
मत सद्ग्रन्थनको याही प्रभु भूप न तजहि नीतिको पन्थ।
नीति रीति है नृप भूषन तन मानिय सत्य बचन महिकन्थ ॥
CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

षट्पद।

धर्म कर्म बिन बिप्र सुधिक क्षत्री रण चोरा।
धिक पातिब्रत बिना नारि धिक शूरभगोरा॥
राम भजन बिन भक्त सुधिक तड़ाग बिन नीरा।
धिक बिराग बिन ज्ञान ज्ञानधिक होय न धीरा॥
इन्द्रियजित बिनयोग धिकरोगग्रसिततनमानिये।
बिनानीतितिमि भूमिपति सत्यबचन प्रभुजानिये॥

भला न होइहै नय त्यागेते जोहै नृपन केर शृङ्गार।
केवल मन्त्रिन की सम्मति पर ना चित देहु लङ्कभर्तार॥
समुझि शोचिकै मन अपन्यो मा देखहु भलाबुरा परिणाम।
कारज करिबो आरम्भिय तब सहसा त्यागि देहु मतिधाम॥
समय समय पर सब नीको है सहसा धैर्य पराक्रम ज्ञान।
केवल एकै अनुमाने ते कहुँ कहुँ परत आपदा आन॥
मन्त्रिन जो मत कहि भाष्यो प्रभु सो यहि समय नीक बहु लाग।
पै दुख देहै सो पाछे कहँ अइसे मतै लगाइय आग॥
अबहीं थोरे दिन बीते प्रभु यहि पुर भयो रहै यक हाल।
ताहि भूलिगे तुव मन्त्री सब लागे फेरि बजावन गाल॥
सिन्धु नाँघिकै कपि आवो इक त्यहि यश करत अबै सब गान।
तुव अमराई सब नाशी ज्यहिं मारे अछै आदि बलवान॥
एक फलङ्का महँ शङ्का बिन लङ्का जारि कीन जैं क्षार।
करि अहतङ्का गो नीकी बिधि तुम सब लखत रह्यो दृगपार॥
काहुन कीन्ह्यो कछु ताको तब हाजिर रहे सकल बलवान।
चल्यो न बल कछु इन योधनको जे अब कहत बानरन खान॥
सोई बानर हैं सेना महँ जिनते करन कहत संग्राम।
गयो न जीत्यो इक अकिलो कपि सहसन कौन जीति है स्वामि॥
सहजै बाँध्यो जिन बारिधि को योजन सवक जासु बिस्तार।
लै दल उतरे कपि भालुन को करिकै घोर शोर ललकार॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अति बल मार्‌यो मधुकैटभ जिन कीन्ह्यो भट बिराध संहार ।
मनुज बतावत हैं मन्त्री तुव तिन्हकहँ करन कहत आहार ॥
बानरदल लै दोउ बन्धव जब धनु धरि समर करहिंगे आय ।
काम न अइहैं वहि समया पर यहि बिधि गाल फुलाउब भाय ॥
ताते तुमकहँ समुझावत प्रभु सुनि मम बचन करहु बिश्वास ।
ना· तरु बहुमति यह मानेते होइहै बेगि बिभवको नाश ॥
कादर भाषौ कहि चाहै म्वहिं कहिहौं बात वाजिबिहि तात ।
जीति न पइहैं कपि भालुनकहँ निशिचर धरहिं जन्म जो सात ॥
हैं कहवैया सुनवैया बहु मीठी बात केर महराज ।
पै वह कहबे अरु सुनबे को है ना होत ताहि सों काज ॥
सुनतक लागत जे कठिने अति आखिर करत महा कल्यान ।
ऐसे बचनन के भाषी जग थोरेइ पुरुष जानु बलवान ॥
नीति तुम्हारी है स्वामी यह सो भाषत मैं सबहि सुनाय ।
जामें स्वारथ परमारथ दोउ औ तुव बिभव बादि नहिं जाय ॥
प्रथम पठाइय रामचन्द्र ढिग आपु बसीठ शोचि समुझाय ।
प्रीति कीजिये पुनि सीता दै जामहँ राजनीति दरशाय ॥
लौटि जाहिं जो सिय पायेते नाहक तौ न बढ़ाइय रारि ।
जोना लौटैं सिय पायेते तौ रण करहु अवशि अमरारि ॥
कहो हमारो प्रभु मानहुँ यह तौ सब भांति सुयश तुव हाथ ।
नतरु कुशलता नहिं कउनिउँबिधि निशिचरनाश जानिये नाथ ॥
यहि बिधि बातैं सुनि प्रहस्त की ग्रस्त गरूर शूर दशभाल ।
दांत पीसिकै तब बोलत भो शठ कह जानु भटन को हाल ॥
तुव उर संशय भा अबहीं ते भाषत मूढ़ निशाचर नाश ।
बिदित बीरतामहँ मेरो कुल तामहँ भये घमौना बाँस ॥
गर्भ न गिरिगा मन्दोदरि का अस सुत प्रसव भये धिक्कार ।
छाँड़ि बीरता डर तपसिन के डारत मम भुजान पर छार ॥
निन्दित बाणी सुनि पितुकी इमि उठ्यो प्रहस्त त्यागि दरबार ।
CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

रिसबश नैना अरुणारे करि बोला कठिन बचन ललकार ॥
हितकी बातैं तुम्हैं न भइहैं औरै होनहार हैं हाल।
जैसे औषध नहिं भावत मन आतुर ग्रसन चहत ज्यहि काल ॥
यह कहि चलिभो निजमन्दिर को सुनिये अग्र चरित खगराज।
जो कहि भाष्यो शिव गिरिजासन सोई तुम्हैं सुनावत आज ॥
गये दिवाकर जब अस्ताचल संध्याभई जानि दशमाथ।
सभा बन्दकरि लहि मन्दिर मग चलिभो धीर बीर लै साथ ॥
ऊंच कँगूरा इक लङ्का को तापर बनो मनोहर धाम।
त्यहि छबिभाषैकहिअसकबिको निरखतज्यहिलजातमनकाम ॥
बनी देवालैं शुभ सोनेकी चम चम चमकि२ रहि जायँ।
मनहुँ चन्द्रिका शशिपूनोकी चहुँदिशि बिकसि रही छहराय ॥
सहसन द्वारे चौगिर्दा महँ जिनमा स्वर्णकेर दरवाज।
बिच २ नोखा कटे झरोखा झँझरिन रहीं किंकिणी भ्राज ॥
लगे केवाँरा अष्टधातके उत्तम चित्र कीन निर्मान।
फूल उरेहे तिनबीचन महँ खासी करी नक्कासी ठान ॥
मणि बैदुर्य कि बनी चौकठैं तिन महँ जड़ी रतन की पाँति।
लटकैं तोरण मणि मुक्तन के लाल प्रबाल जाल बहुभाँति ॥
बर दरवज्जन के छज्जन पर मूँगा मोतिन केर चुनाव।
तिनपर कलशी शुभ कञ्चनकी जामें दियो अग्नि को ताव ॥
पवि बिल्लौरी की फर्शैं शुभ मानहुँ धवल फेन के ताल।
मणि अस्फटिकनके खंभाबर जगमग होत दिब्य द्युतिजाल ॥
लाले पत्थर की सिढ़ियनपर हीरा लाल जवाहिर लाग।
कहुँ२ पांती पुखराजनकी बिरची बेलि सहित अनुराग ॥
कहुँ२ गोली कटीं खिरकियां कहुँ चौकोण कीन निर्मान।
तिनमहँ सुन्दर लगीं झिलमिली मानहुँ बिज्जु बृन्द लपटान ॥
शीत समीरन के झोंका शुभ झुकवन रहे भवन मधिआय।
एला बेलाके इतरनकी भीतर दिब्य गन्ध रहि छाय ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अटाके ऊपर अटा बिराजै तिनकी छटा कहै को गाय।
मेघ घटा सम धवरहरा शुभ मानहुँ छुवत गगन कहँ धाय॥
तिनके ऊपर गुम्मज सोहैं मोहैं देखि सुरन के धाम।
जनु कारीगर कामदेव के हैं निर्मान कीन अभिराम॥
बँधे पताका छबि शाका सम ऊपर फहर फहर फहरात।
तिनमा झालरि मणि मुक्तनकी मानहुँ नखत पांति अधिकात॥
लागे फाटक दिशि चारिउमा हाटक जटित रहे छबि छाय।
नौबतखाना तिन ऊपर बर बाजत मधुर मधुर सहनाय॥
हंस कलोलैं जहँ छज्जन पर बोलैं मोर माधुरी बानि।
कोयल कूकैं सतखण्डन पर शुक सारिका बृन्द मड़रानि॥
निर्मल जलसों परिपूरित सर चारिउ ओर रहे उमड़ाय।
कमल बिकासे दल खासे जहँ पुरयनि सघन पांति रहिछाय॥
लता बितानन सों तानी तट छायो दशौ दिशा ऋतुराज।
सारस कूजैं मधु गूजैं बर मुनियाँ करैं मधुर आवाज॥
बिचरैं हरणा गण चरि २ तृण कीर कपोत गोत दरशात।
सहित लवाइन सुर गाइन के झुम्मट चरत जात हरषात॥
अमले गमले गृह द्वारेपर बेला बिमल चमेला लाग।
घनी चाँदनी अरु चम्पा द्रुम मालिन रचे मनोहर बाग॥
लगीं कियारी गुलदावदि की छाई मधुर केतकी पांति।
झुकी निवारी बर डारिन सों है केतकी जकी बहु भांति॥
इक दिशि फूली गुलमेहँदी शुभ झूली पांति गुलाबन केरि।
हुलसी तुलसी इक क्यारी महँ रहे मुचकुन्द कुन्द द्रुम घेरि॥
गड़ा केवड़ा इक क्यारी महँ उलही जुही मालती जाति।
कहँ लग बरणौं अमराइन कहँ शोभा देखि बुद्धि थकि जाति॥
इक दिशि रानिन को मन्दिर बर मानहुँ शची केर आगार।
भवन रसोयां को इकदिशि शुभ जामहँ खान पान अधिकार॥
हयगय शाला दिशि राजत इक सुन्दर श्यामकर्ण हेहनात।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मत्त गयन्दा दिशि झूमत इक करैं जे इन्द्रहस्ति छवि मात॥
इक दिशि मन्त्रिन के कमरा बर साजे सकल साजके साथ।
मध्य बैठका दशआनन को मानहुँ रच्यो काम निज हाथ॥
है गच रचनाकी चांदीकी तापर बिछे गलीचा चारु।
धवल चद्दरैं तिन ऊपर बर मानहुँ शशी प्रभा बिस्तारु॥
लागे गिर्दा चौगिर्दा ते तकिया धरी मखमली झारि।
मध्य कटेहरा मलयागिर को मचवन रतन पांति अधिकारि॥
पूरब दिशिमहँ सिंहासन शुभ राजत स्वर्णमयी छबिरासि।
कञ्चनकलँगी झलझलझलकैं झालरिलगी मणिनकी खासि॥
ऊपर चँदवा स्वर्णपत्र को गङ्गा यमुनी करी नखासि।
चन्द्र सूर्यके मण्डल सोहैं मोहत चन्द्र सूर्य प्रतिभासि॥
लगे फिरोजा अरु नीलम गण जगमग जगमग होत प्रकास।
अतन चितेरे चित्र उरेहे शोभा केर करत जे हास॥
तापर बैठो दशआनन भट रह्यो बिराजि मनहुँ सुरराज।
छत्र सूबरण को माथे पर दशहू माथ मुकुट रहे भ्राज॥
झीलम बख्तर तन राजत शुभ कण्ठा कण्ठरहे छबिछाय।
बँधे बजुल्ला भुजदण्डन महँ कुण्डल श्रवण हलत सुखदाय॥
लसी लपेटी कटि पेटीबर तामहँ परी तीव्र तरवारि।
भुजा बीसहू महँ आयुध बर राजत धीर बीर मद हारि॥
ढाल बिराजै इक[1] हाथे महँ इक[2] महँ धनुष हाथ इक[3] बान।
तबल बिराजै इक[4] हाथेमहँ इक[5] संगीन बीन ज्यहि सान॥
राजत छूरी इक[6] हाथेमहँ इक कँर नागफाँस दरशाय।
इककँर[7] तोमर इककँर[8] पट्टिश इककँर[9] रही कटारी छाय॥
मुद्गँर[11] राजै इक हाथेमा रिपु उन्मूल शूलँ[12] इक हाथ।
तिरछी बरछी इक हाथेमा इककर गदा फँरी[14] के साथ॥
इककर भाला नागदौनि को इककर ब्रह्मशक्ति[16] बिरराज।
परिघँ बिराजै इक हाथेमा इककर कड़ाँबीन[18] शुभ भ्राज॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

इककर राजत बर चक्कर अरु इककर नाँगि साँगि दरशाय ।
सिंहकि बैठक सों बैठो भट नैना अरुण रहे छबि छाय ॥
बैठे झुम्मट बर मन्त्रिन के हैं भटबृन्द उठे दिशिचार ।
एँड़ी बैंड़ी शिरपागैं शुभ सोहत करन तीव्र हथियार ॥
ओर दाहिनी दशआनन के बैठो मालवन्त मतिधाम ।
रावण पितुकर जो मन्त्रीवर ज्यहि बिश्रवा बखानत नाम ॥
इक दिशि बैठे सुत रावणके कीन्हे धीर बीर शृङ्गार ।
अजित अकम्पन अरिमर्दन अरु घनरव आदि शूरबरियार ॥
औरौ योधा बहु बैठे तहँ इकते एक दई के लाल ।
धूम्रनैन अरु बिकटानन अति तन बिकराल धरे जनु काल ॥
बीर महोदर ताम्रनैन अरु द्रोहीदेव रहे तहँ राजि ।
बज्रदन्त घटमुख रक्तप्रिय बैठे शूर साजको साजि ॥
मकरअक्ष अरु मदमादक प्रिय तरुणीसेन बिभीषणबाल ।
करीकर्ण अरु योधा त्रयमुख त्रयचख महाकाय बल शाल ॥
महापार्श्व अरु देवान्तक भट कम्पन शोणिताक्ष बलवान ।
इक दिशि राजे कुम्भकर्ण सुत कुम्भनिकुम्भ प्रजङ्घा ज्वान ॥
इन्हैं आदिलै अरु राक्षस बहु बैठे महाबली बरियार ।
रगरत कल्ला महँ कल्ला शिर कलँगी लगी एक समतार ॥
सबके हाथन महँ आयुध बर सोहत धरे जौन बर धार ।
बनी बराबरिकै बैठक शुभ मानहुँ इन्द्र केर दरबार ॥
स्वर्ण छरी सी परी किन्नरी नाचैं महा उमँग के साथ ।
भाव बतावैं सब अङ्गन सों लाजत जिनहिं देखि रतिनाथ ॥
राग अलापैं प्रिय बाणी सों करि बर स्वरन केर उच्चार ।
पायँन खांसी चौरासी की झनकत मन्द मन्द झनकार ॥
छइउ राग अरु छत्तिस रागिनि किन्नर रहे ताल सों गाय ।
तकधिन २ बजै पखावज आवझ झांझ शब्द रहे छाय ॥
बजै सरंगी स्वर रङ्गी अरु रहे सितार तार झहनाय ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

उड़ैं मँजीरा अर्धताल सों बर मुरचंग रही मननाय ॥
जो ज्यहि समया पर चाहिय सो गावत राग सहित अनुराग ।
ज्यहि सुनि मोहत मन मुनियनके योगी परत योगते जागि ॥
प्रथम सुभैरवँ श्रीबसन्त अरु चौथो मेघ राग करनाट ।
राग हिंडोला सह छह ये सब गावत बाँधि ताल स्वर ठाट ॥
छह छह रागिनि सब रागनकी इक रागिनी केर इक बाल ।
इक २ तिरिया तिन बालन की इक २ सखा सखी प्रतिपाल ॥
ते सब गावत मन भावत अति बर गन्धर्ब बीच दरबार ।
नाम गनावत तिन सबके कहि सुनिये सकल बुद्धि आगार ॥
राग सुभैरवँ की रागिनि षट आसांवरी भैरवीं जानि ।
है मालश्रीरामकरी अरु सिन्धुर धनासिरी को मानि ॥
धौले श्यामे शुध मालकोस अरु कन्हर अजैपाल षटबाल ।
रेवा सूहीं अष्टीवहु अरु सुंहो रँभेलि और भटियाल ॥
ये हैं तिरिया उन बालन की अरु सोहिनी सखी को नाम ।
सखा ऋषम को कहि गावत यह भैरवँ राग बंश इतमाम ॥
नाम दूसरो मेघराग ज्यहि ताको कहत सकल परिवार ।
गावत सर्बा गन्धर्बासो मोहत देखि देव दरबार ॥
कोड़ा कान्हरा केदारा अरु पुरबी बिलावली सह पांच ।
छठीं रागिनी मधुमालवि है ये जानिये मेघ की सांच ॥
सांवत छायानट सुधनट अरु गौड़ हमीर अड़ाना नाम ।
ये छः बालक मेघराग के गावत सुनत लगत अभिराम ॥
पुरियां ईमने अरु जैतश्री जोगियाँ बिजैराज महराज ।
छठीं देशिया सुत तिरिया ये गावत स्वरन केर सजि साज ॥
नट मल्लारी अरु गोरा ये भाषत सखा सखी के नाम ।
उड़ि रहिं तालैं इन रागन की सुनि सब भूलिजात इतमाम ॥
रागतीसरो श्रीभाषत ज्यहि ताको कहत सकल परिवार ।
गौरी शुभगा गन्धारी अरु चौथी विलावली बर नारि ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कहत कुमाँरी पुनि पँचईं अरु षष्ठम अहै बिरांगी बाम ।
इक २ लरिका इन षटहुन के सुनिये तिनहुँ केर बरनाम ॥
श्यामराम अरु बागेश्वर पुनि तीसर कह्यो जयत कल्याँन ।
सुषट कल्यानी हेमं खेमं ये छः सुत सिरीराग के जान ॥
इक २ तिरिया इन षटहुन के जे रागिनिन मध्य सरनाम ।
पंजे जजंती अरु सरसति सह सारँग देवकली अभिराम ॥
मांझ कहावत है छठईं तिय पञ्चम सखा कीन निर्धार ।
सखी सँकोची को भाषत कहि गावत इनहिं बिबिध परकार ॥
राग चतुर्थम है बसन्त पुनि गावत त्यहि कुटुम्ब के साथ ।
रहे झमाका परि तालन के सुनि मुद लहत निशाचर नाथ ॥
यहू राग की छः रागिनि हैं ललित बिभासे गूजरी नाम ।
पट्टमञ्जरी अरु टोड़ी पुनि पञ्चमि आदि भईं षट्बाम ॥
इनके लरिका षट् बरणत कहि दीपक देशे सहाना राग ।
नट अहीर अरु सारंगहि कहि छठवों बर बिहाग शुभभाग ॥
सुघर गुनंकरी बंगाली अरु सोरठ देवकली ये चारि ।
हैं तिरबेनी खंभावति सह षटहू सुतन केरि षट नारि ॥
सखा मनोहर कल्यानी नट सारँग सखी कीन उदघाट ।
दशमुख भावत ये गावत सब शुभ्र बसन्त राग के ठाट ॥
राग पांचवों करनाटक जो फाटक राग रागिनिन क्यार ।
सहित रागिनिन ठाटबाट सों ताहूकेर कहत परिवार ॥
नटी कमोदा रामकेलि अरु हैं रागिनी चौथि कल्याँन ।
पञ्चम गारा भूपाली ये षट् करनाट रागिनी जान ॥
गौरा मालव बहुनागर अरु मारू टङ्क लङ्कदह नाम ।
राग सागरोद्भव सह ये षट् हैं करनाट पुत्र अभिराम ॥
श्याम पूरिया समर्फली अरु बृन्दाबनी अलहियाँ चारि ।
ककुभ अहेरी सह षटहू ये हैं करनाट सुतन की नारि ॥
ललित पञ्चिमी है सुन्दर सखि अरु भाषत शुभ सखा पखार ।
CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ये आलापत गन्धर्बा सब है करनाट राग परिवार॥
राग हिंडोला पुनि षष्ठम अब ताको करत भेद निर्धार।
इन छः रागन को गाना शुभ ह्वै रह्यो लङ्कनाथ दरबार॥
मालबि पहिड़ो तीय मरहटी दिपिका और जान सुबरारि।
देशकारि सह ये षटहू हैं शुभ हिंडोल रागकी नारि॥
तिलक मोद अरु नटकेदार पुनिहै संकराभरन अभिराम।
सुमति बिलासक अरु कमोद सह संक्रमनादि बालषट् नाम॥
नायकि कोफी हरशिंगार अरु लीलावती चैति सुघराय।
ये षट् तिरिया षट् बालन की गायन रहे गाय मन लाय॥
भीम पलासी शुभ सहचरि अरु है बड़ हंस सखा को नाम।
समय २ पर ये गावत सब गहि गहि राग भेद इतमाम॥
सो स्वर भाषत कहि आगे अब मध्यम खर्ज और गन्धार।
ऋषभ सुधैवत अरु निषाद् लै पञ्चम सात कीन निर्धार॥
परे सनाका चहुँ ओरन ते रहिगे दशौंदिशा स्वर छाय।
उठे झमाका दश तालन के भाषत जौन अगारी गाय॥
ताल तिताला चौताला अरु है इकताल हाल विख्यात।
शूल फाकता झप रूपक अरु आड़ा आदि जानिये तात॥
कुरडनाच अरु ईसंवारि सह ये दश कहत ताल के नाम।
सो दरशावत मिरदङ्गन पर करि करि उपज आदि के काम॥
कहँ लग गावै छबि कहिकै कबि चित्र बिचित्र होत उत्साह।
सह मन्दोदरि अवलोकत तहँ बैठे बीर निशाचर नाह॥
सुनासीर शत सम बैभव ज्यहि करत उमंग संग सुबिलास।
अति बल बैरी शिर ऊपर थित तदपि न कछु होत मन त्रास॥
यहि बिधि गाथा सुनि दशमुख की सुखसह गौरि शम्भु रुखपाय।
उत्सुक बोलीं पुनि शंकर सों हे प्रभु कहहु और कछु गाय॥
प्रश्न सुहाता गुहमाता को सुनि गुनि चन्द्रभाल खलकाल।
अवधपाल सुतपद सुमिरण कर भाषण लगे अग्र को हाल॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

हिय हरषाता गिरिजाता तुव सुन्दर प्रश्न मोहिं प्रिय लाग।
सुनहुँ मनोहर बर रघुबर यश भाषत देखि तोर अनुराग॥
सिन्धु नांघिकै इत सैनासह लै सब भीर भार रघुनाथ।
शैल सुबेलापर निबसे जब तबकी सुनौ मनोहर गाथ॥
उच्च कँगूरा लखि ताको इक जहँ रहिं लता बितानन तानि।
खिले मल्लिका अरु मालति तरु बहत समीर धीर सुखदानि॥
बोलत मधुरध्वनि चातक पिक मोर चकोर कहत मृदु बानि।
सर्बदिन राजत ऋतुनायक जहँ भाजत देखि दोष दुखग्लानि॥
चम्प चमेलिन की कलियां मृदु लक्ष्मण तोरि तोरि निजहाथ।
बिमल बनायो मनभायो तहँ आसन महाशोभ के साथ॥
रुचिसह तापर मृगछाला शुचि दियो बिछाय प्रेम लवलाय।
मुदयुत तापर भे निबसित प्रभु शोभा अकह कही ना जाय॥
कपिपति गोदी महँ राजत शिर दहिने धरो धनुष अभिराम।
सरकस तरकस बामओरशुभ ज्यहि लखि डरत काल बलधाम॥
बान सुधारत दोउ हाथन सों डारत जौन खलदलन मारि।
आरत टारत प्रभु भक्तनको फारत बिषै फांस दुखकारि॥
अञ्जनि नन्दन अरु अङ्गद दोउ चापत चरण कमल लवलाय।
सचिव बिभीषण ऋक्षादिक तेउ निकटै रहे राजि सुखपाय॥
कथैं निरन्तर गुण जाके श्रुति शेश महेश जक्त कर्तार।
नारद शारद सनकादिक अरु योगी यती ज्ञान आगार॥
पार न पावत इक रञ्चक ज्यहि धारे रहत सर्वदा ध्यान।
धनि त्यहिपङ्कजपद चापत जे तिनसम पुण्यपुञ्ज नहिं आन॥
प्रभुके पाछे बीरासन सों बैठे सुभग सुमित्रा तात।
शरधर सोहत कटि मुनिपटसह लीन्हे धनुष बाण दोउ हाथ॥
इहि बिधि राजत रघुनन्दन तहँ आसन शुभ समाजके साथ।
धन्य सो मानुष धरत ध्यान यह हियते त्यागि जक्तकी गाथ॥
सभा प्रभाकी बर पूरुबदिशि लख्यो सो प्रभाकरन दृगलाय।
CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

शशी प्रकाश्यो तम नाश्यो अरु सबदिशि गई चांदनीछाय ॥
कहि सब बीरनते भाष्यो तब अतिशय मधुर बचन घनश्याम।
बीर अशेषहु दृग देखहु यह पूरुब दिशा चन्द्र द्युतिधाम ॥
उयो अशङ्कित बर किरणनसों महि अरु गगन कीन उजियार।
बिपति बियोगिन को दायक अरु है संयोगि जनन सुखकार ॥
यहि क्षण आवत कहि उपमा मोहिं होय न यह मयङ्क जनुभाय।
पूरुबदिशि के गिरि कन्दर को बासी प्रबल केहरी आय ॥
मत्तनाग सम तम नाशक यह बिचरत सघन गगन बनमाहिं।
बिकसे तारागण मानहुँ ये तन शृङ्गार निशाके आहिं ॥
देखि मयङ्का कहँ अवसर यहि मम हिय शङ्का भई अपार।
सो सब बीरन ते भाषत कहि करिये सकल तासु निर्धार ॥
यहि शशिमण्डल के अन्तर्गत जो यह परत श्यामता जानि।
कौन पदारथ है भाषहु कहि निजमति सरिस सकल अनुमानि ॥
सुनि यह बाणी धनुपाणी की देखि मयङ्क ओर सब ज्वान।
शोचन लागे बर बुद्धिन सों यावत हते तहां बलवान ॥
भाष्यो शुभगर तब रघुबर ते सुनिये बचन मोर नरनाह।
चित्त हमारे महँ आवत यह शशि महँ लसत भूमिकी छाहँ ॥
और न कारण है यामहँ कछु निश्चय यही बात महराज।
निज मति तोलत तब बोलतभे तारातनय बीर युवराज ॥
आय न छाया यह बसुधा की मो मन परत शोचि यह बात।
चोट चन्द्रमा उर लागी यह कीन्ह्यो जबै राहुने घात ॥
कह्यो अङ्गदो जब याबिधि बच औ सब सुनत भये मतिमान।
त्यहि के पाछे नल बोलत भे सुनिये दीनबन्धु भगवान ॥
ना यह छाया है बसुधाकी औ ना चोट ओट कछु लागि।
शाप बियोगिन को लाग्यो यह सोई रह्यो हृदय महँ जागि ॥
नल मति कल्पित सुनि बानी यह बोले जामवन्त शिरनाय।
हमरे मनमा तौ आवत अस शशि उर सुधाकुण्ड यह आय ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तब लग शोचे उर नीलौ कछु तेऊ कहन लाग मुसक्याय ।
हमरे मनमा तौ औरै कछु आयो शोचि सन्त सुखदाय ॥
लगे बनावन चतुरानन जब आनन कामनारि को नाथ ।
काढ़ि धवलता उन लीन्ह्योसब शशिउर छेदि भेदि निजहाथ ॥
छिद्र सो जाहिर यह चन्दा उर तेहि मग परत देखि नभ छाँह ।
सोई श्यामता यह दर्शत प्रभु और न कछू बात नरनाह ॥
पुनि तब लङ्कापति भाषतभे ऐसि न बात आय यह भ्रात ।
सुनहुँ बतावत हम याकी बिधि सोई सत्य सत्य घटि जात ॥
बन्धु हलाहल यहि चन्दा को जानत सकल बुद्धि के रास ।
परमप्रीति बश निशिनायक निज दीन्ह्यो हृदयमध्य तेहि बास ॥
यहि बिधि सबकी बच रचना सुनि गुनिमन महा ज्ञानके खान ।
ध्यान धारिकै हरि चरणन महँ बोले धीर बीर हनुमान ॥

स० । है न सही यह छाहँ मही कि न राहु ग्रसे कर चोट चपेरो ।
कुण्ड सुधा को न छिद्र लसै यहहै न हलाहलहू को बसेरो ॥
बन्दि बखानत बेद सबै बसि मो मन सो शशि राउर चेरो ।
ताही सनेहके दाम फँस्यो उर श्यामस्वरूप बस्यो प्रभुकेरो ॥

सुनि चातुरता यह हनुमत की रघुकुलभान मन्द मुसक्यान ।
कियो प्रशंसा कपि भालुन सब हे हनुमान धन्य तुव ज्ञान ॥
पुनि प्रभु निरख्यो दिशि दक्षिणतन भाष्यो बिभीषणै समुझाय ।
देखहु लङ्कापति दक्षिण दिशि अति घन गगन घटा रहिछाय ॥
मधुरे २ स्वर गरजत घन प्रकटत दुरत दामिनी भास ।
मनहुँ बियोगिनको लखि २ यह बिहँसत करत हृदय उपहास ॥
होत सुबरषा जल बुन्दनकी मानहुँ धरा परत पविजाल ।
तब यह भाषत भे लङ्कापति सुनि राघवमुख बचन विशाल ॥
हे प्रभु ना ये जल बाहन दल औ ना तड़ित केर परकाश ।
बारि न बरसत यहि अवसर कछु गरजत नहीं मेघ मतिराश ॥
उच्च कँगूरा यह लङ्का को तापर बनो रुचिर आगार ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

होत अखारा तहँ रावण को जमक्यो महा सघन दरबार ॥
यह जो दरसत नभ परसत जनु अति उत्तङ्ग रङ्ग घन श्याम।
छत्र बिराजत सो रावण शिर सुन्दर मेघडम्बरी नाम ॥
दमक दामिनी सम दीसत ये मयजा श्रवणफूल हे राम।
मेघ गर्जना सम लागत जो सो मिरदङ्ग शब्द अभिराम ॥
सुनत बिभीषणकी बाणीइमि लखि दशमाथ केर अभिमान।
बिहँसि कृपानिधि बिधि बिधानसों कीन्ह्यो धनुषबाण संधान ॥
तकि सो मार्‍यो शर दक्षिण तन फरफर चल्यो पवन की चाल।
राजत रावण मन्दोदरि जहँ पहुँच्यो ब्याल सरिस उत्ताल ॥
छत्र मुकुट दोउ दशआनन के मन्दोदरी केर श्रुतिफूल।
भूमि गिरायो अति लघुतासों पुनि उड़ि चल्यो राम के कूल ॥
आयकै प्रविश्यो प्रभु तरकसमहँ उत लखि मुकुट छत्रको पात।
भये अचम्भित सब योधागण यह का भई अजूबा बात ॥
मर्म न पायो कछु काहू ने भर्म भुलान सर्व बलवान।
काह कर्म भा यहि अवसर यह जो महि छत्र मुकुट भहरान ॥
हवा न डोली कछु चञ्चल गति औ ना बसुन्धरा थहरानि।
अस्त्र शस्त्र कोउ इत आयो ना कारण कछू परत ना जानि ॥
भयो भयंकर अति अशकुन यह शोचैं बिकल सकल बलवान।
लखि जन बिस्मय बश हँसिकै तब रावण युक्ति शोचि बतलान ॥
का जिय शोचौ मति पोचौ तुम लखौ न लङ्कनाह उत्साह।
शिरौ गिरेते शुभ संतत ज्यहि अशकुन मुकुट गिरे त्यहि काह ॥
करौ अकारण की शङ्का कह निज २ भवन जाहु हर्षाय।
पाय सुआयसु इमि रावण को चलिभे सकल सुभट शिरनाय ॥
कथा मनोहर सुनि गिरिजा यह अतिशय हृदय मध्य हरषाय।
हियअभिलाषतपुनिभाषतभईं शशिशिरधरनचरनशिरनाय ॥
भयो बिघातित प्रभु शर से जब रावण मुकुट छत्र महिपात।
फिरिका कौतुक तेहि आगे भा कहहु सो राम भक्ति सरसात ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बोले गङ्गाधर अवसर त्यहि सुनु प्रिय कहत अथ इतिहास।
ज्यहि सुनि बिनशत भवबाधा सब आखिर मिलत रामपुर बास॥
बसे मँदोदरि उर बिस्मय बहु जबते खसे भूमि श्रुतिफूल।
सब सुख भूले त्यहि अवसर त्यहि हूले मनहु हृदय दुखशूल॥
पकरिकै बहियाँ सो रावणकै लागी रोय रोय शिष दैन।
बरसत आंसू दोउ नैनन सों कढ़त न कछु मयङ्क मुख बैन॥
धरि उर धीरज छबिपुतरी सी उतरी प्रभा ग्लानि बश म्लान।
सबिधि निहोरत कर जोरत दोउ बोली महा दुखारत बानि॥
सुनहुँ सिखावन मनभावन मम जामहँ सब प्रकार कल्यान।
त्यागहु रिपुता पति रघुपति ते हठ परिहरहु धरहु उर ज्ञान॥
मनुज न मानहुँ रघुनन्दन कहँ यह मम बचन करहु परमान।
लोक कल्पना अँग अङ्गन महँ जाके करत बेद निर्मान॥
नागलोक है जेहि प्रभुको पद औ शुभ शीश ब्रह्म को धाम।
लोक कहावत अरु जेते सब इक २ अङ्ग मध्य बिश्राम॥
भौंह तरेरब नारायण को भाषत महा भयंकर काल।
सूर्य बतावत दोउ आँखिन को बाल बिशाल बद्दलन जाल॥
पलक चलाउब निशा दिवस अरु नासा शुभ अश्विनीकुमार।
श्रवण कहावत हैं दशहू दिशि मारुत श्वास कीनि निर्धार॥
हैं श्रुति बानी सुख खानी की लालच अधर नरकपति दांत।
दिक्पति भाषत कहि बाहू बर माया जासु हास बिख्यात॥
है मुख आगी जन रागी को जिह्वा बरुण अरुण द्युति केरि।
दीप अठारह तन रोवाँ गण लक्ष्मी जासु चरण की चेरि॥
हाड़ पहाड़न को भाषत कहि सरिता सकल देह नस जान।
गुदा यमपुरी धर्मधुरी की पेट समुद्र रुद्र अभिमान॥
बुद्धि बिधाता जनत्राता की निर्मल मन मयङ्क को मान।
सकल चराचर उर व्यापक सो सुन्दररूप राशि भगवान॥
अस बिचारि कै मन अपने महँ सुखसह मानि नारिकै बात।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बारिजात पद भव पारद के सुमिरहु राखि मोर अहिवात ॥
स०। मोह न सोहत है तुम को पिय सोहत सो ज्यहिते यश पैहौ।
सो करिये धरिये प्रभु के पद ध्यान सयान सो जाते कहैहौ ॥
राम गुलाम समान न आन सुबन्दि अनन्दित या जग रैहौ।
अन्त समै तजि तन्त सबै प्रभु देवन धाम अराम सों जैहौ ॥
यहि बिधि बातें मन्दोदरिकी सुनि दशकन्ध अन्ध निज कान।
मुख पसारिकै अति बिहँसत भा महिमा मोह महाबलवान ॥
कबि जन भाषत हैं सांची यह अवगुण बसत नारि उर आठ।
मोह चपलता डर साहस अरु करिबो सदा झूठ को पाठ ॥
अशुचि मूर्खता निर्दयता ये आठौ सदा रहत तिय पास।
कहो न मानत कछु तिरियन को जे जन महाज्ञान के रास ॥
निशि दिन गावब यश बैरी को औ त्यहि भुजबल करब बखान।
भय उपजाउब मम हिरदय महँ आयो यही सूझि त्वहिंज्ञान ॥
रूप बखानत सब जाको तैं औ अति कहत पराक्रम खानि।
सहज सो मोरे बश जानैं प्रिय मानैं सत्य बचन परमानि ॥
तोरि चतुरई मैं जान्यों यह रिपु कर पक्ष स्वच्छ उर आनि।
करत अलापन मम प्रभुता को है मृगनयनि गूढ़ तुव बानि ॥
यहि बिधि जल्पत अभिमानी को मन्दोदरी लीन उर जानि।
भयउकालवशयहिमतिभ्रमअब समुझतनहींहिताहितबानि ॥
बकेसि राति भरि यहि भांतिन बहु गो दरबार होत भिनसार।
सहज अशङ्का मद बङ्का शठ हठ बश लगत नहीं शिषप्यार ॥
स०। चाहै जितो करखा कहैं शूर पै कूर कबौं कटि अस्त्र कसैना।
वृष्टि अपार करैं घन अमृत बेत अरण्य तऊ बिकसैना ॥
नारि शिंगार रचै कितनौ पै नपुंसक के मन नेक बसैना।
होहि बिरञ्चि समान गुरू पै तऊ शठ की शठता बिनसैना ॥
इति श्रीविजयराघवखण्डेलङ्काकाण्डेरावणदरबारवपरस्पर
वार्तालापवर्णनोनामद्वितीयोल्लासः ॥ २ ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बिघन बिदारण पद धारण करि उरपुर मदन कदन को ध्याय ।
श्रीरघुनायकयश घायकअघ भाषत बिजयखरड पुनिगाय ॥
जन मन रञ्जनि अघ गञ्जनि इमि सुनि रघुनाथ कथा हर्षाय ।
शिव प्रति बोलीं गिरिजाता पुनि हे प्रभु सन्तभक्त सुखदाय ॥
पावन लीला सियपिय की यह सुनि हिय बढ़ी अधिक उत्साह ।
है रुचि औरौ कछु सुनिबे की सो समुझाय कहहु बृषनाह ॥
बोले शशिधर तब अवसर त्यहि सुनि गिरिराजसुता मुखबानि ।
हे प्रिय सुनिये मन गुनिये शुभ भाषत राम चरित सुखखानि ॥
सहित सुमन्त्रिन दशकन्धर भट चढ़्यो उतङ्ग धवरहर जाय ।
भाष्यो सारन तब देखहु प्रभु यह सब राम सैन समुदाय ॥
सुभट असंख्यन हैं यामहँ प्रभु जिनकी अकथ पराक्रम थाह ।
मनुज सुरासुर कोउ नाहीं अस इनते करै युद्ध की चाह ॥
ह्वै उत्साही रहे युद्ध के आयसु नहीं देत रघुनाथ ।
नातरु बानर बिन शङ्का ये लङ्का ग्रसत निमिष महँ नाथ ॥
सिंह सरिस ये किलकारत जो टारत समर अमर अभिमान ।
भुज बिस्तारित बल धारित अति उछलत सप्ततालं परिमान ॥
सहस कोटिभट कपि इनके सँग अँगअँग महा पराक्रम खानि ।
डरत न रणमहँ जे कालहु कहँ स्वन सुनि कँपत लङ्कगढ़ थानि ॥
लखहु लँगूरे नभ इनके ये पूरे छटा सहित दिखरायँ ।
मानहुँ पावसऋतु समयो लखि युगधनु उदय कीन सुरसायँ ॥
इन कर परसे पबि पानी महँ नलिनादल समान उतरान ।
सेतु समुन्दर महँ बांध्यो इन अतिशय कृपा करहिं भगवान ॥
नद गोदावरि तट निबसत ये सुन्दर ताम्र मेरु गुह माहिं ।
अति बल धावहिं दल आगे ये संगर सकत यमहुँ करि नाहिं ॥
घन तन भाजन हैं भाके जनु रघुपति सभा मध्य शिरताज ।
कस्यो प्रपूरण प्रभु आयसु अति इनतनु धस्यो राम के काज ॥
पद्म अठारह बर बानर दल इनकी चलत नाह भुज छाहँ ।
CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सुमन सुगन्धित लै अपने कर पूजी रामचन्द्र शुभ बाहैं॥
खल दल घालक दोउ बालक ये हैं जगकरन केर अभिराम।
परम अनूपम शीलडील महँ सुन्दर बिदित नील नल नाम॥
मेरु घेरु सम यह दीसत जो चौदह तार ऊंच बिकरार।
उड़ि नभ पकरत कर बादर बर बीर गँभीर धीर जुझवार॥
बसै पुलिन्दा तट बांको भट तारा सुवन बालिको लाल।
लेइ उछङ्गन महँ उदयाचल अङ्गन लखि लजात रिपु भाल॥
बसैं निरन्तर इहि मानस महँ श्रीघनश्याम राम छबिधाम।
पांच पद्म है कपि सैना सँग अङ्गद नाम कहत अभिराम॥
चतुर चलांको अरु बांको लखि किय प्रभु कटक केर युवराज।
समर अरोपै जो कबहूँ यह गृह भगिजायँ धाय सुरराज॥
पद धरि चापै जो बसुधाको पन्नग उठैं कांपि पाताल।
निरखत लङ्का तन तीक्षन चष कीन्हे महाबदन बिकराल॥
धवल कँगूरा समशूरा यह जो दिखरात श्वेत शुभ गात।
बाढ़ि २ जुलफैं परि कुलफैं रहिं दारुण भुजा धुजा बलख्यात॥
है अधिकारी नृप शुभगर को चारी चपल ज्ञानकी खानि।
कबहुँ न आनत मन मुरिबो रण जानत सबिधि ब्यूह निर्मान॥
पैदा होतै शशि ग्रसिबे को गगन उड़ान बायु परमान।
सत्तरियोजन उड़ि ऊपर गो पुनि तब फिर्यो शीत भयमानि॥
अति भट मर्कट कोटि पञ्चशत याके रहत सर्वदा साथ।
डरै न लरिबे महँ कालहुते सो यह कुमुद नाम कपिनाथ॥
अब इत देखहु जिय लेखहु ये अगणित कपि समूह जेठाढ़ि।
चहुँ दिशि घुमड़े पुर लङ्का के मानहु सघन घटाकी बाढ़ि॥
पुच्छ भ्रमावत कोउ धावत इत आवत शिलाशृङ्ग लिये हाथ।
बृक्ष उखारत महिपारत किलकारत घोर शोर के साथ॥
सहस गयन्दन को पाराक्रम सब तन मध्य जानिये स्वामि।
सत पद्म है दल संख्या यहि अति बल चपल चाल के गामि॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

हैं सब बासी पुर कासीके खांसी करत समर महँ शाक ।
द्वन्द्व युद्ध के लड़वैया ये भागत समर अमर सुनि हांक ॥
दीरघ दन्ता मयमन्ता सब खन्ता सरिस पानि नख आहिं ।
इनकर अधिपति है धूमध्वज निबस्यो जौन लङ्क तट माहिं ॥
अतिबल गूढ़ा यहु बूढ़ा जो भाषत जामवन्त कहि नाम ।
ज्येठो बन्धव है याही को बहु बीरता धीरता धाम ॥
ज्यहिकर धरती है कन्दुकसम को करि सकत समर त्यहिसाथ ।
नरबर निर्जर अरु आसुर कोउ गहैं न सशर शरासन हाथ ॥
नदी नर्मदा तट बासी यह सदा अखेद रहत हिय नाथ ।
तन अभेद अति इन्द्रायुधसम बिचरत सहज गगन महिपाथ ॥
है प्रधान यह नृप शुभगर को रघुबर चरण कमल को दास ।
महा मन्दमति त्यहि जानिय जो यहि ते चहै युद्ध जयआस ॥
पुनि अवलोकहु इतओकहु यह परत बिशोक देखि सबज्वान ।
पीतबरण है तन आभा अति प्राची प्रभा मनहुँ छहरान ॥
चौबिस अर्बुद दल गणना यहि जानिय हृदय लङ्क भर्तार ।
तन बिकराली बलशाली सब एक ते एक शूर सर्दार ॥
परै जो आगे गिरि पत्थर त्यहि पायँन मर्दि मिलावहिं क्षार ।
कञ्चनगिरि के ये बासी सब इन कर अधिप महाबल भार ॥
सबिधि सहायक सुरनायक को सखा सुकण्ठ केर सुखदाय ।
मेरु कँगूरा सम सोहत तन मानहुँ धरे पराक्रम काय ॥
सुख सह पीवै नित गङ्गाजल औ त्यहि निकट करै शुभ बास ।
गर्जत आवत यह केहरि सम मर्कट सोई जानु मति रास ॥

स० । भुजदण्ड प्रचण्डहैं घण्ड सनी निमनी तनभा तनभा हठि जीतति ।
बरिबण्ड महा नवखण्डन में मृगझुण्डन में ज्यों लसै करिनीपति ॥
हनुमन्त प्रमत्त बली सुत जासु उसासु दशेशहि बेश सुकीरति ।
द्विज बन्दिसोहै यह केशरीनाम कपीन्द्र महाकपि कोटिअनीपति ॥

अब इत देखहु यह बानर गण उत्तरदिशा कीन जिन थानि ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जनु अकालबश उड़ि टीड़ीदल यहि थल धाय आय मड़रानि ॥
तजि बारिधि तट भट उत्कट सब आवतलङ्क शङ्क जनुत्यागि।
अति बल बाढ़े मद गाढ़े ये रहे सक्रुद्ध युद्ध महँ रागि ॥
है यहि लश्कर कर मालिकजो त्यहिबल सकैं न खालिक भाषि।
हैं बलशालिक रिपुघालिक युग भाय सुकाय युद्ध अभिलाषि ॥
रहैं हमेशा कपिबेशा महँ पै प्रभु समर अमर जय कारि।
तन अविनाशी सुखराशी अति वासी पारियात्र त्वर चारि ॥
गति मति स्वच्छा रण क्रिय दक्षा सुन्दर गवय गवच्छानाम।
अति अरामदा निज स्वामीकहँ इनपर कृपा करहिं बहु राम ॥
गर्जत लङ्का दिशि बङ्का जे करि अहतङ्क कार चिग्घार।
तार पञ्चदश तन ऊंचे दोउ दल सरदार मार अनुहार ॥
जल आधारी तुङ्गभद्र के बुद्धि समुद्र रुद्र के दास।
सहस सप्तदश बर बारन बल इक इक भुजन मध्य परकास ॥
गन्धमादनी लघु बन्धव यह अति अभिराम सर्व गुण धाम।
ज्येठो भैया है याको यह ज्यहि कहि पनस बखानत नाम ॥
बक्र शक्र सम यह देवन महँ भान समान मानभा खानि।
ज्ञानवान है गणनायक सम जानत नीति रीति सबिधान ॥
शरद चन्द्र सम मुख दीपत अति बाहु उदण्ड चण्ड को धाम।
काम सवाँरक शुचि स्वामी के ध्यावत सदा राम को नाम ॥
नाथ बिलोकहु अब मर्कट यह निर्मल जलज सुष्ठु दल गात।
शरदनिशापति सम दीपति अति दिब्यअनङ्गअङ्गअधिकात ॥
पीतबरन शुचि छबिनैननकी चितवत चकित छकित बलबाहु।
गर्जत तर्जत घन सावन सम अगरो गुणन भरो उत्साहु ॥
समर करन को इक अवसर यह गो सुरनाथ साथ सुरधाम।
इन्द्र अनन्दित बर दीन्ह्यों यहि तबते भयो रूप सम काम ॥
कियो मित्रता सुरनायक अति असमय होत सहायक आनि।
सहस कोटि दल भट मर्कट कर याके साथ नाथ ल्यो जानि ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बचन अन्यथा जनि मानहुँ प्रभु जानहुँ याहि दूसरो बालि।
समर सैकरन भट रोपैं जो तो पै यहै एक सब घालि॥
दर्दुर पर्वत पर याके घर मन बच काय राम कर दास।
देह जगमगत मन उमगत अति सुनतै श्रवण युद्ध की आस॥

कु०। पर्वत मर्दत पद धरत, करत धराकर छत्र।
लिय मचाय घनघोर यहिं, समर अमर जय पत्र॥
समर अमर जय पत्र, दीन लखि कालहु कम्प्यो।
अति अखण्डवर चण्ड, मार्तण्डहु कर झम्प्यो॥
है सुषेण शुभ नाम, राम सेवक बल गर्वत।
हृदय बसत अस हँसत, लसत जनु कञ्चन पर्वत॥

निरखौ परखौ अब बानर यह मानहुँ गेरु मेरु प्रभु आय।
रबिसम मुखछबि कबिभाषत कहि बलथल अङ्ग अङ्ग दरशाय॥
मारिकै लङ्का दह कीन्ह्यों यहिं आयो जबै प्रथम इक दायँ।
अब केहि कारण इत आवत यह कहिये मर्म भाषि सो सायँ॥
ज्यहि दिन पैदाभो बानर यह अञ्जनि गर्भ लीन अवतार।
कह्यो क्षुधारत तब माता सन जननी क्षुधा भई अधिकार॥
कहि समुझायो तब माता ने हे सुत ढूंढ़ि खाहु फल लाल।
सुनि चित चकित यहचितयो तब इत उत हेरि फेरि बिकराल॥

स०। धाय उड़ाय चल्यो नभको अतिकाय सुवामन की सम बाढ़ी।
लीलि दिनेश अशेश लियो अमरेशहिं शङ्क भई अति गाढ़ी॥
बज्र हन्यो न गन्यो कछु बिक्रम याहित बक्र भई यहि दाढ़ी।
पौन न गौन कियो त्यहि काल भई सुनई बिपदा उठि ठाढ़ी॥

पवन बन्दभै त्रयलोकी मा रोंकी श्वास दुखित नर नारि।
लखि अति अस्तुति किय देवनतब औ अस बरहु दीन निर्धारि॥
होय कुलिशसम तव देही सब सवँरत बढ़ै पराक्रम भाग।
सुनि पुनि अस्तुति मुनि देवनकी तब यहिं कीन भानुकोत्याग॥
पवन पालना यहि कीन्ह्यों अति ताते भयो पवनसुत नाम।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दूत पियारो रघुनायक को नूतन बुद्धि पराक्रम धाम॥
कियो अध्ययन दिननायक ते उलटी चाल जाय रथ साथ।
रहै अगारी नित स्यन्दनते तब लिय बली जानि दिननाथ॥

कु०। सागर शत योजन कहत, जाहि सकल बिस्तार।
इक फलङ्क महँ लंघि त्यहि, लङ्क गयो करि क्षार॥
लङ्क गयो करि क्षार, बली बरियार प्रहारे।
लखि अपार भुजभार, समर सुर आसुर हारे॥
किहि प्रकार त्यहि साथ, नाथ करिहैं हम झागर।
अति भट मर्कट कटक, मध्य झलकतबलसागर॥

सैन मध्य महँ अब देखहु प्रभु मैन शरीर बीर बल धाम।
सावन घन सम तन शोभा शुभ राजत नीलकमल सम श्याम॥
भार उतारन हित बसुधा को दारन हेत दुष्ट दल झार।
अगम अगोचर निर्बिकार प्रभु धारण कियो मनुज अवतार॥
केश बेश शिर अहि बालक सम सोहत जटा छटा अभिराम।
बिच २ कलियाँ बर कुसुमन की गूंधी लषणलाल मतिधाम॥
अलकैं ललकैं मुख मयङ्क पर उपमा रहे तासु कबिगाय।
सुधा पियनको अहिछौना जनु शशिपर रहे ललकि लपटाय॥
मृगमद कुंकुम अरु केशरि के झलकत तिलक मनोहर भाल।
बारिजदल से रतनारे चष सोहत श्याम रेख द्युति जाल॥
धनुसम सोहैं युग भौंहैं अति डरपत जिन्हैं बङ्क लखि काल।
शुक हिय लाजत लखि नासा शुभ चमकतबर बुलाक बिचलाल॥
शरदचन्द्र छबि मुखनिन्दत मृदु अतिशय दशन पांतिकी कान्ति।
अधर लजावत कल बिम्बाफल देखत मन न लहत क्षन शान्ति॥
दर छबिसीवां बरग्रीवां द्युति हलकत परो मधुर बनमाल।
मत्तशुण्ड सम भुजदण्डा दोउ धनु शर सहित शत्रु बल शाल॥
थलकत बक्षस्थल दीपति युत कटि तट लसत पीतपट भाथ।
राजत त्रिबली ता ऊपर बर नाभि गँभीर कुण्ड जनु पाथ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बाम बिभीषण अरु दक्षिणदिशि सोहत लषणलाल लघुभाय।
हँसत हँसावत दरशावत सुख सेवत चरण कमल लवलाय॥
स०। हैं दोउबंधु बली बलसिन्धु प्रभू इनके गुण जात न गाये।
बन्दि अनन्दक दीन मुनीन सुमानस मानस मीन लखाये॥
सच्चिदानन्द स्वरूप अनूप हैं गावत बेद अखेद बताये।
तारन भक्त अभक्त सँहारन भार उतारन को महि आये॥
युत अति भटका यह कटका प्रभु जो बिन खटका परै देखाय।
सो अब देखहु बल बेषहु गत अयुतन रहे बीर बर छाय॥
घटा घनेरी जनु भादौं की अम्बुधि निकट रही उमड़ाय।
यावत योधा हैं यामहँ प्रभु ते सब महाप्रबल बल काय॥
रबि छबि सरसत यह दरशत जो बरसत प्रभा जासु बर गात।
बिलसत बिहँसतमुखनिशिपतिसमशुभगरपरमनाम बिख्यात॥
स्वामि सहायक रिपुमद घायक नायक जानु कटक यहि क्यार।
सकल बानराधिप भाषत यहि पुरवत हुकुम शीश पर धार॥
यथा कथा है यहि उतपति की भाषत तथा सुनहुँ मनलाय।
अचरज मनिहौ प्रभुसुनिकै सो बिधिगति अकह कही ना जाय॥
काढ़िकै कीचर निज आँखी को बिधि धरतीपर दीन चलाय।
बानर पैदा भो ताते इक सुन्दर बदन महाबल साय॥
भये अनन्दित बिधि देखत त्यहि लेखत प्रभु चरित्र चित माहिं।
अतिआश्चर्यितकह कौतुकयह भयोसो समुझिपरत कछु नाहिं॥
हाथ जोरि कै भट मर्कट सो ठाढ़ो भयो ब्रह्म ढिग जाय।
उर पुर तोलत सो बोलत भो मोहिं आदेश काह जग साय॥
तब अनुमान्यो सृष्टिकरन मन तासन कह्यो बचन समुझाय।
तुम कहँ कीन्ह्यों कपिराजा हम निबसौ धरा धराधर जाय॥
घन बन बिचर्यो आनन्दित ह्वै सुन्दर मधुर मूल फलखाय।
मारि गिरायो निशिचारिन कहँ यावत तुम्हैं परहिं दिखराय॥
नाम तुम्हारो ऋक्षराज है नहिं जग तुम समान बलवान।
CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ह्वै है दूसर अरु पैदा कोउ तुमसम तुम्हीं एक नहिं आन॥
सुनि अस बानी चतुरानन की हँसि मुसकाय नाय पदमाथ।
ब्रह्मलोक सों सो गमनत भो दक्षिण दिशा हर्ष के साथ॥
बिचरन लाग्यो मुद पाग्यो सो गिरि बन सघन मध्य बलशालि।
जो जहँ पायो लखि दानव तहँ डार्‌यो भुज प्रलम्ब सन घालि॥
इत उत बिचरत मधि काननमहँ इकदिन लख्यो कूप इकजाय।
देखत जल महँ निज छाहीं सो मन महँ गयो सनाका खाय॥
शोचन लाग्यो भ्रम पाग्यो सो को यह छिप्यो कूप महँ आय।
अवशि मेरही है बैरी कोउ मम डर छिप्यो आय इत धाय॥
बच्यो अकेलो यह मारन ते अस जिय ठानि कोप उर आनि।
फांदि झड़ाका पर्‌यो कूप महँ डर्‌यो न नेक चित्त भयमानि॥
अस कछु मंशा नारायण कै फँदतै कूप तासु त्यहि काल।
पलटि अङ्ग भे सब नारी के भारी भयो दैव कृत ख्याल॥
रूप अनूपम छबि यूपम सम ज्यहि लखि लजै कामबर बाम।
निकसि कूप ते सो बाहर भइ द्युति घर सुघर सुलक्षण धाम॥

स०। स्वर्ण छरीसी परीसी खरी सुघरी छबिता अगरी खरी ताक्षन।
औचक दृष्टि परी हरिकी बिगरी मति धीर धरी चित जासन॥
लागत गात अगातको बान गयो छुटि ज्ञान डिग्यो तन आसन।
शुक्र झर्‌यो सो पर्‌यो तियगात भयो सो मनौ त्यहिगर्भ प्रकाशन॥

भये प्रसवके जब पूरण दिन सुरपति अंश तेज बल शालि।
अरि मद घालिक हरि कुल पालिक पैदा भयो पुत्र भट बालि॥
बिदित बीरता है जाकी जग तुमहूं लख्यो निशाचर राज।
लरिका जाकर बर अङ्गद भट ज्यहि रघुराज कीन युवराज॥
पुनि कछु अवसर के बीते पर दिनकर लख्यो ताहि छबिधाम।
तेऊ तन मन ते मोहित ह्वै निरखत भये बाम बश काम॥
वीर्य पतनभो तब दिनमणिको सो तिय उदर आय प्रविशान।
गर्भ दूसरो त्यहिं धार्‌यो तब पूरण भये दिवस परमान॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सुत उतकण्ठा सों ताके तब पैदा भयो सुकण्ठा बाल ।
सैन मध्य ज्यहि अवलोकत तुम भानुसमान तेज बल शाल ॥
पैदा ह्वै गये इन दोउन के पुनि जस चरित कीन कर्तार ।
सोऊ भाषत अभिलाषत सो चितदै सुनहु लङ्कभर्तार ॥
उतपति ह्वैगै जब शुभगर की भो पश्चात नाथ यह हाल ।
काया पलटी पुनि नारी की लह्यो सो प्रथम गात तत्काल ॥
भयो अनन्दित लखि दोऊसुत हित सह हृदय लीन लपटाय ।
गयो संग लै चतुरानन ढिग सन्मुख भयो ठाढ़ शिरनाय ॥
चरित बखान्यो कहि आदिहि ते उपजे जेहि प्रकार दोउ बार ।
सुनि त्यहि ब्रह्मा समुझावत भे है हरि इच्छा महा अपार ॥
अब हम तुमकहँ बतलावत जो सो शिष करहु जाय मनलाय ।
गमनौ मारग दिशि दक्षिण की लै दोउ सुतन संग हर्षाय ॥
है पर परबत ऋष्यमूक तहँ तासु समीप सुखद सब काल ।
राजत पम्पापुर सुरपुर सम तहँ तुम होहु जाय महिपाल ॥
लै तब आयसु हंसध्वज को आयो ऋच्छराज त्यहि ठाम ।
भोगनलाग्यो सुखनिवसितह्वै सह दोउ सुतन सुतन बलधाम ॥
पुनि कछु अवसर के बीततपर सुन्दर राज भोग सुख पाय ।
भये सयाने दोउ भैया ये इकते एक महाबल काय ॥
साठिसहस गज बल याके तन यहिते अधिक बालि बरियार ।
मयसुत मार्यो मायावी ज्यहिं मानिय सत्य लङ्क भर्तार ॥
यहिबिधि शुभगरकी उतपति प्रभु तुमसन कही यथोचित गाय ।
अतिबल योधा यहि शोधा हिय किय मित्रता राम मनलाय ॥
रघुकुल भूषण की सैना सब दशमुख लख्यो दृष्टि दृगलाय ।
पुनि चलि मन्दिर गो आनँदसह दिनकर अस्तकाल को पाय ॥

स० । याबिधि सारन शारँगधारन की सब सैन दिखाये दशाननै ।
लाग्यो शुभाशिष दै समुझावन पावनप्रीतिकरौ प्रभुपावनै ॥
आनत चित्त न सो गिरिजा न गनै निजज्ञानहुँ सों चतुराननै ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

भूलत नेक न टेक केहूबिधि भूलत कालकरालके पालनै॥
अशुभ निकन्दन पद बन्दन करि श्रीरघुनन्दन चरण मनाय।
भव भय पारद श्रीशारद भजि भाषत कथा मनोहर गाय॥
रघुबर दल बलको बर्णन सुनि गिरिजा भई अधिक आनन्द।
मन्द मधुरता सों बोलीं पुनि हे जगपाल भालधर चन्द॥
चरित अपूरब रामचन्द्रको सुनि उर महामोद अधिकात।
नहिंअघात मन तन पुलकत अति बाढ़त अधिक लालसाजात॥
गाइय गाथा कछु औरौ कहि स्वहिं पद पदम किंकरी जानि।
सुनि इमि बानी भवरानीकी भे अति मुदित मोद की खानि॥
उर पुर बासी को सुमिरण करि बोले मधुर बचन मुसक्याय।
हौ अति धन्ये गिरिकन्ये तुम पूछ्यो प्रश्न परम सुखदाय॥
तुव रुचि राखत मैं भाषत हौं सीतानाथ चरित की गाथ।
ज्यहि सुनि पापीजन प्रयास बिन सुरपुर लहत मोदके साथ॥
पाय सुआयसु रघुनायक को अङ्गद गये लङ्क ज्यहि भांति।
भई वार्ता लङ्कापति सों सो सब कहौं कथा करि ख्याति॥

स०। रैनि गये द्युतिऐन उये तब बारिजनैन सुशैन बिहायो।
शौचबिधानभलीबिधिठानसनानकै इष्टबशिष्टहिध्यायो॥
प्रातर्वृत्तिसों कै निर्वृत्ति प्रभापति फेरि सभामधि आयो।
सम्मत शोधनके हित बन्दि अनन्दितह्वै सब मन्त्रिबोलायो॥

जामवन्त शुभगर अङ्गद लै आये धीर बीर हनुमान।
नील बिभीषण नल आदिक सब बैठे चरणकमल धरि ध्यान॥
त्यहिक्षण सीतापति भाष्यो इमि सुनिये सकल मन्त्रि बुधिधाम।
करिबो वाजिब अब आगेकह शोचि सो कहहु मन्त्र अभिराम॥
सुनि निदेश इमि कौशलेश को कह ऋक्षेश चरण शिरनाय।
सब उरबासी अविनासी तुम सबकी गति जानत रघुराय॥
तद्यपि हमसन जो पूछत प्रभु तौ हम कहत स्वमति अनुसार।
बड़े बड़े योधा तुव सैना महँ इकते एक शूर सरदार॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

पै बतलैबो युक्ति उक्ति सों दैबो ज्वाब राज दरबार।
दाब दिखैबो समुझैबो अरु यावत चार कर्म को कार॥
नहिं कोउ जानत है अङ्गद सम मानिय सत्य जक्त भर्तार।
मम मन आवत अस याते प्रभु चार पठाइय बालिकुमार॥
सुनि अस सम्मत जामवन्त को सबके हृदय भई आनन्द।
तब त्यहि अवसर पर अङ्गदसन लागेकहन भानुकुल चन्द॥
स०। हे रिपु भञ्जद सङ्गर सङ्गद सङ्गद अङ्गद बीर बिशेखी।
बालिकुमार महामतिहार करौ यह चारक कार अशेखी॥
लङ्क निशङ्क पधारहु धारहु मोर निदेश रहै ज्यहि शेखी।
काजसवाँरि बुझैनिशिचारिहि राजकुमारिहि आवहुदेखी॥
बैन माधुरे कमल नैन के सुनि इमि बुद्धिऐन युवराज।
हाथ जोरि कै यह भाषत भे हे रघुराज! राज शिरताज॥
सुधि बुधि पूरो अरु शूरो सोइ जापर कृपा करौ तुम स्वामि।
कर्ता धर्ता सब आपहि हौ म्वहिं आदरत जानि अनुगामि॥
पहुँच्यो बङ्का भट लङ्कातट अतिहि अशङ्का बीर जुझार।
सुमिरण करिकै रामचन्द्र को फाटक नाँघि गये बहिपार॥
उत्तम शोभा लखि लङ्काकी मनमहँ क्षोभा बालिकुमार।
धन्य सराह्यो पुरबासिन कहँ हैं अति धन्य बनावनहार॥
जाकी उपमा कहँ सुरपुर नहिं उर महँ रहत देव ललचान।
धन्य बिलासी त्यहि नगरी के सगरी जहां मोद सामान॥
सब गुण अगरी प्रभा उजगरी बगरी धाम धाम अभिराम।
अम्बुधि कगरी पर सोहत सुठि मोहत देखि चितेरो काम॥
तेहरो खंदक पनियाँसोते जम्बूनद सो परै दिखाय।
गम्य पियादे कै नाहीं जहँ तहँ असवार कहां ते जाय॥
छहरदिवारी ताके ऊपर गाड़े तीब्र धार के काँट।
फाटक लागे अष्टधात के जकड़े कठिन वज्र के पाट॥
धरीं भुशुण्डी रण मण्डी तहँ जिन लखि भगैं घमण्डी ज्वान।
CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अतिबल गहरे हैं पहरे पर पकरे खरे शस्त्र बलवान॥
चलो बांकुरो तब आगेको देखत लङ्क नगर को राग।
खिलीं मनोहर अमराई तहँ पाईबाग अनूपम लाग॥
पुष्प अमल के कोमल दलके मधुरे फलके बृक्ष अपार।
हलके हलके सों राजत हैं तिन पर नित बसन्त असवार॥
कहूं कदम्बन अरु अम्बनकी झुमड़ी झुकी झुड़ीली पांति।
ताल तमालनके जालनकी कहुँ कहुँ भिन्न जाति दरशाति॥
चन्दन वृन्दनसों लाग्यो कहुँ सुन्दर गन्ध रही उमड़ाय।
धाय धाय तहँ आय आयकै अनगिन नगिन रहे लपटाय॥
कहुँ नवरङ्गी नवरङ्गीके द्रुम बहु फरे खरे गरुआयँ।
मधुरे गूदन अमरूदन के सहसन स्वच्छ बृक्ष दिखरायँ॥
कहूँ बहेरे लगे हरेरे अमले बिमले फरे बनाय।
कहूं फालसे गसे अनूपम कमरख रही एक रुख छाय॥
गौंदा गौंदा फरे करौंदा जम्बू निम्बू केरि कतार।
सेव सुपारी लौंग नारियर बड़हर हरंहार यकतार॥
पाकरि आकरि इकदिशि दरशै है अश्वत्थ युत्थ बहुताय।
बीचन बीचन महँ लीचिन के सुन्दर बृक्ष रहे गरुआय॥
पनस सरीफा सहतूतन के नूतन जाल एक दिशि लाग।
अनन्नास अरु विनासपाती लाखन दाख और पुन्नाग॥
कहुँ कहुँ प्यारे लगे छोहारे मधु अखरोट बेर बादाम।
कहूं अनारन कचनारनकी है दरशाति पांति अभिराम॥
इक दिशि प्यारी लगीं कियारी बिकसे गसे सुमन नव डार।
उमड़ी गुमड़ी लता कतायें दीन बितान तानि जनु मार॥
एली बेली बिमल चमेली मेली चहूं ओर शुचि गन्ध।
डारन डारन भौंर हजारन करि गुञ्जार रहे मद अन्ध॥
कहुँ गुलमेहँदा अरु गेंदाके रहे प्रफुल्ल फुल्ल छबि छाय।
कहूं केतकी जकी अनूपम रही बसन्त तन्त दिखराय॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बिकसी नैनी गुलचैनी कहुँ रविश्राननी घनी घुमड़ानि।
कहुँ मुचकुन्दन अरु कुन्दनके बृक्षन स्वच्छ छटा छहरानि॥
कहुँ कहुँ प्यारी खिली नेवारी कहुँ दुपहारिन केरि बहार।
कहुँ कहुँ उलही जुही मालती मरुश्रा गुलश्रनार गुल्जार॥
कहुँ कहुँ छैला करसैला बहु फूले कहुँ गुलाब बर श्राब।
कहूं सुगन्धै देत केवड़ा चम्पा हरत स्वर्ण की दाब॥
रङ्ग दिखावत गुलतरङ्ग कहुँ गुल्दावदी देत श्रमझार।
कहूं कनैरा गुलखैरा अरु कतहूं हरशिंगारके हार॥
लगे पलासनके क्रासन बन कतहूँ गुलाबास शुचि बास।
कहूं कियारी बर गुड़हरकी देखे हरत भूख अरु प्यास॥
घनी कामिनी इक श्रोरन महँ करि रहि जौन दामिनी मात।
केशरि क्यारी की न्यारी छबि अमले गमले भले दिखात॥
लज्जावन्ती की पंती कहुँ छाया परे जौन मुर्झायँ।
स्वच्छ कतारैं कल्पबृक्ष की जिन्हैं बिलोकि देव ललचायँ॥
मध्य बाटिकन के सोही शुभ बारहदरी जरी नग लाल।
परी दरीचिन में जाली बर यूपन घनी मणिन के जाल॥
करैं कलोलैं तहँ पक्षी गण बोलैं मन मोहनी अवाज।
झुण्डन २ मृग बिचरैं तहँ कहुँ कहुँ लरैं मत्त गजराज॥
पिया पिया कहि पपिहा बोलैं अमृत भरे पियारे बोल।
मोरवा शोरवा करि नाचैं कहुँ कीन्हें भिन्न भिन्न बहु गोल॥
जोटा सारस के घूमैं कहुँ कहूं उड़ात लालके जाल।
लखत बाटिकन की छबि या बिधि आगे चले बालिके लाल॥
लख्यो तड़ागन की शोभा तहँ पटतर नहीं मानसर आव।
क्षीरसमान नीर परिपूरित नीरज बेश दिखावत भाव॥
ठाट अनूपम हैं घाटन के जड़े अमोल रतन के जाल।
बँधी नसेनी इक श्रेनी की तहाँ नहात अमित नर बाल॥
नगी पन्नगी घनदामिनि सी भामिनि भरैं स्वर्णघट पाथ।
CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जिनछबिउपमाकबिपावैंनहिं रतिअति लजति मलति दुउहाथ॥
तहँते आगे चलि अङ्गद फिरि देख्यो जाय सुघरि करिशाल।
खड़े पहारी से भारी गज मद की स्रवत पनारी भाल॥
रूमैं भूमैं तल भूमैं अति जकरे परे जँजीरन पायँ।
शान लजावत ऐरावत की जलधर देखि देखि सकुचायँ॥
अति उद्दण्डन शुण्डादण्डन सोखत सरित सुकुण्डन पानि।
भुण्डन भुण्डन मद मुकैं बहु धक्कन धुक्कि देत गिरि भानि॥
चलत हलतभुवि शेषकलिमलत फणफटकारि करत चिग्घार।
दाढ़ दरक्कत कोलानन की कमठ पीठि फटिजात दरार॥
बाँक हाँक सुनि सकात दिग्गज भागिलुकात जात भयखात।
दीरघ रद कदबिहद जलद सम पद मजबूत उच्च अति माथ॥
अड़हिं ऐंड़करि जो मग्गनमहँ फिरि नहिं डग्गअग्ग कहँ लेत।
गिरि हहलावहिं भवन ढहावहिं धावहिं पवन चुनौती देत॥
आनि न आनैं कछु अंकुश की भागैं तोरि तोरि आलानि।
कानि महावत की मानैं ना चूसैं शशिहि शुण्ड नभ तानि॥
नभ पथ रोकैं दिननायक रथ बलगथ अकथनीय तिन क्यार।
समर शिंगारे कदवारे अति भारे जैतवार धजदार॥
सोंहैं हीरन के हौदावर जगमग होत जड़ाऊ काम।
घहरैं घण्टा घन घोरन सों दुन्दुभि बजैं मनहुँ सुरधाम॥
झलकैं झूलैं कलधौतन की ललकैं लरी जरी मुकतान।
कनक पहारन के ऊपर जनु दीन्हीं तानि मयूखैं भान॥
धरी अमारी तिन ऊपर बर सुबरण गढ़ी मढ़ी मणिजाल।
कञ्चन कलशा चम चम चमकैं झालरि लगे जवाहिर लाल॥
बिछीं सफ़ेदी मसनन्दै ते शारद चन्दै रहीं लजाय।
साफ़ सुपरदा जरबाफ़न के गिर्दा बर दावन दरशाय॥
यहि बिधि देखत गज भीरैं पुनि आगे चले बीर युवराज।
बाजी शाला अवलोक्यो तहँ जिन लखि करैं सूर्यहय लाज॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

भांति भांति के जाति जाति के बाँधे पाँति पाँति हय थानि ।
जात बातगति मातकरत मग पग नहिं लगत भगत अतुरान ॥
कच्छी मच्छी ताजी तुर्की करनाटकी अरब अपराक ।
खलक मोहनी बाजि बलक के सुन्दर बेश बने यकताक ॥
मनगति हारी कन्धारी हय करनाटकी काबुली बाजि ।
सुभग कलङ्गी बहुरङ्गी बहु लखि छबि जात मीन मृगलाजि ॥
अङ्गी बङ्गी और सुरङ्गी जङ्गी भरे जोम धजदार ।
मुश्की अबलख सुरुख कुमैता जिन पर चढ़ैं छैल असवार ॥
नट से नाचैं उछरि उछरि भुवि घट महँ करत लीकसी जात ।
नभ लग पूरत खुरथारन रज मानौं आहिं बात के भ्रात ॥
बेष सुआछे अँग अँग काछे बाछे चलत लेत करछाल ।
थहरत फहरत अन्तरिक्ष में धरणी उछलि देत खुरथाल ॥
पैज करत जनु रबि बाजिन सों जकरे परम जेवरन गात ।
कञ्चन जीनैं बँधी नवीनैं छबि की छटा छलकि छहरात ॥
झलकैं झूलैं जरबाफन की ललकैं अलक लरी मुक्तान ।
हलैं हमेलैं गल हीरन की कल हैकलैं खिलैं जनु भान ॥
यहि बिधि आला हयशाला लखि जकिसे रहे बीर युवराज ।
पुनि चलि आगे अवलोकत भे सुन्दर स्यन्दनादि के साज ॥
सहसन सोहे रथ शोभा गथ मानहुँ देवराज के यान ।
घनी किंकिणी चहुँदिशि मरिडत चमचम होत मणिनको भान ॥
रतनन गूथी परी बरूथी जड़े अमोल जवाहिर लाल ।
झालरि झलकैं नग जगमग कर मनहुँ इकत्र नछत्रन जाल ॥
चक्र चमंकैं अष्टधात के कलसी कलसी परैं लखाय ।
धनद बिमाननके निन्दक अस अङ्गद लख्यो सुरथ तहँ जाय ॥
पुनि चलि तहँते अरु आगे गे जहँ सामन्तन केर अगार ।
जे लड़वैया बिन अस्त्रन के कूदत फाँदत चलैं पगार ॥
लगे अखारे तिन मल्लन के अति बिकरल्ल बल्ल बेथाह ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बरनी बरनी के सोहे भट उतरे धरणि मनौ जलबाह॥
कसे जाँघिया करिहायें मा बलकत बेश भवाँये बाहु।
कोउ डँड़ पेलैं बैठक झेलैं खेलैं युद्ध सहित उतसाहु॥
आगे चलिकै अवलोक्यो पुनि सुन्दर छटा बाल के जात।
ध्वजा पताके छबि शाके से दर दर फहर फहर फहरात॥
थर थर घर घर डगर डगर प्रति अति द्युति जगर मगर रहिछाय।
द्वार द्वार प्रति मणि हारन बर बन्दनवार दीन बँधवाय॥
कञ्चन कलसे कल झलमलसे निर्मल जल से भरे बनाय।
धरे दुआरन के आरन पर रम्भन खम्भ करे गड़वाय॥
लखि दरवज्जन के छज्जन को लज्जन लगत इन्द्रपुर धाम।
ठाम ठाम पर काम रतन को काम गुलाम होत बिन दाम॥
अटा अटारी चित्रसारी बहु प्यारी छटा घटा दरशात।
जहँ मन अटका तन लटका तहँ खटका भूलि चलन को जात॥

स० । अलका भल ता सम उज्जलका हलका नलका पुर आवति है।
नरती सम भोगवती लगती जगती सब लाज लजावति है॥
द्विजबन्दि अनन्दित जीव जहाँ उमहा सुख दुःख भगावति है।
सरसावति शोभ जगावति सी अमरावति पार न पावति है॥

अस सुन्दरता लखि लङ्काकी मन मा खुशी भये युवराज।
धन्य बिलासी सुखरासी इत बासी जौन निशाचर राज॥
अस अनुमानत मन अङ्गद भट आगे चले हृदय हर्षाय।
तहँ पर खेलत पुरबालक बहु तिनते कह्यो बात अस जाय॥
काके बालक तुम खेलत इत हमसे सांच देउ बतलाय।
सभा दशानन की कौनी दिशि कहौ बुझाय दया उर लाय॥
सुनि अस बानी भट अङ्गद की बोल्यो पूत रावण क्यार।
हैं हम बालक दशआनन के ताकत कत न मूढ़ कुबिचार॥
रे खल बन्दर क्यहि कारण तैं आयो लङ्क निशङ्क पधारि।
कानि न मानत कछु निश्चर की है तू बड़ो ढीठ बदकारि॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

रावणसुत की सुनि बानी इमि रिसहा भयो बालि को लाल।
करि अरुणारे चष बोल्यो तब रे खल तोहिं भखोचह काल॥
सीधी बानी ते बोलत नहिं रे शठ तोहिं इतक अभिमान।
एक थपेड़ा के मारेते देर न लगैं पधारैं प्रान॥
बढ़ी बतकही इमि दोउन ते दोऊ नव जवान बलवान।
बातन बातन बढ़ी कर्षता गातन भभकी कोप कृशान॥
लात उठाई त्यहिं अङ्गद कहँ अङ्गद पकरि लात गहि हाथ।
अतिहि भ्रमायो त्यहि बङ्गी सम जङ्गी बालिजात बिख्यात॥
झटक्यो पटक्यो पुनि धरणीपर जस पट रजक देत फटकारि।
प्राण सटकिगे तब देही ते गो चहुँ ओर शोर हहकारि॥
भागे निश्चर भय पागे तब लखि इमि बालितनय को कर्म।
मर्म न भाषै कोउ काहूसन सबके हृदय ब्यापि गै भर्म॥
सगरी नगरी महँ हल्ला भो डगरी डगरी हवा उड़ानि।
इत उत भागे भय पागे सब मुख ते कहि न जात कछुबानि॥
प्रथमैं लङ्का जेहिं दाही कपि आयो फेरि तौन बलधाम।
हे विधि अबधौं का करिहै यह परिहै देखि काह परिणाम॥
बुद्धि लड़ावैं नरनारी सब अति भ्रम डूबे सिन्धु अथाह।
ज्यहि मग आवैं कपिनायक चलि पूछे बिना बतावैं राह॥
एक मुहूरत महँ पहुँचत भो जहँ दरबार दशानन क्यार।
हाल पहूँच्यो दशआनन पहँ आयो राम केर प्रतिहार॥
भयो बुलौआ तब संसदि महँ गमनो घनो बीर युवराज।
दाखिल होइगो तहँ बनेश सम जहँ दनुजेश बेश बिरराज॥
स्वर्ण सिंहासन पर आसन किये मानहुँ श्याम मेरु सहप्रान।
नैन कान अरु मुख नासा ये गिरि कन्दरा खोह अनुमान॥
लता जतावत तन रोवाँ अरु अति उत्तङ्ग शृङ्ग दशमाथ।
शस्त्र धरे बल भरे बृक्ष सम दीसत तासु बीसहू हाथ॥
अति मदमत्ता बलवत्ता भट ऐंठत सभामध्य बहु बैठ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

श्री रघुनन्दन पद बन्दन करि तारातनय शनै तहँ पैठ॥
झट पट भट ठट उठि ठाढ़े भे उद्भट देखि राम प्रतिहार।
व्यापी शङ्का सब घट २ महँ काधौं होनहार कर्तार॥
उठत देखि कै सभासदन को गै दशबदन बदन रिस छाय।
चख पख तीखन करि ईषन युत अङ्गदओर लाग बतलाय॥
संसदि अन्दर चलि आयो तू बन्दर कौन भौन क्यहि ग्राम।
हाल बतावहि कहि आपन सब आयो कौन काम यहिठाम॥
बोले अङ्गद तब रावण ते मैं रघुनाथ दूत दशमाथ।
तुम्हैं बिलोकन को आयों इत सहज सुभाय निशाचरनाथ॥
बाप हमारे सों तुमसों अति रहि मित्रता नात स्वइ मानि।
तव हित कारण चलि आयों इत मानहुँ सत्य हमारी बानि॥
हौ तुम नाती मुनि पुलस्त्य के बर कुल माहिं लिह्यो अवतार।
बहु बिधि पूज्यो विधि शंकर कहँ बरलै किह्यो अनूपम कार॥
लोकपाल अरु सुरनायक लै जीत्यो देव दैत्य रण माहिं।
भयो मोह वश नृप कैसे अब किह्यो बिचार तनक उर नाहिं॥
सिय जगदम्बा हरि आन्यो तुम ठान्यो बृथा हृदय अभिमान।
धर्‍यो कुमारग पग शोच्यो नहिं ह्वैकै अति सुजान मतिमान॥
अबहुँ तुम्हारो कछु बिगरो नहिं मानौ कही हमारी बात।
दोष तुम्हारो सब क्षमिहैं प्रभु यामहँ भल तुम्हार दरशात॥
दाबौ तिनुका तुम दाँतन तर गल बिच लेहु अँगौछा डारि।
लङ्कनिवासी जन यावत सब लै सँग लेहु आपनी नारि॥
सादर सीता को आगे करि यहि बिधि चलौ सकल भय त्यागि।
शरण सुखद श्रीरघुनायक की पहुँचौ शरण माहिं अनुरागि॥
बिनय सुनावो इमि हाहाकरि हे प्रभु त्राहि त्राहि अब मोहिं।
आरत बानी इमि भाषत सुनि तुरतै अभै करैं हरि तोहिं॥
बालिसुवन की सुनि बानी इमि क्रोधित कह्यो निशाचरराय।
रे शठ बन्दर कछु सँभारि बच नहिं यम धाम देहौं पठवाय॥

८

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

देव सतावन भट रावन म्वहिं जानत तैं न कीश अज्ञान ।
शङ्क न मानत कछु हिरदय महँ सुने न शठ प्रताप मम कान ॥
काको बालक कुलघालक तैं ताको मोहिं सुनावसि नाम ।
काह नाम है तुव भाषण करु हम से कौन हेत को काम ॥
नाम हमारो तौ अङ्गद है बेटा बालि केर बिख्यात ।
तिनसों तुमसों केहु समया पर भै मित्रता कहौ सो बात ॥
कह्यो दशानन हम जानत नहिं को है बालि बसत क्यहि ठाम ।
सुयश बतावो कछु ताको तुम तासों रह हमार कह काम ॥
हँसि मुसकाने भट अङ्गद तब औ रावण से लगे बताय ।
बीत्यो औसर बहु कारण यहि तुम कहँ भूलि गयो सो भाय ॥

स० । बालि वही सुनु बीर दशानन आन न जासम बीर भयो ।
गयो भूलि अबै दिन थोरेहि में रणकारण को ज्यहि तीर गयो ॥
बिन माखसो काँखरि दाबि तुम्हैं षटमास भ्रम्यो न अधीर भयो ।
काढ़ि भाग्यो तबै द्विजबन्दिकहै रबिको जब अञ्जलि नीर दयो ॥

सुनि इमि भाषण भट अङ्गद को कह्यो लजाय निशाचरराय ।
रह कपिबाली बलशाली इक अब मोहिं गई कछुक सुधिआय ॥
त्यही बालिके सुत अङ्गद तुम उपज्यो बंश घमौना बाँस ।
बृथा बियानी तुव माता त्वहिं किन ह्वैगयो उपजतहि नास ॥

स० । लागत अङ्गद लाज नहीं अस बात कहे मुखजीभ न टूटी ।
बालिको पूत कहाय अरे बनि तापस दूत कहा मति छूटी ॥
बीरपनो तजि धूतबनो कुल छूत कपूत निलज्जता लूटी ।
गर्भखस्यो न बृथा जननी त्वहिं होतहि दीनि हलाहल घूंटी ॥

कहौ कुशलता पितु अपनेकी अब कहँ अहै रहै क्यहि भांति ।
बिहँसत अङ्गद अस बोले तब नहिं कछु कुशल तासु कहिजाति ॥
तुमहूँ दश दिन महँ ताके ढिग जैहौ अवशि निशाचरराय ।
मुलाकाति करि पुनि तासन तहँ पूछ्यो कुशल सखहि उरलाय ॥
द्विधा भेद है शठ जाके उर ताके हिय न बसत भगवान ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

प्रेमभाव सों प्रभु आवत ढिग भावत जाहि प्रेम पन्थान॥
हम कुलघालक सच भाषौ यह तुम कुलपाल प्रबल दशभाल।
अन्धौ बधिर न मुख भाषैं अस हैं तव बीस नैन श्रुतिआल॥
शिव ब्रह्मादिक सुर सबरे मुनि चाहत जासु चरण सेवकाय।
तासु दूत ह्वै कुलघालक हम ऐसेउ मति न फाटि हियजाय॥
कठिन बिभाषण सुनि अङ्गदको नैन तनेनि कहत दशमाथ।
सहौं कठिन बच खल तेरे मैं जानत नीति धर्म की बात॥

स०। जानत हौं नृपनीति की रीति अहै उरधर्म प्रतीति घनेरी।
मानत बन्दि सुग्रन्थन को मत है रत शुद्धि पथै मति मेरी॥
आनत हौं न अज्ञान मनैं कछु ताते सहौं खल बानि करेरी।
नातरु काटि मुखै असिना रखत्यों असना रसना शठ तेरी॥

लङ्कापति की सुनि बानी इमि भाष्यो फेरि बीर युवराज।
धर्मशीलता सुनि पाई तुव परतिय हरब सदा यह काज॥
लखि रखवारी निज दूतन की दीन उजारि बाग हनुमान।
डूबिमरयोना तुम निलज्जअस अब लगि जियत बेहयाप्रान॥
नाक कान बिन लखि बहिनीको धर्म बिचारि क्षमा तुम कीन।
धर्मशीलता जग छाई तुव हम बड़भाग दरश करि लीन॥
सहित सयानी कपिबानी सुनि रिसहा भयो निशाचरराय।
डाटि अङ्गदै पुनि बोल्यो अस शठ कह बकै बृथा मुखलाय॥
काज सरै ना कछु बकबक ते बन्दर खल बिलोकु मम बाहु।
लोकपाल बल बिपुल चन्द्र सम ताके ग्रसनहेत जिमि राहु॥
इन कर कमलन पर मराल सम शंकर शिवा सहित कैलास।
बार पचासक अनयासक शठ मैं आनन्द सहित दियबास॥
भाषौ अङ्गद तुव सैना महँ मोसन भिरै कौन बलधाम।
तिय बियोग ते सदा शोगयुत निर्बल म्वहिं बुझात बहुराम॥
तिनके दुखते दुखी लक्ष्मणौ अतिव मलीन लीन मैं जानि।
नदी किनारे के बिरवा सम तुम सुग्रीव परत अनुमानि॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

भाय हमारो है कादर अति रण को नाम सुने भयखाय ।
भल्लुकपति सोहै बुढ़वा अति काहेक लरी समर महँ आय ॥
ईंटा जोरन को जानत ढँग द्वउ नल नील रचा जिन सेतु ।
एक बिक्रमी है बन्दर तहँ निश्चय पस्यो जानि अस हेतु ॥
प्रथम आयकै पुर जारा ज्यहिं मारा अक्षय उजारा बाग ।
सुनि इमिबानी अभिमानी की अङ्गद फेरि कहन अस लाग ॥
का सति भाषत यह निश्चरपति की यह मृषा करत परिहास ।
लघु कपि जारै पुर रावण को सुनि अस कौन करै बिश्वास ॥

षट्पद ।

ज्यहिं कपि किय पुरदाह अवर कानन कृतभञ्जन ।
गिरि दरि असुरन भरी अक्षसुत कीन्हों गञ्जन ॥
तुम जानत हौ ताहि कछू करि है वह बिनती ।
पै हमरे यहि कटक बीच ताकी नहिं गिनती ॥
वह दूरदूर धावन बिषे बिदित बड़ो मजबूत है ।
संदेश इतै उत भेजिबे लावन कारण दूत है ॥

चलै बहुत सो कछु योधा नहिं पठवा खबरि लेन हम ताहि ।
ऐसे बीरन की गन्ती कछु हमरी सैन माहिं है नाहिं ॥
अब हम जाना पुर जास्यो कपि प्रभु आदेश दिये बिनभाय ।
गयो न फिरि तुम लग सुकण्ठ के रह्यो लुकाय तासु भयखाय ॥
हमें न रिस कछु सुनि बानी तुव भाषत सांच बचन दशमाथ ।
हमरी सैना महँ कोउ न अस शोभा लहै लरे तुव साथ ॥
प्रीति शत्रुता बरबरिहा सँग करिबो चही नीति अस आहि ।
सिंह सँहारै जो मेढ़ा को जग महँ भला कहै को ताहि ॥
यद्यपि लघुता रघुनायक कहँ मारे तुम्हैं होत बड़ दोष ।
तद्यपि नीके तैं जानत शठ कठिनो क्षात्रि जाति कर रोष ॥
बिहँसि दशानन तब भाष्यो अस बड़गुण एक बानरन माहिं ।
जो प्रतिपालत है ताके हित करत उपाय लजत कछु नाहिं ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

धन्य कीश जो निज स्वामीहित जहँ तहँ नचैं लाज बिसराय।
सबकहँ खुश करि नाचि कूदिकै पति हित करैं अमित चतुराय॥
स्वामिभक्त अति जाति तुम्हारी अङ्गद कहत सत्य हम बात।
कहौं न कसअस गुणस्वामी के यह गुणबड़ तुम्हार बिख्यात॥
मैं गुण गाहँक हौं चातुर अति तव कटुबचन करौं नहिंकान।
सुनि अस बानी दशआननकी अङ्गद बिहँसि लाग बतलान॥
दशशिर तुव गुण गाहँकता सब हमसे प्रगट कही हनुमान।
बन उजारि सुत बधि जास्योपुर तद्यपि त्यहिं न कीन अपमान॥
सोई सुन्दर लखि सुभाव तुव मैं धृष्टता कीनि दशभाल।
आय बिलोक्यों कपिभाष्यो जो तुम्हरे कछु न लाज रिसख्याल॥
टेढ़ि उक्तिसो धनु बाणी शर रावण हृदय दह्यो रिपु कीश।
प्रतिउत्तर सो जनु सँगसी सम काढ़त खैंचि २ दशशीश॥
भयेते ऐसिय मति खाये पितु रे कपि मूढ़ महा अज्ञान।
भाषि तर्कणा युत बाणी अस बिहँसा लङ्कनाथ बलवान॥
उत्तर दीन्ह्यों तब अङ्गद अस रे मलराशि नीच निशिचारि।
पितहि खायकै अब खात्यों त्वहिं हिय कछु शोचिरह्यों चुप मारि॥
बालि सुकीरतिको भँड़वा लखि हतौं न तोहिं नीच अभिमानि।
केतरे रावण जग मोसन कहु मैं यत सुने कहत अनुमानि॥
बलि जीतन हित यक पतालगो राखा बांधि बालकन ताहि।
खेलहिं बालक हति लातन त्यहि गातन हनैं चपेटन चाहि॥
बलि छुँड़वायो करि दाया त्यहि ताको सुयश सुन्यो इमि कान।
फिरि इक देखा सहसबाहुने पकड़्यो जीव जंगली जान॥
घरै लयायो त्यहि कौतुक हित बहुबिधि भयो तासु उपहास।
जाय छँड़ायो त्यहि पुलस्त्य मुनि है यह जक्त माहिं परकास॥
एक कहत म्वहिं सकुच लगत है जो दबि रह्यो बालि की कांख।
कौन सो रावण तू इतनेन महँ मोसन सत्य कहसि तजि माख॥
सुनु शठ रावण बलशाली स्वइ भुजबल जासु शंभुगिरि जान।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जासु बीरता शिव जानत भल दीन्हों जाहि शीशको दान ॥
शिर सरोज निजकर उतारिकै पूज्यों अमितबार त्रिपुरारि ।
दिक्पति जानत बल बाहुनको जिन उर अजहुँ होत दुखभारि ॥
हृदय कठिनता दिग्गज जानत जब जब भिर्यो जाय बरिआय ।
जिनके दांत न फूट बज्र ते सो उर लगे टूटिगे भाय ॥
जासु चलत महँ धरा हलत इमि गजके चढ़े यथा लघुनाव ।
बीर सो रावण जग जाहिर है ओज अथाह सुयश दरियाव ॥
सुने न कानन शठ ताको यश बक बक बृथा करत बेकार ।
लघु करि भाषत त्यहि रावण कहँ नर कर सुयश करत उच्चार ॥
बातैं रावण की सुनिकै इमि बोले बालिसुवन रिसिआय ।
सुनु शठ परिहरि हठबानी मम क्यों न सँभारि अधम बतलाय ॥
सहसबाहु भुज घन जङ्गल सम दहन अनल सम जासु कुठार ।
तीक्ष्ण धार ज्यहि परशुसिन्धु महँ बूड़े नृप अनेक बहुबार ॥
प्रबल गर्ब तिन परशुराम को रामहिं लखत गयो सब भागि ।
सो नर कैसे रे निश्चर खल बोलत हया शरम सब त्यागि ॥
भाषत मानुष शठ रामहिं कस करि अज्ञानपने की बात ।
काम कि गणना धनुधारिन महँ सुरआपगा नदी क्यहि भांति ॥
कामधेनु को पशु भाषै को द्रुम सम कल्पवृक्ष किमि होय ।
अन्नदान नहिं अरु दानन सम शठ अमृतहि कहत रस कोय ॥
गरुड़ कि गणना कहुँ पक्षिन महँ को कहि सकै शेश को साँप ।
चिन्तामणि है कस पत्थर महँ जाकर जगत बिदित परताप ॥
लाभकि दूसर हरिभक्ती सम हरिपुर अन्य लोक सम नाहिं ।
तैसे रघुपति नहिं मानुष सम रे खल समुझु शोचु मनमाहिं ॥
मान मथन करि सब सेना सह बाग उजारि लङ्कपुरजारि ।
सो हनुमंता कपि कैसे शठ गयो जो तुव कुमार को मारि ॥
छोंडु चतुरता सुनु रावण खल भजसि न कृपासिन्धु श्रीराम ।
राखि सकैं ना त्यहि शंकर अज जो खल भयो राम ते वाम ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

गाल बजावसि जनि मिथ्या खल होइहै राम बैर असहाल।
लगे राम शर शिर तेरे कटि परिहैं धरणि माहिं दशभाल॥
गेंद सरिस सो शिर तेरे खल खेलिहैं भालु कीश चौगान।
टूक टूक ह्वै शिर फुटिहैं सब देखब तब तुम्हार अभिमान॥
रणमहँ कोपहिं रघुनायक जब छुटिहैं अति कराल शरजाल।
गाल बजावबु तब भुलिहै यह नतु प्रभु भजौ तजौ यह ख्याल॥
सुनि असबानी भट अङ्गद की रावण हृदै गई रिसछाय।
बरत महानल जनु डारो घृत उठै कराल ज्वाल धुधुआय॥

षट्पद।

कुम्भकरण मम भ्रात अखिल अरिकुलसंहारक।
कालरूप बिकराल कलेवर भवभयहारक॥
मेघनाद ममपुत्र पुरन्दर बन्धन कर्ता।
चन्द्रहास मम खड्ग सकल शत्रुन संहर्ता॥
ममहैं सहायनिश्चरनिकरत्रिभुवनविजयीशत्रुसुर।
रावणलसन्त अभिधानमम राजतराजालङ्कपुर॥

जोरि सहायक शठ बँदरन कहँ बाँध्यो सिन्धु सेतु गिरिढोय।
कौन बीरता महँ गणना यह यासे बीर कहै नहिं कोय॥
सिन्धु अनेकन खग नाँघत हैं सो नहिं शूर होहिं शठ कीश।
जल बल पूरित भुज सागर मम बूड़े जहँ अनेक अवनीश॥
बीस बारिनिधि अति अगाध सो को अस बीर जो पावै पार।
नीर भरायों दिगपालन ते जिनको सबै कहत बरियार॥
ऐस प्रतापी के आगे शठ नरयश कहत बारही बार।
कौन बीरता तुव स्वामी महँ भगि हैं समर सुने ललकार॥
समरबाँकुरे यदि स्वामी तुव पुनि २ कहत जासु गुणगाथ।
तौ चर पठवा क्यहिकारण इत रिपुसन प्रीतिकरत न लजात॥
हरगिरि मन्थन मम बाहुनलखि पुनि शठ स्वामि सराहतजात।
यह नहिं जानत बल रावण को दशहू दिशा माहिं बिख्यात॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कौन बहादुर है रावण सम ज्यहिं निजहाथ काटि निजमाथ ।
हुते अनल महँ अमित बार मैं हर्षित शाखि गौरि के नाथ ॥
जरत बिलोक्यों मैं कपालदिशि बिधिके लिखे अङ्क निजभाल ।
बाँचि आपनो बध मानुष कर हँस्यों ठठाय झूठ करि ख्याल ॥
भई न भय कछु मन समुझत सो बिधिकी बुद्धि गई सठिआय ।
बात न सांची बिधि बुढ़वा की यह मैं जानिलीन सतिभाय ॥
को भट दूसर मम आगे शठ पुनि २ कहसि लाज परित्यागि ।
मोरि बीरता जगजाहिर खल रह्यो प्रताप दशौंदिशि जागि ॥
निश्चरपति को सुनि भाषण इमि पुनि युवराज कह्यो मुसकाय ।
सत्य कहतहौ तुम लङ्कापति यामहँ कछु न झूठ दरशाय ॥
सलज न दूसर तुव समान जग कतौं न सुना आजुलगि कान ।
हौ स्वाभाविक लाजवन्त तुम निजगुण निजमुख करत बखान ॥
शिर गिरि गाथा चित तेरेपर हरदम चढ़ो रहत हरयाम ।
बीसबार लगि कहि भाषी सो यहि ते बड़ो बनत बलधाम ॥
जीतनगे हत्यो सहसबाहु बलि बालिहि जबै निशाचरराय ।
तब यह भुजबल उरराख्यो धरि काहेन किह्यो तहाँ मनुसाय ॥
सुनु रे मूरुख तन सबियाँ अरु काटे शीश होत नहिं बीर ।
बाजीगर को भट भाषत नहिं निजकर काटैं सकल शरीर ॥
धाय धाय कै यदपि मोहबश पाँखी जरैं अग्नि महँ जाय ।
बोझा ढोवत हैं गदहा बहु ते नहिं बीर कहावत भाय ॥
बतबढ़ावकरु जनि मूरुख अब सुनु ममबचन त्यागि अभिमान ।
मैं न बसीठी को आयों इत पठयो अस बिचारि भगवान ॥
बार बार इमि कहि भाष्यो प्रभु हने सियार हरिहि यश नाहिं ।
समुझि बचन सो प्रभु अपने के तुव दुर्बचन सह्यों उरमाहिं ॥
नातरु करिकै मुख भञ्जन तुव लै बरजोर जात सियमाय ।
नीच तिहारो बल जान्यों मैं परतिय हरे सून थल पाय ॥
गर्ब तिहारे उर याही शठ की मैं अहौं निशाचरराय ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

महूं दूत हौं रघुनायक को कीरति जासु रही जग छाय ॥
प्रभु अपमानहिं जो डराउँ नहिं देखत तोहिं करौं असख्याल।
तोहिं पटकि महि हनि सेना सब चौपट करौं लङ्क दशभाल ॥
बिनि २ मारौं सब राकस खल एक न बचै हते बिन प्रान।
सह मन्दोदरि सियरानी को लै बरजोर जाउँ युतमान ॥
करौं जो ऐसौ यहि औसर पर तऊ न कछुक बड़ाई मोरि।
मृतकहि मारे मनुसाई का यह गुनि तजत तोरि सब खोरि ॥
सूम नपुंसक शठ बिषयाबश बूढ़ कलङ्क सहित अति दीन।
सदा रोगबश अरु क्रोधीबड़ श्रुतिमत सन्त अहित मतिहीन ॥
पापी निन्दक तनपोषक निज रघुपति बिमुख अहैं जन जौन।
चौदह प्रानी ये मुर्दा सम जियतौ जानु कुमति के भौन ॥
असबिचारि खलत्वहिंमारत नहिं अबजनिमोहिंक्रोधउपजाउ।
सुनि कपिबानी मन कोपित ह्वै बोल्यो फेरि निशाचरराउ ॥
मरन चहत है खल बानर अब लघुमुख कहत बड़ीसी बात।
जड़ कपि जल्पसि कटु जाके बल बुधि बल तेज न ताके गात ॥
अगुण अमानी त्यहि चिन्तन करि राज छँड़ाय दीन बन बाप।
इकतौ यह दुख तियाबियोग पुनि ममभयसहत रातिदिन ताप ॥
जाके बल को गर्ब तोहिं खल ऐसे नर अनेक जग आहिं।
खाहिं निशाचर भट रातिउदिन तजुहठ मूढ़ समुझिमनमाहिं ॥
जब इमि रावण ने रघुपति की निन्दा करी बहुत खगराय।
तब उर क्रोधित भा अङ्गद भट ओंठ चबाय दन्त कटकाय ॥
जे जन निन्दा हरि शंकर की कबहूं सुनैं आपने कान।
त्यहि अघ लागै गउ मारे को भाषत सत्य २ मतिमान ॥
काटै रसना त्यहि निन्दक की जोपै चलै आपनो दाउँ।
नतु तजि देवै त्यहि अस्थल को कबहुं न लेय तहां को नाउँ ॥
कटकटाय कै कपिकुञ्जर तब क्रोध अपार हृदय उपजाय।
हनी धरापर भुज दण्डै दोउ तब कर हाल सुनो खगराय ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

थर २ बसुधा कांपन लागी सबके हृदय गयो भय छाय ।
गिरे सभासद सब औंधे ह्वै कायर भगे प्राण लै भाय ॥
गिरत दशानन सिंहासन ते उठा सँभारि क्रोध उर धारि ।
शङ्क समानी अभिमानी के भूतल परे मुकुट षट चारि ॥
कछु तौ माथेपर लीन्हें धरि कछुलै फेंकि दीन युवराज ।
सो उड़ि आये इत सैना महँ जहँ पर अवधराज बिरराज ॥
मुकुटन आवत लखि भागे कपि दिनहीं लूक परन बिधिलाग ।
रिस करिफेंके की रावण शठ आवत कुलिश चारि अतिभाग ॥
तब हँसि भाष्यो रघुनन्दन प्रभु बीरहु हृदय शङ्क जनि खाहु ।
लूक न इन कहँ तुम मानौ मन ना ये बज्र केतु नहिं राहु ॥
ये किरीट हैं दशआनन के फेंके बालितनय बलवान ।
सो द्युति छावत इत आवत हैं मानहुँ सत्य बचन परमान ॥
कूदि तड़ाका तब मारुतसुत कर गहि आनि धरे प्रभु पास ।
कौतुक देखैं कपि भल्लुक सब दिनकर सरिस शुभ्र परकास ॥
इहां हकीकति अस बीतति भै उत अब सुनौ सभा को हाल ।
मुकुट गिरेते उर क्रोधितह्वै बोल्यो गर्जि तर्जि दशभाल ॥
भागि न जावै खल बन्दर यह मारौ पकरि याहि ततकाल ।
दर न लावहु भट धावहु सब जावहु समुद पार अब हाल ॥
खोजि २ कै कपि भल्लुक सब खाहु अघाहु मोद उपजाय ।
करिकै बसुधा बिन बन्दर की जीवत धरौ तपी द्वउ भाय ॥
लङ्कापति की सुनि बानी इमि बोल्यो बालितनय रिसिआय ।
बकत बृथाही शठ निशचर कह मैं लखि लीन तोरि मनुसाय ॥

स० । गालबजावत आवत लाज न रे खलराज बृथा बकठानै ।
देखि लियो मनुसाय सबै शठ बाय भरो न तजै अभिमानै ॥
जायकै सागर डूबि मरै किन सन्मुख बात करै मनआनै ।
नाशनहार निशाचरवृन्द तिन्हैं मतिमन्द तपी जनि जानै ॥

रे कुलघाती उतपाती खल मरु गल काटि निलज तियचोर ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

फटत न छाती बल देखत अस रे मलराशि नीच कुलबोर ॥
सन्निपात बश कटु जल्पसि अस चाहत परो कालके गाल।
पैहै आगे फल याको अब हनिहैं जब चपेट कपि भालु ॥
रामहिं मानुष कहि भाषत शठ कटिनागिरै जीभ शिर साहिं।
गिरिहैं रसना नहिं संशय कछु शिरन समेत समर महि माहिं ॥
रे दशकन्धर सो मानुष कस ज्यहिं संहर्‍यो बालि इकबान।
बीसहु लोचन ते आंधर भो धिक तव जन्म मूढ़ हतज्ञान ॥
तेरे शोणित के प्यासे हैं श्रीरघुनाथ हाथ के बान।
यही भरोसा ते छाँड़त त्वहिं नतु क्षण माहिं करत बेप्रान ॥
तोरे दांतन के तोरन हित है मम भुजन माहिं बल बेश।
काह करौं कछु बनि आवत नहिं आयसु जो न दीन अवधेश ॥
नातरु रिसतौ अस लागतहै करि चकचूर कूर दशभाल।
लङ्का बोरौं गहि बारिधि महँ देखौं कौन करत प्रतिपाल ॥
खल तुव लङ्का फल गूलर सम बसैं अशङ्क जन्तु निशिचारि।
मैं कपि देर न फल खावे महँ आयसु पै न दीन धनुधारि ॥
बालिसुवन की सुनि युक्ती अस बोल्यो बीसनयन मुसकाय।
मूढ़ झुठाई अस सीखे कहँ बक्कत बृथा नहीं शरमाय ॥
बाप तिहारे भट बाली ने कबहुँ न ऐस बजाये गाल।
भये तपस्विन मिलि झूँठातैं मोकहँ बिदित भयो अब हाल ॥
क्रोधित ह्वैकै कपि बोल्यो तब सुनि इमि यातुधान की बात।
सांचहु झूठा शठ निश्चर मैं जो भुज बीस कीन नहिं घात ॥
कहि अस बानी बलखानी कपि रामप्रताप सुमिरि उरमाहिं।
प्रणकरि रोंपा पद संसदि महँ शङ्का जाहि काल की नाहिं ॥
पाउँ हमारो जो टारै अब कौनौ यातुधान बलवान।
जनक दुलारी मैं हारी हठि थल फिरि जाहिं राम भगवान ॥
तारासुत की सुनि भाषण इमि कह दशमाथ गर्व के साथ।
देर न आनौ बलवानौ अब मानौ सही कही मम बात ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

पाउँ पकरि कै यहि बन्दर कहँ महि महँ पटकि करौं बिन प्रान।
सुनि अस बानी अभिमानी की अँकड़े बड़े २ बलवान॥
मेघनाद से बलयोधा सब अङ्गद निकट गये नियराय।
बल करि झपटैं पग लपटैं बहु करैं उपाय अनेकन भाय॥
टरै न कपिको पग कौनिउँ बिधि गे सब हारि ह्वै ते ज्वान।
करि शिर नीचे को बैठे सब डूबे लाजसिन्धु हरियान॥
पुनि उठि झपटैं अरु डपटैं पै टरै न कीश चरण यहि भाँति।
यथा मोहतरु को बिषयी नर सक न उखारि उरग आराति॥
भूमि न छाँड़त पग बानर को देखत रिपु मद गयो पराय।
बिघन करोड़िन के आयहुपर तजत न नीति सन्त जस भाय॥
कपि बल देखत हियहारे सब सारे यातुधान बलवान।
उठा आपुही दशकन्धर तब कपि दिशि चल्यो हाँकि हरियान॥
पाउँ गहत अस कह अङ्गद भट मम पद गहे न तोर उबार।
जो जीवन चहु रामचरण गहु शरणहिं जाय सहित सुतदार॥
तारासुत को सुनि भाषण अस तुरतै लौटि पस्यो शरमाय।
भयो तेजहत श्रीनाशी सब जिमि दोपहर समय निशिराय॥
बैठ जायकै सिंहासनपर महामलीन दीन शिरनाय।
मनहुँ गँवाई निज संपति सब दशा सो कहि न जाय मुनिराय॥
दीन दयाकर रघुनन्दन प्रभु जगदाधार विश्वभर्तार।
तासु विमुख ह्वै सुखपावै किमि जो चर अचर केर सरदार॥
भौहँ बिगारत ज्यहि स्वामी के उपजै विश्व होय पुनि नाश।
बज्र बनावै जो तिनुका को बज्रहि करै तिनूका भास॥
तासु दूतको प्रण प्यारी कहु कैसे टरै जानि नहिंजाय।
पुनि कपि बहुबिधि समुझायो कहि मानत नहीं निशाचरराय॥
मान भञ्जिकै रिपु रावण को प्रभु अपने को सुयश सुनाय।
चले तहां ते पुनि तारासुत यहि बिधि ओज आपनो गाय॥
अबहिं बड़ाई कहि भाषौं कह हतिहौं तोहिं खेलाय रणमाहिं।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बूझि परैगो तब तोकहँ उर यहि क्षन करत बनत कछु नाहिं ॥
पहिले ताको सुत मार्‍यो कपि सो सुनि हृदय उठ्यो अकुलाय।
अङ्गद बल लखि सब निशचर गण महा सशङ्क भये खगराय ॥
यहिबिधि रिपुको बल चूरन करि पूरन बली बीर युवराज।
आय पहूंचो भट सागर तट जहँ पर अवधराज बिरराज ॥
करि पद बन्दन रघुनन्दन के सबसन मिल्यो मोद उपजाय।
इतै हकीकति असबीतति भै उतकर हाल सुनौ मनलाय ॥
सांझ जानिकै दशआनन तब मन्दिर गयो हृदय बिलखाय।
पुनि मन्दोदरि बहुप्रकारसों भाषन लगी ताहि समुझाय ॥
तजौ कुमति यह पति समुझौ मन सोह न राम तुमहिं संग्राम ॥
तिनते लरिकै बरिऐहौ किमि जिनके दूतन के असकाम।
खींची लक्ष्मण धनुरेखा सो सक्यो न नाँघि रह्यो भयखाय॥
फिरि क्यहि बल पर तिन बीरनते चाहत करन युद्ध मनुसाय ॥
नाँघि समुन्दर कौतुकही कपि पवनकुमार लङ्क महँ आय।
अछत तुम्हारे अमराई हति मार्‍यसि अछयकुमारहि हाय ॥
पुरी जरायसि चौगिर्दाते हाजिर रहे सकल बलवान।
चलो न बिक्रम कछु काहूको तब यह कहाँ रह्यो अभिमान ॥
गाल न मारहु अब झूठै पति इतना कहा मानिल्यो म्वार।
मनुज न जानौ रघुनन्दनको जो सब विश्व केर कर्तार ॥
कहा न मान्यो मारीचहु को जानत जौन बाण परताप।
एकहि शरते समुद पारभो यह तौ हृदय बिचारौ आप ॥
जनक सभा महँ नृप बटुरे बहु तुमहूं रह्यो तहांपर नाथ।
देखत सबके शिवशंकर को तोर्‍यो धनुष नाथ रघुनाथ ॥
गर्ब गिरायो भृगुनन्दन को कीन्हों जनक सुता को ब्याह।
काहे न तिन कहँ तब जीत्यो तहँ यह बल कहां रहा तब नाह ॥
जान्यो जिनको बल सुरपति सुत राखा जियत आँखि यकफोरि।
शूर्पनखा की गति देख्यो तुम तबहुँ न हया हटत हिय तोरि ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बधि बिराध अरु खरदूषणको हन्यो कबन्ध बालि इकबान।
मानुष मानत त्यहि ईश्वरको पति तुव कहाँ गयो बुधिज्ञान॥
सिन्धु बँधायो ज्यहिं हेला करि उतरे पार सैन लै साथ।
शैल सुबेला पर आश्रम करि निवसे सदल राम रघुनाथ॥
रविकुल भूषण नयनागर प्रभु तुवहित हेत पठायो चार।
सभामध्य त्यहिं बल भञ्ज्यो तव करि दल मध्य यथा हरिबार॥
अङ्गद हनुमत सम जाके चर रण बाँकुरे बीर बलवान।
त्यहिकहँ पुनिपुनि नरभाषौ पिय मिथ्या हृदय मानि अभिमान॥
बिना बिचारे पिय रघुपति ते अनहक बैर लिह्यो उपजाय।
काल बिवश कछु मन समुझौना भावी प्रबल जानि नहिं जाय॥
कालदण्ड गहि केहु मारत नहिं हरै बिचार बुद्धि बल धर्म।
मौत जासु ढिग चलि आवत है तुम्हरिहि नायँ होत त्यहि भर्म॥
बाग उजाऱ्यो पुरजाऱ्यो अरु माऱ्यो उभय सुवन शक नाहिं।
अबहुँ जानकी दै जगपति कहँ पति सुख सुयश लेहु जगमाहिं॥
बचन मँदोदरि के रावण उर लागे बाण सरिस खगराय।
होत सबेरा गो संसदि महँ आसन बैठ गर्ब्ब उरछाय॥
उतै हकीकति असि बीतति भै इतकर हाल सुनौ मनलाय।
राम बोलायो तब अङ्गद कहँ पूँछन लगे हाल मुसकाय॥
जाय बालिसुत उत लङ्का महँ तुमका चरित लख्यो दृगलाय।
भई बतकही कह रावण ते सो तुम हमैं सुनावहु गाय॥
सुनि इमि बानी धनुपानी की बोल्यो बालिसुवन शिरनाय।
प्रभु आयसु लै उत लङ्का महँ जब मैं गयों राम रघुराय॥
पुर बिच रचना अवलोक्यों अस ज्यहि सम इन्द्रलोक है नाहिं।
काह बतावों मैं स्वामी ते शोभा जैसि लङ्कपुर माहिं॥
छहरदिवारी चौगिर्दा ते जगमग होत सूबरण केरि।
किला खिलाअति नभचूमैजनु चख चकचौंधिजात त्यहिहेरि॥
खिंचीं पियारी चित्रसारी जनु बिरची मदन आपने हाथ।
CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

हाट बाट चौहाट घाट सर बिस्तृत बने सोहावन नाथ॥
बाग बाटिका बन उपबन बर फूले फले भले छबिछाय।
साज अनूपम ऋतुनायक कर निरखतजात चित्त ललचाय॥
धवल धाम अभिराम उच्च अति चूमत मनौ लपकि आकास।
रङ्ग रङ्गके तिन ऊपर बर फहरत ध्वजा पताका खास॥
रति मद दमनी कल रमनी तहँ बिहरत भुण्ड २ भगवान।
नरी किन्नरी अमरपरी बर त्यागत जिन्हैं देखि अभिमान॥
लसैं अदूषण अँग भूषणबर जगमग ज्योति होति परकास।
रेशमसारी जरतारी शुचि सोहत सुभग दामिनी भास॥
कछुक दूरिचलिअवलोक्यों पुनि बने विशाल बाजि गजशाल।
राजि २ गज बाजि बंधे तहँ ऊँचे मेरु शृङ्ग सम आल॥
बने अगार द्वार सचिवन के जिनकी छटा बरणि नहिं जाय।
रचे अखारे अति प्यारे बर तहँ पर लरत मल्ल समुदाय॥
अस शुभ शोभा लखत लङ्क की गयों अशङ्क शत्रु दर्बार।
अगणित निश्चर तहँ राजत प्रभु इकते एक शूर सर्दार॥
स्वर्ण सिंहासन पर आसन किये सोहत तहां निशाचर नाथ।
जाकी शङ्का ते शङ्कित सब दिशिपति आय नवावत माथ॥
भई बतकही बहु आपुस महँ मैं बहु सीख कही समुझाय।
एक न मानी अभिमानी शठ वाको लगी काल की बाय॥
बालिसुवन को सुनि भाषणइमि हँसि असकह्यो रामभगवान।
यातुधान पति भट रावण वह जाको बल प्रताप जग जान॥
मुकुट मनोहर त्यहि माथे के तुम क्यहि भाँति चलाये चारि।
क्यहि बिधि पायो सुत भाषो सो मोकहँ होत आचरज भारि॥
कह्यो बालिसुत सुनु दायानिधि मुकुट न होयँ भूप गुण चारि।
साम दाम अरु दण्ड भेद ये नृपउर बसत कहत श्रुति झारि॥
नीति धर्म के पद चारिहु ये आये प्रभू पास अस जानि।
काल बिबशभो शठरावण अब सूझत जाहि लाभ अरु हानि॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

नाथ बिरोधी धर्महीन खल अति मलराशि दुष्ट दशमाथ।
त्यहि हित ताको तजि आयेगुण सुनिये सत्य बचन रघुनाथ॥
परम चतुरता सुनि काननसों बिहँसे रामचन्द्र भगवान।
औरौ लङ्का को कौतुक पुनि भाष्यो बालिसुवन बलवान॥

इति श्रीभार्गववंशावतंसश्रीमन्मुंशीनवलकिशोरात्मजस्यश्रीमुंशी प्रयागनारायणस्याज्ञाभिगामीउन्नामप्रदेशान्तर्गतमसवासीग्राम-निवासीपण्डितबन्दीदीनदीक्षितनिर्मितश्रीविजयराघवखण्डे लङ्काकाण्डेअङ्गदरावणसम्बादवर्णनोनामतृतीयोल्लासः॥३॥

गिरिजानन्दन पद बन्दनकरि श्रीरघुनन्दन चरण मनाय।
कथा अगारी की प्यारी अब बरणौं यथा बुद्धि ब्यवसाय॥
पाय शत्रु के समाचार सब मन्त्रिन ढिग बुलाय रघुराय।
कीनि मन्त्रणा तब सबहिनते करिये कहु उपाय अब भाय॥
चारि दुआरे बङ्क लङ्क के क्यहि बिधि नांघिय करहु बिचार।
सुनि इमि सम्मत शुचि स्वामी को शोचनलगे सकल सर्दार॥
बीर बिभीषण कपिनायक अरु मन्त्री जामवन्त मतिमान।
सुमिरि राम के पद पङ्कज उर सम्मत सुष्ठु कीन तिन ठान॥
चारि अनी करि कपिसैना की नायक नियत प्रबल कपि कीन।
बोलि यूथकन कहँ शिक्षा दै टुकरी बांटि यथावत दीन॥
चारि बीर गे पुर दक्षिण दिशि द्विविद मयन्द और नलनील।
कुमुद केशरी अरु तारासुत दधिमुख दिशि पछाहँ बलशील॥
पूरुब द्वारे पर गवाक्ष अरु पनस सुषेण बीर कपिराज।
उत्तर द्वारे पर भल्लुकपति औ हनुमान लषण रघुराज॥
प्रभु प्रताप कहि समुझाये सब सुनि कपि चले मारि किलकार।
सिंह गर्जना करि गर्जे तब करि करि प्रलयकार चिग्घार॥
प्रभुपद नावैं शिर हर्षितह्वै गहि गहि शिखर बृक्ष कर माहिं।
देर न लावैं त्वरधावैं सब शङ्का जिन्हैं कालकी नाहिं॥
जानत लङ्का अति दुर्गम तउ कोशलनाथ केर बल पाय।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

चले अशङ्का कपि बङ्का सब गजदल माहिं सिंह जसजाय ॥
घटाटोप करि चौगिर्दा ते चारिहु द्वार लङ्क के घेरि।
जय जय भाषैं रघुनायक की मुखहि निशान बजावैं भेरि ॥
भयो कोलाहल बहु लङ्का महँ पायो जानि हाल दशभाल।
सेन बुलाई निशिचारिन की गर्वित लाग बजावन गाल ॥
लखौ ढिठाई इन दुष्टनकी बब्बर जाति महा बदकार।
आय गरास्यो मम लङ्कापुर चाहत होन काल आहार ॥
जाहु चारिहू दिशि योधा सब धरि धरि खाहु कीश अरु भालु।
शङ्क न मानी इन दुष्टन कछु लायो इन्हैं घेरि कै कालु ॥
अट्टहासकरि शठ बोल्यो अस घर बैठे अहार बिधि दीन।
गर्ब दशाननको गिरिजा अस सोवत यथा उतान टिटीन ॥
उर अस ठानत अनुमानत सो यदि कहुँ गिरै फाटि आकास।
अपनेहिं पाँयन पर रोंकनहम तस दशमाथ दुष्ट को हास ॥
चले निशाचर लै आयसु तब तीखे अस्त्र शस्त्र गहि हाथ।
बीर महोदर अरु त्रिशिरालै गयो प्रहस्त पूर्ब दल साथ ॥
तीनि सुभट गे दिशि दक्षिण कहँ दुर्मुख कुमुख बीर मकराक्ष।
मेघनाद अतिकाय अनीये पश्चिम चले काढ़ि भटकाछ ॥
उत्तर द्वारे पर रावण शठ औरौ मुख्य मुख्य बलवान।
गर्जत धाये अस्त्र शस्त्र लै करिकै महाघोर घमसान ॥
गहे धनुष शर कर कोऊ भट कोऊ भिन्दिपाल असि ढाल।
तोमर मुदगर कर धारे कोउ भयकर गात मनहुँ खल काल ॥
शक्ति बिराजै कोहु हाथे महँ कोहु कर नागफांस बिधिपाश।
गहे कुल्हाड़ा अरु त्रिशूलकोउ उछलत चले हृदय जय आश ॥
चले असंख्यन भट या बिधि ते पावस मेघन की अनुहारि।
करत दोहाई दशकन्धर की गर्जत उच्च स्वरन हहकारि ॥
लाले पत्थर के टुकड़ा लखि आमिष जानि यथा खग जाल।
शोच न लावैं उठि धावैं खल करत न चोंच भङ्ग दुख ख्याल ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

त्यहि प्रकारते निशिचारी सब कपि दल ओर चले हहकारि ।
नाश न आपन मन जानत खल भावी कठिन होत उरगारि ॥
नाना आयुध धरि हाथे महँ अगणित यातुधान बलबीर ।
चढ़े किला के कंगूरन पर मानहुँ मेरु शृङ्ग घन भीर ॥
मारू बाजा बाजन लागे दुन्दुभि शंख घण्ट करनाल ।
झांझ पखावज अरु तुरही बर मोहरि रुद्र बीन करताल ॥
ढोल नफ़ीरी डफ ढक्का अरु स्वर बाँसुरी केर रहे छाय ।
बजैं हजारन अरु बाजा बहु तिन के नाम कहै को गाय ॥
रण तजि कायर भागन लागे शूरन हृदय भई उतसाह ।
इतै बँदरवा उत निश्चर गण जयजयकार करत खगनाह ॥
अति बिशाल तन कपि भल्लुक सब धावैं गनैं न औघटघाट ।
फोरि फोरिकै अति दीरघ गिरि क्षण महँ करैं सुहावनि बाट ॥
रिसबश गर्जैं अरु तर्जैं बहु दशनन डारैं ओंठ चबाय ।
कटकटाय कै भट कोटिन कपि धावैं हृदय सुमिरि रघुराय ॥
शिखर पर्वतन के करमा लै राकस देहिं उपरते डारि ।
कूदि बँदरवा कर गहिकै सो मारैं ताकि ताकि निशिचारि ॥
पाउँ पकरिकै निशिचारिन कहँ लेहिं घसीटि कीश बरियार ।
मीजैं धरती महँ आछी बिधि भागैं फेरि मारि किलकार ॥
अतिशै चञ्चल बलवन्ता कपि प्रबल प्रताप रामके दास ।
मारि कुदक्का गढ़ऊपर चढ़ि अगणित यातुधान किये नास ॥
चढ़े अटनपर कपि भल्लुक तब जहँ तहँ करत राम गुणगान ।
शङ्क न आनत कछु हिरदै महँ अतिशै बङ्क बयस के ज्वान ॥
इक इक निश्चर गहि इक इक कपि गढ़ ऊपरते चले पराय ।
अपना ऊपर तर निश्चर करि महिमहँ गिरैं आय भहराय ॥
यहि बिधि निश्चर संहारे बहु बँदरन मर्दि गर्दि हरियान ।
भागी सैना तब रावण की प्राण निदान काल अनुमान ॥
प्रबल बयारी के डोले जस देर न लगै मेघ भगिजायँ ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तैसे भागे निशिचारी सब अड़े न क्यहू बीर के पायँ॥
ब्याप्यो पुरमहँ खलभल्ला बहु रोवैं दुखी बाल अरु नारि।
गारी दै दै दशकन्धर को बहु दुर्बचन कहैं सब भारि॥
आछी बिधिते सुख भोगत खल लङ्का करत अकण्टकराज।
मृत्यु हँकारी कुबिचारी ने मरै न परै दुष्ट पर गाज॥
भगो आपनो दल कानन सुनि उर रिसिआय निशाचरराय।
बानि करेरी कहिटेरी तब अति अभिमान हृदै महँ लाय॥
जो कोउ भाग्यो रणसन्मुख ते मैं सुनि लिह्यों आपने कान।
ताको मरिहौं मैं अपने कर इतना बचन करो परमान॥
नाना सुखकरि अरु सर्बसभखि सब दिन चैनकीनि सब कोय।
भगे आजही दुख आये पर कोउ न समर सामुहें होय॥
उग्रबचन सुनि लङ्कापति के हृदय डरान सकल बलवान।
लौटे तुरतै मन लज्जित ह्वै प्रान पयान लीन अनुमान॥
शत्रु सामुहें रण महँ जूझब शोभा यही बीर की आय।
अस बिचारि कै जिन बीरन ने दीन्ह्यों प्राण लोभ बिसराय॥
तीषे आयुध धरि हाथे में आये समर मध्य बलधाम।
भिरे हाँकदै इक एकन सों लाग्यो होन घोर संग्राम॥
पैने बानन तन बेधन करि कोऊ गदा चोट हनि भाय।
ब्याकुल कीन्हे कपि भल्लुक सब अगणित घाय दीन तनताय॥
परम भयातुर कपि भागे तब आगे यदपि जीति हैं फेरि।
कहाँ पवनसुत अरु अङ्गद कहँ कहँ नल नील कहैं सब टेरि॥
कहाँ द्विबिद अरु कपिनायक कहँ यहि क्षण कोउ न होत सहाय।
मारु कठिन है निशिचारिन की अबना अड़त समर महँ पायँ॥
निजदल बिचलत सुन्यो पवनसुत पश्चिम द्वार रहा बलवान।
करै लराई तहँ रावणसुत माच्यो महाघोर घमसान॥
हटै न मुर्चा क्यहु योधा का एकते एक शूर शिरताज।
जैसे हनुमत घननादहु तस कोउन आव लरन ते बाज॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मन रिसिआन्यो हनुमन्ता तब गर्ज्यो प्रलयकाल सम ज्वान।
चढ़ि भट बङ्का गढ़ लङ्कापर लीन्ह्यों हाथ मेरु यक तान॥
रावणसुत पर लैधायो सो करते तरकि चलायो भाय।
सहित सारथी रथ भञ्ज्यो त्यहि मार्‌यो लात घात रिसिआय॥
गिर्‌यो धड़ाका सो धरती पर मुर्छित पर्‌यो महा झँवराय।
सारथि दुसरे लखि ब्याकुल त्यहि रथधरि घरै दीन पहुँचाय॥
तौलों अङ्गद सुनि पायो यह गढ़पर गो अकेल हनुमान।
मारि कुदक्का चढ़ि आपहु तब पहुँच्यो तहाँ जाय बलवान॥
युद्ध बिरुद्धे द्वउ बन्दर भट राम प्रताप सुमिरि उरमाहिं।
गे चढ़ि रावण के मन्दिर पर अवध अधीश दोहाई खाहिं॥
भवनढहावहिं सब कलशनसह लखि भयभीत होहिं निशिचारि।
आये द्वउ कपि उतपाती ये छाती पीटि कहत इमि नारि॥
तिन्हैं डेरावैं कपिलीला करि रघुपति सुयश सुनावैं टेरि।
कञ्चनखम्भा गहि हाथे महँ लागे करन उपद्रव फेरि॥
निश्चर सैना महँ कूदे पुनि अङ्गद हनूमान द्वउ ज्वान।
भुजबल मर्दत महि असुरनगहि इकते एक अधिक बलवान॥
लात घातते परिहारैं केहु काहू हनै चपेटन मारि।
भज्यो न रामहिं सुखधामहिं सो फल यह लेहु दुष्ट कुबिचारि॥
इक के ऊपर इक मर्दै धरि तोरि मिरोरि चलावहिं मुण्ड।
रावण आगे ते पातित ह्वै फूटैं मनहुँ दही के कुण्ड॥
मुखिया बीरन के पायँन गहि फेंकैं प्रभू पास सहुलास।
तिन्हैं बिभीषण बतलावैं कहि प्रभु निजधाम देहिं अनयास॥
दुष्ट द्विजामिष के भोगी जे पापै करत जिन्हैं दिनजात।
ते गति पावत जो याँचतमुनि दाहत जौन योगमहँ गात॥
राम दयानिधि अति कोमल चित यह हियमाहिं करत अनुमान।
बैर भाव ते म्वहिं निश्चर ये सुमिरत हिये माहिं धरि ध्यान॥
देहिं परमगति असबिचारि उर को प्रभु सरिस दया को भौन।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

भजैं न भ्रमतजि जो ऐसो प्रभु तासम मन्दबुद्धि अरु कौन ॥
अङ्गद हनुमत गढ़ भीतर गे बारहिं बार कहैं असराम।
दुउकपि सोहैं इमिलङ्का महँ उपमा सुनौ तासु मतिधाम ॥
मथैं समुन्दर दुइ मन्दर जस सोहत तथा युगल बलवान।
लखैं तमाशा सब देउता गण कौतुक कहि न जाय हरियान ॥
भुजबल रिपुदल को मर्दन करि पुनि करि दिवस अन्त अनुमान।
कूदि तहाँ ते दुउ मर्कट भट आये जहाँ राम भगवान ॥
माथ नवाये प्रभु पायँन महँ अति आदर्यो दयानिधि राम।
कृपादृष्टिसों दुउ दिशि देख्यो भे श्रमरहित युगल बलधाम ॥
हनुमताङ्गदहि गये जानिकै लौटे भालु कीश भट भारि।
लहि प्रदोष बल निशिचारी सब धाये अस्त्र शस्त्र बहु धारि ॥
निश्चर सैना लखि लौटे कपि लै लै कुधरखण्ड तरु पानि।
दन्त कटकटा करि भिरिगे सब लागे लरन बीर बलखानि ॥
हारि न मानत कोउ कौनिउँ बिधि सब के मारु २ रट लागि।
प्राण आसरा तिन त्यागे तब लरत उछाहसहित भय त्यागि ॥
बीर निशाचर अति कारे सब भारे महा भयङ्कर गात।
नाना रङ्गन के बन्दर भट अद्भुत छटा बरणि नहिं जात ॥
दोऊ दलके बल योधा सम बिबिध प्रकार भिरत रिसिआय।
मनहुँ शरद अरु ऋतु पावस के मेघा लरत पवन बश धाय ॥
घात चपेटन अरु लातन की हनि हनि भालु कीश बरियार।
अगणित निश्चर संहारत अरु डारत मर्दि धरा की क्षार ॥
भागी सेना तब असुरन की मुर्चा छाँड़ि छाँड़ि हरियान।
अनी अकम्पन अतिकाया तब माया करन लाग निर्मान ॥
क्षणौ न बीत्यो रण बसुधा महँ छायो महा सघन अँधियार।
हाथ पसारा नहिं सूझत दृग बर्सत रुधिर उपल बहु क्षार ॥
कोऊ काहू को देखत नहिं मुख ते मारु मारु बर्रायँ।
रीछ बँदरवा अकुलाने तब निश्चर छली जीति नहिं जायँ ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मर्म जानि लिय रघुनायक यह बन्दर भालु सुभट अकुलान।
बालिसुवन अरु पवनपुत्र कहँ लीन बोलाय तुरत भगवान॥
कहि समुझायो समाचार सब धाये उभै कीश मृगराज।
झुण्ड बटेरन को देखत जिमि धावैं महा मुदित ह्वै बाज॥
चाप आपनो लै राघव पुनि कान प्रयंत तानि सविधान।
पावक शायक संधान्यो तब फर फर चल्यो प्रज्वलित बान॥
मिट्यो अँधेरा इक क्षनहीं महँ भान समान भयो परकाश।
ज्ञान उदय ते भ्रम भागै जिमि तिमि भो अन्धकार को नाश॥
देखि उजेरा कपि भल्लुक भट धाये कोपि बिगत श्रम त्रास।
कुधर खण्ड औ अति बिशाल तरु करमहँ तानि २ अनयास॥
अङ्गद हनुमत की हाँकै सुनि आवत देखि प्रबल बलवान।
भगे निशाचर तजि संगर महि लै लै दुष्ट आपने प्रान॥
भागत पटकैं भट धरणी गहि बरणी दशा जात सो नाहिं।
अद्भुत करणी कपि ठानत जो वहिक्षन उमा समर महि माहिं॥
पदगहि डारैं पुनि बारिधि महँ धरि २ खाहिं मकर झषब्याल।
मारु प्रबल लखि भट कीशन की भे सब यातुधान बेहाल॥
भागे गढ़ तन रन त्यागे कछु कछु महि परे खाय तन घाय।
जौन शूरमा सन्मुख जूझै त्यहि का इन्द्र परी लै जाय॥
गर्जे तर्जे तब भल्लुक कपि रिपुदल सकल दीन बिचलाय।
निशा जानिकै कपि चारिहु दल आये जहां राम रघुराय॥
दयादृष्टि सों अवलोक्यो प्रभु रणश्रम भयो तुरन्तहि दूरि।
निज निज अस्थल महँ आनँदयुत सोये सबै बीर सुख पूरि॥
इतै हकीकति अस बीतति भै उत को श्रवण करो अब हाल।
भगी जानिकै निज सैना को अतिशै क्रोध कीन दशभाल॥
बोलि तुरन्तै तब मन्त्रिन कहँ लाग्यो गर्ब सहित बतलान।
प्रथम सुनायसि समाचार कहि मारे गये जितक बलवान॥
कपिन सँहारा मम आधा दल यह कछु चरित जानि नाजाय।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

प्रबल काल सम ये योधा मम तिनकहँ हनत क्षुद्र कपि हाथ॥
यतन बतावहु अबयाकी कहि यावत इत प्रधान मतिमान।
सुनि दशआनन को भाषण इमि शोचनलगे सबै करिध्यान॥
बुढ़वा निश्चर मालवन्त इक नाना लगै दशानन क्यार।
बचन नीतियुत वह बोला तब सुनिये तात कहब कुछम्वार॥
जबते सीता हरिलायो तुम अशकुन अमित होत दिन राति।
जाको गावत यश पुराण श्रुति तासु बिरोध कुशल केहिभांति॥
बन्धुसहित हति कनकनैन कहँ मधुकैटभ समान बलवान।
मारयोज्यहिं महि तनधारयो त्यहिं सुरहित कृपासिन्धु भगवान॥
कालरूप खलदल भञ्जन कर निर्गुण ब्रह्म निरञ्जन जोय।
सेवत जाके पग शंकर अज ताके बैर खैर किमि होय॥
देहु जानकी रघुनन्दन कहँ आपन भलाजानि दशभाल।
लायजानकी हित चीन्ह्यों कहँ कीन्ह्यों प्रान जानकी काल॥
अबहुँ तुम्हारो कछु बिगरोना मानहुँ कही बात ममतात।
सिया सौंपि कै रघुनायक कहँ सेवहु चरण कमल सुखदात॥
उत्तम शिक्षा इमि बुढ़वा की बानसमान दुष्ट कहँ लागि।
दांत पीसि कै त्यहि औसर पर बोला गर्ब सहित रिसपागि॥
निसरु अभागे मम संसदिते मुखमहँ मसि लगाय यहि काल।
अबन दिखाये मुख मोको खल लीन्ह्यों जानि तोरहू हाल॥
बूढ़ जानिकै शठ छांड़तहौं नातरु अबहिं करत बिन प्रान।
सुनि इमि बानी अभिमानी की किय अस मालवन्त अनुमान॥
मारन चाहत यहि राघव अब होवा चहत कालबश हाल।
याते हितकी यहि सूझत नहिं शठ बिन काज बजावत गाल॥
गयो तुरन्तै उठि संसदि ते बोल्यो तब सकोप घननाद।
रञ्च न संशय उर आनहुँ पितु सुनि मम बचन गहहु अहलाद॥
लख्यो सबेरे अब संगर मम करिहौं बहुत कहतहौं थोर।
मारि बापुरे बनचारिन कहँ लावों तपिन बांधि बरजोर॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

परा आसरा कछु हिरदैमहँ सुनि सुतबचन सहित अभिमान ।
प्रीति सहित त्यहि लै कनियाँमहँ कीन्ह्यसि बहुप्रकार सन्मान ॥
भयो सबेरा अनुमानत इमि तोलौ भालु कीश भटभारि ।
द्वार चारिहू अनुरोधन करि लागे शोरकरन किलकारि ॥
भयो कोलाहल अति लङ्कामहँ कीशन घेरिलीन गढ़आय ।
धाये निश्चर बहु आयुध गहि आये जहाँ कीश समुदाय ॥
शिखर अनेकन गढ़ ऊपर ते दीन ढहाय कपिन पर भाय ।
गोले ओले सम बरसे पुनि तोप लगाय सैन समुहाय ॥
घहरत फहरत ते अम्बर महँ अपन पराय सुनिय नहिं कान ।
प्रलय काल के जनु गर्जत घन तर्जत बज्रपात अनुमान ॥
अतिशै मर्कट भट मर्कट सब बलकरि जुटत कटत नहिं एक ।
भाँझर ह्वैगे तन सबही के तऊ न भजत तजत रणटेक ॥
निश्चर ढाहत जिन शैलन कहँ गढ़ते कपिसमूहपर भाय ।
ऊपर फेंकत कपि गहि २ सो निश्चर मरत खाय तनघाय ॥
मेघनाद अस सुनि पायो पुनि छेंकादुर्ग बँदरवन आय ।
उतर किलाते ततकालहि तब कपि दल सन्मुख चलाबजाय ॥
आय सामुहें लेलकारेसि तब कहँ कोशलाधीश द्वउभाय ।
बड़े धनुर्धर जग जाहिर जे तिनकी लखौं आजु मनुसाय ॥
कहाँ नीलनल कपिनायक खल कहँ युवराज द्विविद हनुमान ।
निजनिज बिक्रम दिखलावहिं म्वहिं हरिहौं आजु सबनकेप्रान ॥
बन्धु बिरोधी अति कायर वह जाको कहत बिभीषण नाम ।
अहै कहां शठ हठि मारौं वहि निमकहराम बाम बे काम ॥
कहँ वह बुढ़वा है भल्लुकपति नाचत जासु शीश पर काल ।
समर सामुहें अब आवत किन अबलगि रहे बजावत गाल ॥
अस कहि धन्वा गहि हाथे महँ कानन तलक तानि गुनज्वान ।
बान असंख्यन संधानत भो फरफर चले दिपत जनुभान ॥
जनु सपक्षह्वै अहि धाये बहु दश दिशि महि अकाशगे छाय ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

परत देखि अहि कपिभल्लुकगण हियभयखाय उठेअकुलाय॥
भये न सन्मुख त्यहि औसर पर भागे युद्ध छांड़ि सब बीर।
दशा कहै को त्यहि समया की भये अधीर त्यागि सब धीर॥
सो कपि भालु न लख्यो समरमहँ जाहि न कीन प्रान अवसान।
भूलि बीरता गै बीरन की भा अति कठिन बचाउब प्रान॥
मारेसि दश दश शर हिरदै महँ मूर्च्छित परे भूमि सब बीर।
सिंह गर्जना करि गर्जा तब अतिशै मेघनाद रण धीर॥
देखि आपनो दल बिह्वल तब पवनकुमार बीर बरियार।
काल सरिस रिस करि धायो तब लैकर यक पहार बड़भार॥
सो तकि मार्‍यो मेघनाद पर ताकर चरित सुनौ हरियान।
अपने ऊपर गिरि आवत लखि उड़ि सो गगन माहिं प्रगटान॥
सहित सारथी रथ घोड़े सब चूरण भये मेरु की घात।
बचा दुलारा दशआनन का जो बड़ बली जगत बिख्यात॥

स०। बारहिं बार प्रचारत ताहि कुमार प्रभञ्जन को अति बङ्का।
जानत जाहि अपारबली ज्यहि छारकरी सगरी दहि लङ्का॥
पास म आवत सो नभ धावत लावतहै अतिही उर शङ्का।
राम समीप गयो तबहीं दुर्वाद सुनावत छावत हङ्का॥

बहुतक आयुध बर्सायें तहँ दिय महि अस्त्र शस्त्र सों छाय।
अनायासही प्रभु काटे सब लखि बल मूढ़ गयो खिसिआय॥
लाग्यो करिबे छल माया तब जानत नहीं राम परभाव।
करै गरुड़सन जस कौतुक कोउ लैकर स्वल्प सांप डरपाव॥
अतिशै प्रबला ज्यहि माया बश शिव ब्रह्मादि सकल संसार।
ताहि देखावत शठ निश्चर इमि अपनो कपट केर ब्यापार॥
कबहुँ अग्नि सो नभ ऊपर चढ़ि बरसै बिपुल ज्वलित अङ्गार।
कबहुँ धरातल महँ प्रगटै खल अति हहकारसहित जलधार॥
बिबिध भांति के तन धारे बहु भूत पिशाच प्रेत बैताल।
मारु २ धुनि उच्चारत मुख नचत बजाय गाल करताल॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

पीवत शोणित चामुण्डा गण पहिरे उर कपाल की माल।
उछलत कूदत किलकारत बहु दशा सो कहि न जाय खगपाल॥
कबहूं बरसै कच हाड़न को कबहूं रुधिर स्रवै झरिलाय।
कबहूं पाथर बरसावै शठ मुखते मारु मारु बर्राय॥
किहेंसि अँधेरा दिशि चारिउ महँ नभते धूरि भूरि बरसाय।
हाथ पसारा निज सूझै ना कहँ लग कहै कथा कोउ गाय॥
देखि निशाचरकी माया इमि बन्दर भालु गये अकुलाय।
उर भय आनत अनुमानत अस सबकर मरन बनो अब आय॥
देखि तमाशा सो बिहँसे प्रभु जान्यो कीश भालु घबड़ान।
पावक शायक संधान्यो तब श्रवण प्रयन्त शरासन तान॥
एकहि शरसों हरि माया सब कीन्हों चहूं ओर उजियार।
भानु उदयते द्युतिभासै जिमि नासै महासघन अँधियार॥
आयसु लैकै तब स्वामी ते अङ्गद आदि बीर लै साथ।
चले सुमित्रा सुत क्रोधित ह्वै लै शर चाप हाथ कटि भाथ॥
नैनन छाई अरुणाई भलि फर्कत भुज बिशाल खगपाल।
शरद चन्द्रमा सम दीपत मुख रिस बश कछुक ह्वैरह्यो लाल॥
छयो बीररस अँग अङ्गन महँ शोभा कहि न जाय कछु भाय।
सजे शूरता को बाना जनु खेलन युद्ध बीररस जाय॥
इतै हकीकति अस बीतति भै अब उत सुनौ लङ्क को हाल।
अगणित बीरन को अज्ञा दै पठयो समर हेत दशभाल॥
साज साजिगै ते शूरन कर लरिबे हेत भये तय्यार।
झीलम बखतर तन धारन करि बाँधे घने घने हथियार॥
छुरी कटारी तरवारी कर लै लै चले असंख्यन ज्वान।
भाला आला कर कोऊ लै रण को करत भये प्रस्थान॥
गदा भ्रमावत कोउ आवत है भावत मनहुँ भयङ्कर काल।
लिये दुधारा कोउ हाथे महँ कम्मर कसे गैंड़ की ढाल॥
इतै भालु कपि भट भारी सब लीन्हें शिला शृङ्ग तरु हाथ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

देर न लाये चलि आये रण भाषत जयति राम रघुनाथ॥
जोरी जोरी सों भिरनी भै इत उत जीति आश नहिं थोरि।
युद्ध अपूरब त्यहि औसर कर बर्णत सकुच करत मति मोरि॥
मुठिकन लातन हनि गातन महँ बन्दर भालु करत किलकार।
दांतन काटत नख पाटत क्षत मारत तरु पहार करिवार॥
भुजा उखारत शिर फारत हति धरु २ मारु २ धुनि छाय।
शब्द समान्यो नवखण्डन महँ अद्भुत चरित कहै किमि गाय॥
रुण्डन मुण्डन सों तोपी महि शोणित सरित रही उमड़ाय।
रुण्ड प्रचण्ड दशौ दिशि धावत मुखते मारु मारु रटलाय॥
जमिगो शोणित भरि कुण्डन महँ ऊपर रजउड़ाय इमि भाय।
बहु अङ्गारन के ढेरन पर मानहुँ चिता क्षार रहि छाय॥
सोहैं घायल भट कैसे तहँ बिकसे तरु पलास जनु आहिं।
बानर असुरन को संगर अस देउता लखत खड़े नभ माहिं॥
मेघनाद अरु भटलक्ष्मण द्वउ करि अति क्रोध परस्पर हाँकि।
भिरैं न पछैरं कोउ काहू सों एकहि एक लीन बल आँकि॥
जीति सकैना कोउ काहू को छल बल बहुत करै घननाद।
तबहिं सुमित्रासुत कोपे रण कीन्ह्यों सरथ सारथी बाद॥
हने बिबिध शर घननादहु उर राकस भयो प्रान अवसान।
तब इमि मन महँ अनुमानतभो संकटभये हरिहि मम प्रान॥
अस बिचार करि खल राकस ने छाँड़ी बीरघातिनी साँगि।
होत न निष्फल ब्रह्मदत्त सों तेज समूह लषण उर लागि॥
भये मूर्च्छित अहिनायक तब बिह्वल गिरे धरातल माहिं।
सो गति देखत सुर बृन्दन के धीरज रह्यो हृदय में नाहिं॥
भये अचेतन अहिनायक जब खाय प्रचण्ड शक्ति को घाव।
हाल जानिकै यह रावणसुत शठ भय छाँड़ि पास चलिआव॥
लग्यो उठावन धराधरन कहँ करि बल अप्रमान हरियान।
उठे न जब तब अरु निश्चर बहु लीन बोलाय हाँकदै ज्वान॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कोटिन योधा मेघनाद सम रहे उठाय अनन्तहि भाय।
उठैं कौन बिधि सो बसुधाधर भागे मूढ़ सकल खिसिआय॥
गिरिजा जिनकी क्रोधागिनि महँ चौदह भुवन जरैं पल माहिं।
जीति सकै को तिन्हैं समर महँ सेवत देव नाग नर जाहि॥
जानत वोई जन कौतुक यह जिनपर कृपा राम की होय।
राम कृपाबिन गूढ़ाशय यह जानि न सकै कोटि बिधि कोय॥
लौटीं सैना दुउ अस्थल कहँ संध्या समय जानि खगराय।
लगे सँभारन तब निज निज भट ताकर हाल सुनौ मनलाय॥
लख्यो न लक्ष्मण कहँ राघव जब पूछ्यो सब सेनपन बोलाय।
तौ लगि आयो लै अञ्जनिसुत मुर्छित दशा माहिं अहिराय॥
देखि मूर्छित प्रिय बन्धव कहँ अतिशै दुखी भये रघुराय।
दशा कहै को त्यहि औसर की नैनन गयो प्रेम जल छाय॥
तब समुझायो जामवन्त ने सुनिये दीनबन्धु भगवान।
बैद सुखेना रह लङ्का महँ प्रभु पद भक्त महा मतिमान॥
काहू योधा को पठइय तहँ लावै बोलि तुरन्तै साथ।
बोलि तड़ाका हनुमन्तै तब अज्ञा दई राम रघुनाथ॥
छोट रूप धरि हनुमन्ता तब पहुँच्यो तुरत लङ्क महँ जाय।
त्यहि उठाय कै सह मन्दिर के लायो जहाँ राम रघुराय॥
जागि सुखेना त्यहि औसर तब प्रभुपद माथ नवायो आय।
गही नाटिका पुनि लक्ष्मणकी लाग्यो लखन हाल लव लाय॥
दशा देखि कै अहिनायक की कह्यो सुखेन बैद पछिताय।
लग्यो कठिन क्षत श्रीलक्ष्मण के सुनिये रमारमण रघुराय॥
बैद सुखेना की बाणी सुनि श्रीरघुराय उठे अकुलाय।
तबहिं सुखेना लखि सेनादिशि सबसन कहन लग्यो समुझाय॥
अबलग सेवा रघुनन्दन की तन मन लाय किह्यो सब कोय।
अब यहि औसर पर यहिते बढ़ि दूसरि टहल और नहिं होय॥
उदै न होवैं रबि जौलौं इत तौलगि गन्धमादनहिं जाय।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

को लैआवै संजीवनि को हमसन कहै तौन समुझाय॥
आपन आपन बल भाषौ सब करौ न राम काम महँ देर।
थोरा अवसर अब बाकी है पौरुष करौ त्यागि अवसेर॥
यहि क्षण पौरुष दिखरैहौना तौ सब बनी बात गै खोय।
राम न पैहैं पुनि लक्ष्मण का आगे होनहार सो होय॥
वैद सुखेना की बानी सुनि शोचन लगे सकल बलवान।
हाथ जोरिकै नल भाष्यो तब सुनिये दीनबन्धु भगवान॥
तीन राति बसि लै आवौं मैं बूटी गन्धमादनहिं जाय।
यहिते बढ़िकै बल मोमें नहिं आपन पौरुष दीन बताय॥
बिन्द कुबिन्दा कपि बोले पुनि द्वै निशि बीचमाहिं करिबास।
आय सकित है हम तिसरे दिन सुनिये रमारमण सुखरास॥
बोले कपिपति तब औसर त्यहि बसि इकराति सकौं मैं लाय।
यहिते अधिकी मम पौरुष नहिं सुनिये दीनबन्धु रघुराय॥
सभामध्य तब उठि अङ्गद भट बोल्यो पैंज खैंचि यह बात।
कालिह दुपहरी लग लाऊं मैं जाऊं होय जो आयसु तात॥
बीर बानरन को भाषण सुनि भो बहु शोच राम उर माहिं।
कल दृग जल सों परिपूरित भे बरणी दशा जात सो नाहिं॥
भई निराशा सब काहू को लक्ष्मण जियन माहिं खगराय।
कही सुखेना दुख नाशै को है बहु पन्थ दूरि को भाय॥
व्याकुल ह्वै कै तब सीतापति बोले हनूमान दिशि हेरि।
होहु सहायक यहि कुसमै महँ अञ्जनिसुवन बिनै सुनि मेरि॥

स० । रुद्रऽवतार कहै सब तोहिं समीरकुमार समीर सो बङ्का।
सिन्धु अपार उलङ्घम कै तुम राकस मारि किह्यो अहतङ्का॥
बाग उजारि निहारि सिया जिमि लङ्कहि जारि हर्यो सब शङ्का।
लाय सजीवनि भाय जिआय त्यों बीर मिटाय दे मोर कलङ्का १
भानु अकाश पिता दिविवास सो जाउँ कहाँ क्यहिपास बताय दे।
डूबत है मँझ धार में नाव अहो कपिराव सो पार लगाय दे॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कोउ न या समया में सहायक कै बल या बिरहागि बुझाय दे।
हे हनुमन्त अनन्त बली अब लाय बुटी मम भाय जिआय दे॥२॥

करुणा बाणी सुनि राघव की बोले धीर बीर हनुमान।
धीरज धारिय रघुनन्दन मन सुनि मम बचन मानि परमान॥

क०। धीर जनि त्यागौ धीरधुरि के धरनहार राउर कृपा ते सब कारज बनाइ हौं। धाइ हौं उताल हाल लंघि कै समुद्र क्षुद्र मेरुपर जाय खोज मूरि को लगाइ हौं॥ पाइहौं न जोपै पहिंचानि बन्दि औषधि को तानि कै कमान सो भुजान पै उठाइहौं। रैनिहीं में आइहौं बिलम्ब ना लगाइहौं सजीवनि लयाइहौं अनन्ताहि जिआइहौं॥

कौन कठिनता है या महँ प्रभु जासे आप रहे घबड़ाय।
लक्ष्मण जीहैं ज्यहि उपाय ते करिहौं स्वई राम रघुराय॥
मथ्यो जहाँ पर सुर दानव मिलि क्षीरसमुद्र जाय त्यहि ठाम।
मथि लै आऊँ वहि अमृत कहँ आयसु होय सन्तसुखधाम॥
ना तरु सुरपुर को जाऊँ चलि रोकौं बाट देवतन केरि।
सीधे अमृत दै देवहिं नतु मारौं एक एक कहँ घेरि॥
सात पतालन लगिजाऊँ चलि लाऊँ अमी अहिन ते छीनि।
पकरि निचोवौं कहो चन्दा को मैं अस युक्ति हृदय धरिलीनि॥
मेरु सुखेना बतलायो जो सो अस जानि परत म्वहिं नाथ।
धरा यही थल कछु अन्तर नहिं हाजिर करौं बात के साथ॥
जातन अबहीं निशि अधकी प्रभु लावौं चारि घरी महँ धाय।
चिन्ता लक्ष्मण की करिये जनि धरिये धीर हृदय रघुराय॥
आयसु पावौं तो जावौं मैं अबहीं उर उछाह उपजाय।
सुनि अस बानी कपिकुञ्जरकी आनी धीर कछुक रघुराय॥
लोचन खोले पुनि बोले अस हे सुत अब बिलम्ब जनिलाउ।
प्राण दानदे भट लक्ष्मण कहँ यहि क्षन अपन ओज दिखराउ॥
यहि बिधि आयसु सुनि रघुपति को उठे तड़ाक तड़ापि हनुमान।
देह भयंकर भे पर्वत सम भारी भुजा लाग असमान॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

माथ नवायो प्रभु पायँन महँ कीन्ह्यों चलन हेत अनुमान।
तत्क्षण राघव प्रभु भाष्यो अस करिये बचन बीर मम कान॥
तुम्हरे गमनत सुधि आई म्वहिं सो संदेश सुनौ मन लाय।
नगर अयोध्या ह्वै जैहौ तुम जहँ पर रहत भरत मम भाय॥
जात इतै ते मिल्यो न तिन कहँ ना कछु कह्यो समर को हाल।
नतरु अयोध्या महँ होई दुख रोई प्रजा वृद्ध औ बाल॥
होयँ दुखारी महतारी सब भारी बिपति जाय पुरछाय।
उत ते बूटी लै लौट्यो जब तब सब हाल कह्यो समुझाय॥
कुशल प्रश्न लै पुनि आयो इत सबहि बुझाय धीर धरवाय।
सुनि अस आयसु महराजा को हनुमत चले चरण शिरनाय॥
इतै हकीकति अस बीतति भै उतकर हाल सुनौ मनलाय।
चर चलिआयो दश आनन ढिग औ सब बृत्त दयो बतलाय॥
हाल पाय सो चलि आयो तहँ जहँ रह कालनेमि निशिचारि।
लियो सहादर त्यहि राकस ने तब त्यहिं कथा कही सब झारि॥
धुनि शिर बोल्यो कालनेमि तब स्वामी कहा करहु मम कान।
तुम्हरे देखत पुर जार्‌यो ज्यहिं मार्‌यो अछय आदि बलवान॥
पन्थ रोकइया जग ताको को इतना हृदय लेहु अनुमानि।
दुष्टनिकन्दन रघुनन्दन को भजि यह तजौ मोह की बानि॥
भला तुम्हारो है याही महँ लेहु बिचारि हृदय मतिमान।
काल ब्यालकर है भक्षक जो तासु बिरोध नहीं कल्यान॥
सुनि सिख कोप्यो दशकन्धर खल लाग्यो कहन ताहि दुर्बाद।
तब वहिं शोच्यो मन अपने महँ भो यह काल विवश मनुजाद॥
राम दूत कर है मरना भल सहजे राकस योनि नशाय।
दिहे सिखावन यह मनिहै ना हनिहै बृथा मोहिं रिसिआय॥
असकहि आयो चलि मारग वहि आवत जौन राह कपिनाह।
माया मन्दिर रचि अनुपम तहँ करि मुनि बेष बैठ सउछाह॥
सुन्दर आश्रम लखि मारुतसुत अति आनन्द भये खगराय।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

पियों बारि चलि मुनिनायक ढिग तृषा बुझाय परिश्रम जाय ॥
आय पवनसुत शिर नायो त्यहि आयसु पाय बैठ हर्षाय ।
लाग कहै सो रण गाथा सब बिस्तर सहित यथा बिधि भाय ॥
होत महारण हरि रावण ते जीतहिं अवशि राम शक नाहिं ।
इत ते बैठे मैं देखौं सब है अति ज्ञान बुद्धि म्वहिं माहिं ॥
मारुतनंदन जल माँग्यो तब त्यहिं त्वर दीन कमण्डल लाय ।
तृषा न जैहै जल थोड़े ते देहु तड़ाग मोहिं बतलाय ॥
सर बतलायो त्यहिं हनुमत को तुरतै तहाँ पहूंचे जाय ।
सुनिये खगपति वह कौतुक अब जो उत जाय कीन कपिराय ॥
मकरी पकख्यो पग पैठत सर माख्यो ताहि बीर हनुमान ।
दिव्य देह धरि त्यहि अवसर सो ह्वै अप्सरा चली चढ़ि यान ॥
करि कपिनंदन पग बंदन पुनि बोली मधुर मनोहर बैन ।
मैं गंधर्बिनि देवलोक की राउर दरश सफल भे नैन ॥
इन्द्रसभा महँ नित नाचत मैं भाषत गंधकालि मम नाम ।
सब दिन याही काम हमारो गान बिधान नृत्य इतमाम ॥
इक दिन नाचन को जाती मैं किये शृँगार धनद के धाम ।
पथमहँ बैठे दक्षनाम मुनि गहे समाधि जपत हरिनाम ॥
तिनके तनमहँ तन छुइगो मम मुनि तप भंग भयो त्यहि हेतु ।
शाप दीन तब मुनि रोषित ह्वै रह्यो न तनिक चित्त महँ चेतु ॥
तैं अब मकरी तन धारण करि रहु सर गंधमादनी जाय ।
भार उतारन हित बसुधा को जब अवतार लेहिं रघुराय ॥
राम दूत कर तैं मरिकै तब ह्वै है शाप मुक्त शक नाहिं ।
आजु सत्य भो मुनि भाषण सो मैं निष्पाप भइउँ क्षणमाहिं ॥
मुनि तन धारे यह बैठो जो निश्चर घोर लेहु त्यहि जानि ।
ताके छलमहँ तुम आयो ना मानहुँ सत्य कही मम बानि ॥
अस कहि गमनी गंधर्बिनि तब निश्चर निकट गयो कपिराय ।
रूप भयंकर करि बोले तब गे रिस अंग अंग महँ छाय ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

लेहु प्रथम मुनि गुरुदक्षिणा यह पीछे दिह्यो मंत्र उपदेश।
लूम लपेट्यो शिर कहिकै अस पटक्यो धरा माहिं नभगेश॥
मरती बेरा तन प्रकट्यो निज छांड़यो राम राम कहि प्रान।
यहि बिधि हतिकै कालनेमि को आगे हर्षि चले हनुमान॥
एक महूरत महँ आये उड़ि गिरिके निकट पहूँचे आय।
इतै हकीकति अस बीतति भै उतकर हाल सुनौ मनलाय॥
बोलि पठायो सब देवन कहँ लंक भुवाल बीर दशभाल।
चन्द्र सूर अरु इन्द्रादिक सुर आये सुनि निदेश ततकाल॥
तिन सों रावण अस भाषत भो सुनिये सकल देव मम बात।
संयुग महिमहँ आज खाय क्षत घायल भये राम लघुभ्रात॥
ताते तुमका समुझाइत है हमरे वचन करौ परमान।
आजु चन्द्रमा यहि अस्थल रह अबहीं उवै जाय नभभान॥
तजैं लषन तन सूर्योदय महँ ताते होय मोर कल्यान।
मिटै लड़ाई सहजेही महँ दल सह भगैं राम लै प्रान॥
सुनि अनुशासन दशआनन को सविनय सूर्य कही यह बात।
अबै तौ बाकी है आधी निशि किमि ह्वै उदै करैं हम प्रात॥
ध्रुवा मिटावै को ईश्वर का जामहँ बँधा सकल संसार।
सुनि अस उत्तर दिननायक का रोषित भयो लंक भर्त्तार॥
मम निदेश को उल्लंघन करि तैं का वृथा बजावत गाल।
राति रहेते क्षति तेरी कह करत न कथन मोर प्रतिपाल॥
हानि हमारी तैं चाहत का जो अस मोहिं सुनावत ज्ञान।
लखि अस कोपित दशकंधर कहँ चुप ह्वै चले उदैगिरि भान॥
यान मनोहर अति सविता को को कवि करै तासु छविगान।
जुते तुरंगम चपल चाल के चमचम होत मणिन को भान॥
अति विचित्रहै प्रभु लीला यह शिव अज जासु न पावत पार।
नित्त नचावत नट सदृश जो यह जग दारु नारि अनुहार॥
निज इच्छा सम यहि दुनियाँ को पालत सृजत करत संहार।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

धूरि धराधर को डारत करि रज को मेरु न लागत बार ॥
ज्यहि सविता की बर किरणन ते जगको अन्धकार नशिजात ।
त्रास मानि कै सो रावण की कुसमय उवन चले पछितात ॥
चले दिवाकर इत उदयाचल चढ़िकै सुभग यान पर भाय ।
उतै अञ्जनीसुत पर्वत पर खोजत मूरि सविधि खगराय ॥
तौलौं निरख्यो नभ प्रकाश कछु हनुमत गये सनाका खाय ।
मारि कुदक्का अतिव बेग सों रथके निकट पहूंचे जाय ॥
रबि पथ रोक्यो अति क्रुद्धित ह्वै अचलित भयो भानुको यान ।
भयो सारथी सन्देहित तब लाग्यो करन चित्त अनुमान ॥
अचल भयो रथ क्यहि कारणते मोकहँ मर्म परत नहिं जानि ।
पश्चिमदिशि कहँ रथ हाँक्यो पुनि बाजि बढ़ायकशाकर तानि ॥
रिस करि तबहीं हनुमन्ता भट आगे धस्यो चपल हय धाय ।
लाग घुमावन पुनि स्यन्दन कहँ यथा कुम्हार चक्र भहराय ॥
लगे पुकारन रबि तत्क्षण तब को यह मोर घुमावत यान ।
कह्यो सारथी प्रभु बानर इक बिकृताकार कुधर परमान ॥
यान घुमावत त्यहि कारण ते आगे चलन न पावत बाजि ।
कह रबि कोड़ा हनु अश्वन पर लैचलु रथ उड़ाय नभ राजि ॥
मार्तण्ड को सुनि भाषण अस सविनय कहन लगे हनुमान ।
मायाधारी तुम आहिउ को निशि महँ कहाँ चले चढ़ियान ॥
सुनि कपि बाणी रबि बोले तब हमरो अहै दिवाकर नाम ।
उदयाचल पर हम जाइत है जगमहँ उदै होन के काम ॥
रावण जीत्यो सब देवन को हमहूं अहैं तासु आधीन ।
अजहूं जाके गृह बाँचैं श्रुति ब्रह्मा जासु भीति बश दीन ॥
आजु लड़ाई अति भीषण भै लषणहिं दियो निशाचर घाव ।
तजैं प्राण सो निशि बीतेपर क्यहू उपाव न जीवन पाव ॥
यहै शोचिकै दशआनन ने आयसु हमैं दीन बोलवाय ।
जात उवन अब हम उदयाचल ताको हुकुम शीश धरि भाय ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

लेन सजीवनि गो अंजनिसुत जबलगि वह न लौटि उत जाय।
तौ लगि उदयाचल दाखिल ह्वै हम करिदेब सबेरा भाय॥
राह हमारी तुम रोंकौना हमरे बचन करौ परमान।
यहि विधि बातैं सुनि सूरजकी भाषत भये बीर हनुमान॥
मैंही मारुतसुत हनुमत हौं रघुपति दूत लेहु अस जानि।
औषधि आनै हित आयों मैं बिनती करौं जोरि युग पानि॥
जौलगि प्रभु पहँ मैं पहुँचौं ना तौ लगि उदै होहु जनिनाथ।
नातरु कारज नशि जैहै सब प्रणवों बार बार धरिमाथ॥
तुमहीं मुखिया सब देवन महँ लषणहि देहु प्रान को दान।
तुम्हरेहि कुलके तौ भूषण हैं दशरथ सुवन राम भगवान॥
बोले सबिता सुनु मारुतसुत मैं जो कहत तौन धरि ध्यान।
जितने देउता हैं दुनिया महँ सब कोउ चहत राम कल्यान॥
का कछु साधन हम जाइत है करन प्रकाश सुनौ मतिमान।
कठिन दशानन को आयसु है को अस जौन करै नहिं कान॥
यह हम जानित है नीकी बिधि पैहैं समर विजय श्रीराम।
पै नहिं जानित यह मरिहै कब रावण दुष्ट कलुष को धाम॥
आजु न आयसु यदि मानी हम कालिह को रक्षा करै हमारि।
आयसु टारे ते कोपित ह्वै देहि प्रचण्ड दण्ड निशिचारि॥
अस कहि सविता रथहाँक्यो पुनि तब अति कुपित भये हनुमान।
मौन मारिकै यक लहमा भरि हिय अस ध्यान कीन अनुमान॥
दुष्ट दिवाकर है दुर्मति अति रहिबे योग गगन महँ नाहिं।
अस कहि कोपित कपि कुदक्किगहि दाब्यो रविहि काँखके माहिं॥
उड़यो तड़ाका पुनि छलाँक दै पहुँच्यो तुरत मेरुपर धाय।
पौनहुँ ते बढ़ि बेग गौन है विक्रम जासु बरणि नहिं जाय॥
घूमि घूमि कै कंगूरन पर खोज्यो दवा पवन के लाल।
जानि न पायो त्यहि बूटी कहँ ढूंढ्यो विविध भाँति करि ख्याल॥
शिखर दूसरे पर पहुँच्यो तब देख्यो तहँ चरित्र असजाय।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अति मुदछावत बाद्य बजावत गण गन्धर्ब रहे तहँ गाय॥
कोकिल बैनी मृगनैनी अति सुन्दर रूप राशि सुकुमारि।
तिन गन्धर्बन की रमनी सब करैं बिहार मोद मन धारि॥
कोइ गावत कोइ ताल लगावत कोई नचत बतावत भाव।
यहि बिधि जितने गन्धर्बा तहँ तत्पर गान बाद्य के चाव॥
गो हनुमन्ता चलि तिन के ढिग भे सब चकित देखि कपिजात।
तब मारुतसुत गन्धर्बन सों सबिनय कहत भये असबात॥
को तुम नाचत अरु गावत इत बिनती सुनौ मोरि दै कान।
भूप अयोध्याधिप दशरथ के पूत सपूत राम भगवान॥
पितु बच पालन को आये बन लाये संग नारि लघुभाय।
दण्डक बनते तिन सीताको हरिलै आयो निशाचर राय॥
सेतु बांधि कै तब राघव प्रभु उतरे सदल सिन्धु के पार।
होत भयंकर रण लङ्कामहँ जूझे अमित शूर सर्दार॥
शक्तिघाय ते मृतकप्राय ह्वै लक्ष्मण परे समर महि माहिं।
औषध खोजन इत आयों मैं पायों तौन खोजि मैं नाहिं॥
रहे निशा कछु म्वहिं पहुँचब तहँ वाजिब अहै सुनौ बलवान।
बिगरै कारज निशिबीते सब इतना बचन करौ परमान॥
हम पर दाया करि भाई तुम देहु चिह्नाय सजीवनि मूरि।
सुनि अस भाषण कपिनायक को गे गन्धर्ब सर्बरिसपूरि॥
आयो कितते यह बानरशठ का बकिरह्यो परत नहिं जानि।
सुना न अबलगि रामनाम हम धौं कहँ रहत कैस बलखानि॥
हाहा हूहू महराजा के हम आधीन रहत सब काल।
हम का जानैं अरु काहूको की कहँ रहत राम नरपाल॥
रसमहँ अनरस यहिं कीन्ह्यो खल सब मिलि करहु याहि संहार।
करि अस सम्मत गन्धर्बा सब मारन हेत भये तय्यार॥
आयकै लपटे हनुमन्ता पर जस मक्षिका चपिटि तन जायँ।
बार उखारै कोउ मारै हनि उर मुष्टिका वज्र की नायँ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

पूछ पकरिकै कोउ खींचत है यहि बिधि करन लाग उत्पात।
तिन मधि मारुतसुत घिरिगेकस शशकन मध्य यथा गजजात॥
भयो मारुती मन क्रोधित तब बाढ़िकै भयो पर्वताकार।
कह्यो हाँकदै सब देवन ते इन कर लखौ दुष्ट ब्यापार॥
निरपराध ये खल मारत म्वहिं भल कै जानि लेहु यह बात।
पीछे दूषण कोउ दीन्ह्यों ना मैंहूं करत खलन की घात॥
असकहि घूम्यौ हनुमन्ता भट शङ्का जाहि काल की नाहिं।
लाग पछारन गन्धर्बन कहँ धरि धरि पटकि पटकि महि माहिं॥
कूदि कूदि कै कर फैंटागहि पद सों मर्दि मिलावै क्षार।
बचै न एकौ कोउ भागे ते हनि हनि करै घोर ललकार॥
एक एक पै फटकारै धरि कौनौ हनै चपेटा मारि।
पांचक सातक गहि एकै सँग देय पषाण उपर फटकारि॥
पग के नीचे पगदाबै इक पकरै एक हाथ सों पावँ।
सींक कि नाई धरि फारै त्यहि एक न चलै कहू को दावँ॥
लूम लपेटै कोहु योधा का देय घुमाय फेंकि आकाश।
जिते गन्धरब रहे तहाँ पर हनुमत हने सकल अनयास॥
हाहा हूहू सुधि पायो अस जे गन्धर्ब राज बिख्यात।
रथारूढ ह्वै सह सेना के घेरयो आय बीर कपिजात॥
धारि शरासन चौगिर्दा ते बर्षा करन शरन की लाग।
तबहिं कोपि कै हनुमन्ता भट गर्ज्यो यथा भयङ्कर नाग॥
मारि कुदक्का रथ ऊपर चढ़ि द्वउ करते लिय धनुष छिनाय।
तोरि बहायो त्यहि धरती महँ तब गन्धर्ब उठे रिसिआय॥
उतरिकै स्यन्दन ते आये भुवि दोउन लिय उखारि तरुताल।
लगे प्रहारन हनुमन्ता पर कोप्यो तबहिं पवन को लाल॥
झपटि एक कहँ हन्यो मुष्टिका दूजो पदाघात करि घात।
भये प्राण बिन गन्धर्बा द्वउ गई पराय सेन सब भ्रात॥
बिजय पाय कै पुनि मारुतसुत खोजन लगे सजीवनि आय।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

पता न पावैं त्यहि बूटी कहँ मन महँ बहुत लाग पछिताय ॥
इतै हकीकति अस बीतनि भै उत अब सुनो अवध को हाल।
स्वपन सुमित्रा ने देख्यो जस तस मैं बरणि बतावों बाल ॥
काल भुअङ्गम लपट्यानो जनु बावाँ अङ्ग गयो सब खाय।
जागि कै धाई कौशल्या पै तिनते हाल कह्यो यह आय ॥
सुनि कौशल्या जल नैनन भरि लागी हृदय माहिं बिलखाय।
भरत बशिष्ठै बुलवायो पुनि तिनते कह्यो दशा सब गाय ॥
करि उर चिन्तन मुनिनायक तब सबहि सुनाय कह्यो अस बात।
स्वप्न नकारो अति देख्यो इन सकुशल होयँ राम द्वउ भ्रात ॥
चाहिय करिबो मन्त्र जाप कछु हवन बिधान अबहिं यहिकाल।
जामहँ अशकुन कछु होवैना सकुशल रहैं राम द्वउ बाल ॥
मुनिबर पूजन प्रारम्भ्यो तब भरत कुमार भये रखवार।
धनुष बाण लै तहँ ठाढ़े भे जो कोउ बिघन करै त्यहि मार ॥
भयो अयोध्या महँ कौतुक यह उत अब सुनौ हनूको हाल।
चीन्हि न पायो जब औषध तब लीन उखारि मेरु बिकराल ॥
गहि गिरि मारुतसुत मारुत सम नभ पथ चले बेग सों धाय।
पुरी अयोध्या पर आयो चलि तबकी दशा सुनौ खगराय ॥
महा भयानक आकारहि लखि भरत कुमार निशाचर जानि।
शायक मार्यो बिन गांसी की कानन लगे शरासन तानि ॥
पर्यो मुर्च्छि महि शरलागत कपि सुमिरत राम राम रघुराय।
सो प्रिय वाणी सुनि केकयिसुत आतुर कपि समीप गे धाय ॥
हृदय लगायो कपि ब्याकुल लखि जागत नहिं जगाय गेहारि।
शोचन लागे तब दुःखित ह्वै बृथा कलङ्क लीन उर धारि ॥

स० । हा हरिभक्त उठौ किनबेगि हमैं मुददै द्वउ नैन उघारौ।
क्षेम कहौ करुणाकरकी फिरि रामरमा मुख बैन उचारौ ॥
बूड़तहौं दुख सिन्धु अपार दया करिकै किन पार उतारौ।
जागौ तो जागौ नहीं तजौं प्राण हहाये कलङ्क कहाँले पधारौं ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

भरत भावते की बाणी सुनि जै जानकीरमण मुख ध्याय।
तड़कि तड़ाका उठि बैठ्यो कपि शाका जासु बरणि ना जाय॥
सजल बिलोचन तन पुलकित ह्वै भरत कुमार लीन उरलाय।
रघुकुल भूषण को सुमिरन करि भे मनमगन प्रेम के भाय॥
मातु जानकी लघुबान्धव सह प्रभुकी कुशल बतावहु तात।
केकयिसुत को सुनि भाषण इमि लागे कहन हाल कपिजात॥

स०। जानकि कानन आनिहरी दशआनन मूढ़ महामद छायो।
शोध सो पाय सहायकलै रघुनायक लङ्क निशङ्क ह्वै धायो॥
शक्तिहनी रण राकस घोर सो लक्ष्मण के उरमें क्षतआयो।
ताहित लेन सजीवनिको रघुबंश बिभूषण मोहिं पठायो॥
जाय उपाय न शोचि कछू सो बृथा अब मोर परिश्रम ह्वैहै।
भायके घायसों हायदुखी रघुराय तिन्हैं उत को समुझैहै॥
भो शरघात सों गात बिदीरण को यह मेरु तहां पहुँचैहै।
होत बिहान उदै भये भानके बीर अनन्तहि कौन जियैहै॥

जियैं न लक्ष्मण गिरि पहुँचे बिन तिन बिन बारि न पीवैं राम।
हाय बिधाता कह कीन्ह्यों यह दियो बेगारि बनावो काम॥
कठिन कुसमया भइ भरत्थ यह सूझत मोहिं न कछू उपाय।
करो तुम्हारे मन आवै जस हौं मैं व्यथित बाण के घाय॥
लीन परीक्षा चहैं पवनसुत भरत कुमार केरि खगराय।
ता हित ऐसे बच बोलत भे सुनिये अग्र हाल मनलाय॥
खबरि अयोध्या महँ फैली यह दौरीं कौशलादि सब माय।
सुनि रण घायल लषण कुवँर को रोवन लगीं महा बिलखाय॥
मातु सुमित्रा सुत अपने की बहु बिधि करन प्रशंसा लागि।
भइउँ सपूती मैं आजहिं सुत दीन्ह्यों राम हेतु तन त्यागि॥
प्रभुहित सेवक मरिजावै जो शोच न करै तासु की माय।
प्रभु के देखत तन त्यागै रन भट की यहै बड़ाई आय॥
प्रभुहि छाँड़ि कै महि संयुग महँ सेवक जौन भजै भयलाय।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

इक तौ अपयश लह दुनिया महँ दुसरे गीध माँस नहिं खाय ॥
कह्यो सँदेशा तुम रघुपति ते इतना कहा मोर हनुमान ।
शोच न लावैं कछु लक्ष्मण हित मारैं शत्रु समर मैदान ॥
समर किहे मा है बातैं दुइ कीतौ जीति होय कै हारि ।
जीते पावै यश दुनियाँ मा जूझे स्वर्ग केर अधिकारि ॥
शोच न याही ते मोको कछु लक्ष्मण जग यश लीन कमाय ।
शोच न रामहुँ उर लावैं कछु इतना कहा मोर मनलाय ॥
मातु कौशला अति रोदन करि लक्ष्मण पूत पूत गोहराय ।
भाषन लागी पुनि हनुमतते दशा सो कहि न जाय खगराय ॥
कह्यो सँदेशा रघुनायक ते की अस कह्यो कौशला माय ।
लौटि अयोध्यै तुम आयो ना लाये बिना संग लघुभाय ॥
जो घर लौट्यो तौ भाई द्वउ औ लै जनकदुलारी साथ ।
नातरु बनमा रहि काट्यो दिन लख्यो न भवन गवनकी पाथ ॥
मातु कौशला को भाषण सुनि क्षण यक दुखी भये हनुमान ।
जानि कुसमया पुनि धीरज धरि लागे भरत कुँवर बतलान ॥

स० । तात बिलम्ब लगै त्वहिं जात प्रभात भये सब काज नशैहै ।
भाय बियोग सों हाय दुखी उत ताकत पन्थ कृपानिधि ह्वैहै ॥
मो शर पै अब होहु सवार पहार समेत नहीं कछु भैहै ।
भक्तन को प्रण राखनहार प्रभू क्षणमाहिं तहाँ पहुँचैहै ॥

भरत भावते की बाणी सुनि कपि के हृदय भयो अभिमान ।
सहित धराधर मम दीरघ तन ताको भार सहै किमि बान ॥
प्रभु प्रभाव गुनि पुनि हियरे महँ बोल्यो हाथ जोरि शिरनाय ।
तुव प्रताप उर सुमिरि दयानिधि जैहौं बाण बेग बढ़ि धाय ॥
ह्वै कैकेयी सुत हर्षित तब आयसु दियो तुरत फुरमाय ।
उड़यो झड़ाका तब अञ्जनिसुत राघव बन्धु पगन शिरनाय ॥
भरत भावते को भुजबल अति शील स्वभाव दया व्यवहार ।
प्रीति पुनीतम प्रभु पायँन महँ सरहत जात समीर कुमार ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

उत करुणानिधि लखि बन्धव कहँ बोले बचन मनुज की नायँ ।
अर्धराति गै कपि आयो नहिं असमन शोचि स्वामि बिलखायँ ॥
हे सुखदाई प्रिय भाई तुम अस दुख कबहुँ दीन न्वहिं नाहिं ।
तुम तौ कोमल चित सदैव के है यह बिदित बात जगमाहिं ॥
मम हित कारन पितु माता तजि तृण सम गेह नेह को तूरि ।
बन महँ आयो दुख पायो बहु आतप बात गात सहि भूरि ॥
प्राण पियारे चषतारे मम सो अनुराग दियो बिसराय ।
सोवत सुन्दर रण शय्या पर हम तन तनक न हेरत भाय ॥
मम हिय पिञ्जर के तोता तुम बोलत क्यों न माधुरे बैन ।
काह जानिकै चुप साध्यो है खोलहु कमल नैन सुख दैन ॥
नैन चकोरन के प्रीतम शशि तुम का जानि रह्यो मलिनाय ।
चैन कहाँ है तुम देखे बिन है अवलम्ब न दूसर हाय ॥
जो मैं जनत्यों की कानन महँ जैहै बिछुरि मोर प्रियभाय ।
कहना मनत्यों तौ बापहि का कहा न करत कहा जो माय ॥
माय केकयी ने भाषा रहै तपसी वेष धारि कै राम ।
चौदह बर्ष बसैं कानन महँ तजि कै नगर अयोध्या धाम ॥

स० । मात पिता सुत दार अगार सखा परिवार सगे सुखदाई ।
कोश भँडार उदार बिभूति मिलै जग बारहि बार कै आई ॥
बन्दि बिचारि भलेही लियो स्वइ बात कहौं तुमते समुझाई ।
जागहु तात हिये हित कै जग फेरि मिलै न सहोदर भाई ॥

दुखी बिहंगम जस पखना बिन जलचर यथा दीन जलहीन ।
तुम बिन बन्धव मम जीवन तस का यह बाम बिधातैं कीन ॥
मणि बिन व्याकुल फणि होवै जिमि करबिन करी यथा अकुलाय ।
दुखी चन्द्रमा बिन चकवा जस चितवै चकित चक्षु चकवाय ॥
तुम बिन जीवन अस भाई मम जो जड़ दैव जियावै मोहिं ।
किमि घर जैहौं दिखलैहौं मुख बन्धु गवाँय त्रिया हित तोहिं ॥
अपयश सहत्यों बरु दुनिया महँ हानि न त्रियाहानि कछु आय ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

देखि तुम्हारो दुख बन्धव अब मम उर निठुर सहै ये घाय ॥
एकहि प्यारे सुत माता के प्राण अधार हृदय के हार।
तुमका थाती त्यहिं सौंप्यो मोहिं तुमपर जानि मोर अतिप्यार ॥
जाय कै उत्तर त्यहि देहौं कह उठि किन मोहिं बुझावहु भाय।
ना तरु मैं हूं तन त्यागत अब तुम बिन जक्क जियन अबजाय ॥
शोच बिमोचन प्रभु शोचत इमि मोचत कमलनैन ते नीर।
दशा देखि सो त्यहि अवसर पर भये अधीर भालु कपिबीर ॥
दुख सुख कबहूं ज्यहि ब्यापत नहिं सदा अखण्ड वेद असगाव।
सो प्रभु भक्तन हित लीलाकरि नरतन बिहित देखावत भाव ॥
आय पहूंच्यो त्यहि समयापर मारुतसुवन बीर हनुमान।
करुणारस महँ यथा बीररस तैसे कपि देखान हरियान ॥
अति हिय हर्षे रघुनन्दन प्रभु भेंटे कपिहि ललकि लपटाय।
यह कृतज्ञता करुणानिधि की कासन गाय जाय मुनिराय ॥
बैद्य सुखेनै लै बूटी तब तुरतै लषणहिं दई खवाय।
ब्यथा पलानी इक पलही में झट उठि बैठ राम लघु भाय ॥
मिले ललकि कै प्रभु भ्राता कहँ हर्षी सकल भालु कपि धारि।
भाषत जय जय द्वउ भाइन की करत किलोल मारि किलकारि ॥
पुनि हनुमन्ता दिशि देख्यो प्रभु काँखरि मध्य होत परकास।
उर पुर बिस्मय करि बोले तब सुत यह कक्ष मध्य कह भास ॥
लाग बुझावन तब अञ्जनिसुत सुनिये चरित अपूरब नाथ।
तुमते आयसु लै पहुँच्यों उत गिरि पर क्षणक माहिं चलि पाथ ॥
खोजन लाग्यों तहँ औषध को तौलगि चितै लख्यों आकास।
कछु प्रकास सो दिखलान्यो म्वहिं पहुँच्यों तुरत जाय त्यहिपास ॥
नभ पथ आवत दिननायक रथ तिन कहँ रोंकि लग्यों बतलाय।
हाल बतायों कहि इत को सब घायल परे राम लघुभाय ॥
लेन सजीवनि मैं आयों है जब लगि फिरि न जाउँ प्रभुपास।
उयो न तब लगि तुम बासरमणि नातरु होय मोर उपहास ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मोर निहोरा इन मान्यो ना नाकछु कीनि आपु की कानि।
कह्यो कि आयसु है रावण का मेटे ताहि होय मम हानि॥
उदै जरूरै हम ह्वैवे अब यह सुनि महूं उठ्यों रिसिआय।
झपटि झड़ाका गहि स्यन्दन ते लीन्ह्यों काँख चापि रघुराय॥
सुनि यह बानी कपि बारण की मन मुसक्यान राम भगवान।
मुक्त करायो दिननायक को गमने करत स्वामि गुणगान॥
पुनि कपि पर्बत पहुँचायो तहँ पठयो पुरै बैद्य सह धाम।
हाल दशानन सुनि पायो यह लाग्यो माथ पीटि पछितान॥

इति श्रीभार्गववंशावतंसश्रीमन्मुन्शीनवलकिशोरात्मजस्यश्रीमुन्शीप्रयाग
नारायणस्याज्ञाभिगामीउन्नामप्रदेशान्तर्गतमसवासीग्रामनिवासी
पण्डितबन्दीदीनदीक्षितनिर्मितश्रीविजयराघवखण्डेयुद्धकाण्डे
लक्ष्मणमेघनादसमरान्तर्गतलक्ष्मणशक्तिघातमूर्च्छा
चैतन्यतावर्णनोनामचतुर्थोल्लासः॥ ४॥

गिरा गजानन गुरु गिरिजापति ध्याय नवाय चरण महँ माथ।
कथा मनोहर कहि गावत हौं उरपुर राखि अयोध्यानाथ॥
याज्ञवलक जिमि भरद्वाज ते भाष्यो यथा गरुड़ सनकाग।
कह्यो भवानी प्रति शंकर जिमि गावत स्वई सहित अनुराग॥
बिगत मूर्च्छा भइ लक्ष्मण की कपिदल सकल उठ्यो हर्षाय।
हाल पाय यह दशआनन खल शिर धुनि बार २ पछिताय॥
जाय बिराज्यो पुनि संसदि महँ सबरे सचिव लीन बोलवाय।
आय पहूँचे सब योधा गण तिन ते कहन लाग अकुलाय॥
जाय न जानी गति ब्रह्मा की का शोचत का पर्यो दिखाय।
सब जग जीत्यो ज्यहि रावण ने सो अब रह्यो मनुज भयखाय॥
कथा पुरातनि सुधि आई म्वहिं सो भाषत हौं सबहि सुनाय।
शाप जो दीन्ह्यों म्वहिं नन्दी ने सो यहि समय उदय भो आय॥
जीति कुबेरहि एक बार मैं गो शिव दरश हेत कैलास।
तहँ पर नन्दीश्वर द्वारक रह जान न दीन मोहिं शिव पास॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ताको मर्कट मुख देखत मैं हँसि हँसि बहुत कीन उपहास ।
रिसकरि नंदीश्वर बोल्यो तब इनहीं मुखन तोर कुलनास ॥
मैं शिव किंकर शठ जानत नहिं करु अब मोर शाप परमान ।
करत हँसौआ मुख देखत मम राकस तोहिं इतक अभिमान ॥
नन्दीश्वर को वह भाषण अब निश्चय उदय भयो यहिकाल ।
हने हजारन मम बारन भट बन बानरन नरन करि ख्याल ॥
अमर होन हित तप कीन्ह्यो बहु पुरयो सो न आश बिधि मोरि ।
यहिबिधि ब्रह्में समुझायो म्वहिं मनशा पूरि करत मैं तोरि ॥
दैत्य देवता अरु किन्नर अहि चारण यक्ष रक्ष गन्धर्ब ।
इनते शङ्का त्वहिं नाहीं कछु करि है बिजै सहज महँ सर्ब ॥
सकल चराचर सो जीत्यों मैं नर कपि रहे शेष इकहाय ।
तिन कहँ छाँड्यों तुच्छ जानि मैं सो यहिकाल भये दुखदाय ॥
नर के बानन तन दाहत मम भो यह आजु बड़ो अपमान ।
महीं न पायों जय जिनते अब जीतनहार तिन्हैं को आन ॥
अति बलवन्ता कुम्भकरण भट सो रह सोय ब्रह्म के शाप ।
त्यहि के जागे बिन केहू बिधि दूरि न होय दुःख की दाप ॥
शोचि बतावो अब मन्त्रिहु यह कब जागि है मोर प्रियभाय ।
अहै भरोसा भल जाको म्वहिं नर कपि जाय सहज महँ खाय ॥
हाथ जोरि कै कह मन्त्रिन तब सुनिये महाराज लङ्केश ।
तुम्हरे भ्राता के जागन महँ अबहीं एक मास है शेश ॥
सुनि कै निश्चरपति बोल्यो तब छाई बिपति लङ्क महँ आज ।
काह बनाई पुनि जागी तौ ज्यहि शिर अटकि रहा सबकाज ॥
देर न लावो लैजाओ भट अबहीं बेगि जगावो जाय ।
अस कहि योधा बोलवाये बहु आये दश सहस्र समुदाय ॥
चले जगावन कुम्भकरण कहँ रचे उपाय तहाँ अस जाय ।
भक्ष्य पदारथ किय संचय बहु महिषा मेष मृगादिक लाय ॥
मदिरा पूरित घट कोटिन अरु सुन्दर पुष्प सुगन्धित हार ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कुंकुम चन्दन अरु कुरङ्ग मद गूगुल धूप आदि उपचार ॥
भेरि दमामे डफ ढोलक अरु नर केहरी शंख करनाल।
कीन उपस्थित बहु बाजन तहँ जिन महँ होत शब्द बिकराल ॥
यहि बिधि सामा एकत्रित करि गे सब कुम्भकरण के धाम।
त्यहि की शोभा कहि गावै को जाय न बरणि जौन इतमाम ॥
सुन्दर सुबरण को मन्दिर बर बिस्तृत छुयेलेत आकास।
मेरु शृङ्ग सम लसैं कँगूरे परिख गम्भीर तीर चहुँ पास ॥
बने झरोखा अरु नोखा बहु तिन महँ जड़े जवाहिरलाल।
यूप अनूपम बर मणियनके रबि शशि सरिस ज्योति सबकाल ॥
ध्वजा पताका बहु रङ्गन के शृङ्गन उपर रहे फहराय।
नील शैल सम त्यहि मन्दिर महँ सोवत कुम्भकरण अतिकाय ॥
श्वास नासिका सों निकसत जो मानहुँ प्रलय समय की बाय।
द्वार सामुहें भट पैठैं जो लागत श्वास जायँ उड़ि भाय ॥
लेय निशाचर भरि श्वासा जब तब वहि श्वास साथ उड़िजाय।
नासा अन्दर गिरि कन्दर सम जायँ समाय रक्ष समुदाय ॥
चतुर निशाचर ढँग जानत जे जबहीं होय श्वास अवसान।
धँसैं तड़ाका तब मन्दिर महँ श्वास बचाय देहिं हरियान ॥
परे अचेतन भट सोवत सो जब मुख खोलि घोर जँभुवाय।
बिस्तृत गह्वर सम दरशै मुख देखत धीर जायँ भयखाय ॥
ताहि जगावन हित निश्चर गण लगे उपाय करन खगराय।
खोलि खोलि मुख घट मदिरा के दिये लगाय एक थल लाय ॥
पीबे खैबे की सामा जो ढेर लगाय दीन इकठाम।
कुंकुम चन्दन कस्तूरी लै लेपन लगे सकल बलधाम ॥
गन्धित फूलन की माला बहु दीन्ही कण्ठ माहिं पहिराय।
धूप जलायो बहु चारिहु दिशि कोउ २ ब्यजन डुलावत भाय ॥
लाग बजावन कोउ बाजन तहँ कौनौ करनलाग मृदुगान।
कोउ २ कर पग दाबन लागे जब नहिं जग्यो तौन बलवान ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

झांझ दमामा डफ ढोलक लै अगणित यातुधान हरियान।
लाग बजावन करि भीषणस्वर कान समीप लाग चिल्लान॥
तबहुँ न जाग्यो सो निकषासुत तब अस युक्ति कीन त्यहि ठाहिं।
अगणित कलशा भरि सुगन्ध के डारन लगे नासिका माहिं॥
भो अति निद्रावश निश्चर सो सुन्दर शीत सुगन्धहि पाय।
शङ्ख असंख्यन लै राकस तब लागे कान निकट धुधुवाय॥
महा भयंकर रव प्रकट्यो सो छायो धरा और असमान।
तबहुँ न जाग्यो कुम्भकरण भट मानहुँ पर्‍यो मृतक बिनु प्रान॥
अगणित मेढ़ा अरु बोकरा पुनि लैलै भरे नासिका माहिं।
क्षणो न ठहरे ते एकौ तहँ उड़ि उड़ि सकल दिगन्तर जाहिं॥
कोटिन यतनै यहि भाँतिन करि निश्चर हारि गये खगराय।
पै बिधि बरते सो राकस भट सोवत रह्यो अधिक सुखपाय॥
तब सब निश्चर गण रावण पहँ भाषत भये वृत्त इमि जाय।
भाय तुम्हारो प्रभु जागत नहिं थाके हम करि अमित उपाय॥
आयसु दीन्ह्यो पुनि रावण ने जाय कै अस्त्रन करहु प्रहार।
लैलै अगणित अस्त्र शस्त्र तब आये रक्ष तासु आगार॥
शङ्क त्यागिकै त्यहि निश्चर पर लगे प्रहार करन हथियार।
बहुतक उछरैं चढ़ि छाती पर कोउ कोउ पकरि घसीटैं बार॥
हनि हनि मारैं शेल शूल बहु मुदगर मुशल गदा की घात।
लातन घूंसन सों मारैं कोउ सणशी पकरि घसीटैं गात॥
भरि भरि सहसन घट पानी के कानन माहिं देत हैं नाय।
तबहुँ न जाग्यो सो राकस भठ यहौ उपाय ब्यर्थ भो भाय॥
भाषि महोदर समुझायो तब आनहुँ सहस मत्त गजराज।
मड़नी माड़ौ कुम्भकरण पर तौ सधि जाय चहै कछु काज॥
धाये निश्चर हथिशाला कहँ सहस मतङ्ग लयाये जाय।
लागे मर्दन कुम्भकरण तन चढ़ि चढ़ि अङ्ग अङ्ग परभाय॥
कोउ पायँन पर कोउ हाथन पर कोऊ रहे हृदय पर धाय।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

टक्कर मारत कोउ माथे महँ बहुतक ग्रीवा रहे दबाय॥
बहु सुख पायो कुम्भकरण तब अङ्ग मरोरि लाग जमुहाय।
जागि उघार्‌यो द्वउ नैना तब डकरत उठ्यो निशाचर राय॥
पुनि पुनि जृंभत मुख पसारिकै मानहुँ मेरु कन्दरा आय।
ज्वलित हुताशन सम नैना द्वउ दरशत महा भयङ्कर काय॥
कुशल पूँछि कै बड़भाई की उठ्यो तड़ाक सेज को त्यागि।
दूत सिधारे तब रावण ढिग कह्यो कि भाय पर्‌यो तुव जागि॥
कह्यो खुशी ह्वै दशआनन तब लावो भाइहि बेगि बुलाय।
आय कै दूतन तब ताके ढिग दशमुख कथित वृत्त कहगाय॥
करि मुख मज्जन कुम्भकरण तब माँग्यो खान पान सामान।
भक्ष्य पदारथ लै बीरन तब दीन लगाय राशि परमान॥
मदिरा पूरित द्वै हजार घट करिगो एक श्वास महँ पान।
महिष मृगादिक मेढ़ादिक पशु लागो पकरि पकरि कै खान॥
राशि राशि पशु द्वै घटिका महँ भक्षे कुम्भकरण बलवान।
क्षुधा बिगत भै तब हर्षित ह्वै बोल्यो बीर सहित अभिमान॥
तुम सब आयो क्यहि कारण मिलि कुसमय मोहिं जगायो आय।
संकट आयो कह लङ्कापर शंकित कैस निशाचरराय॥
यहि क्षण मोरे मन आवत अस सुरपति आय कीन संग्राम।
होत पराजित बार बार शठ बैठत नहिं चुपाय निजधाम॥
इन्द्र मूढ़ की का गनती है यदि सामुहें आव मम काल।
एक कौरकरि त्यहि भक्षौं हठि इतना बचन करौ तुम ख्याल॥
क्षण महँ नाशौं मैं तीनिहुँ पुर सुर सब हनौं समर ललकारि।
सुनि इमि बानी कुम्भकरण की कह यूपाक्ष माथ महिधारि॥
रिस ना करिये सुरनायक पर हैं निर्दोष देवगण झारि।
आय लङ्क महँ यहि औसर पर नर बानरन मचाई रारि॥
सन्मुख लोहा लै तिनहिन ते जूझे बड़े बड़े बलवान।
खाली लङ्का भै बीरन बिन इतना बचन करौ परमान॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तुम्हरे जीवत लङ्कापुर महँ असकै रही आपदा छाय ।
बाट तुम्हारी सब देखत हैं चलिये जहाँ निशाचरराय ॥
कुम्भकरण भट सुनि बानी इमि बोल्यो बैन नैन करि लाल ।
प्रथम मारिकै नर बानर पुनि ऐहौं जहां भ्रात दशभाल ॥
अस कहि कोपित ह्वै उद्भट भट चाह्यो चलन युद्ध के काज ।
आय महोदर तब रोंकत भो अबहिं न जाउ समर महराज ॥
विना मन्त्रणा रण वाजिब नहिं अनुचित सदा कहैं मतिमान ।
चलौ बोलावत हैं लङ्कापति करिये द्रुत पयान बलवान ॥
यह सुनि थँभिगा तब निकषासुत कीन्ह्यसि फेरि मद्य को पान ।
खायसि अगणित पशु आछीबिधि पुनि नृप सभाकीन प्रस्थान ॥
ऊंच कंगूरा सब लङ्का के तिनते ऊंच पर्बताकार ।
महा भयंकर तन निश्चर को दर्शत नीलमेरु अनुहार ॥
मग महँ गमनत लखि दूरिहि ते गे बँदरन के होश उड़ाय ।
युद्ध बासना सबहिन छाँड़ी चहुँ दिशि भगे चित्त भयखाय ॥
देखि बिभीषण समुझायो तब बँदरन ठाढ़कीन गोहराय ।
तबहिं बिभीषण सों कौशलपति पूछन लगे समीप बोलाय ॥
शैलराज सम यह निश्चर को महा दुरन्त परत दिखराय ।
यहिते लरिकै जय पाई को सो तुम हमैं देउ बतलाय ॥
कह्यो बिभीषण हे करुणानिधि यहिकर कुम्भकरण है नाम ।
मध्यम भ्राता यह जानहु मम अतिशै धीर बीर बलधाम ॥
गदा हाथ लै यदि संगर महँ यह निज बिक्रम करै प्रकास ।
एक महूरत महँ तीनिहुँ पुर यह करि सकै नाश अनयास ॥
पैदा होतहि यह भूँखाभा देख्यसि इत उत दृष्टि चलाय ।
रहैं मेहरिया जो स्वावरि महँ तिन कहँ पकरि पकरि गा खाय ॥
युद्ध देवतन ते कीन्ह्यसि बहु रिस करि हन्यो बज्र सुरराय ।
बज्र लीलिगा सो सहजे यह झपटा फेरि क्रोध करि धाय ॥
दांत उखार्यसि ऐरावत को हन्यसि तड़ाक इन्द्र उर माहिं ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

गिरे विवश ह्वैकरि ऊपरते अमर प्रभाव मरण भो नाहिं ॥
तीनिहुँ भाई रघुराई हम तपबन करन लगे तप जाय।
ध्यान लगावा बहु बत्सर लगि बिधि तब मुदित पहूँचे आय ॥
पहिले रावण को दीन्ह्यों बर पुनि करि कृपा अमर म्वहिं कीन।
कुम्भकरण के ढिग आये फिरि भे तब सहसुरेश सुरदीन ॥
शोचन लागे अस हिरदय महँ लखि २ कुम्भकरण को गात।
बिना बरहिके दुखदाता यह बर लै करै विश्व की घात ॥
यहिबिधि सम्मत करि देवन तब कीन्ह्यो अस उपाय रघुराय।
कुम्भकरण की मति फेरन हित प्रेर्यो देवि शारदहि ध्याय ॥
कुम्भकरण के कण्ठ स्थित ह्वै वानी दीनि तासु मति फेरि।
कह्यो बिधातैं बर माँगन को माँग्यसि नींद मास षटकेरि ॥
एवमस्तु तब बिधि दीन्ह्यो कहि तुरतहि भयो नींदवश नाथ।
हाल जानिकै यह रावण तब बिधि ते कह्यो जोरि द्वउ हाथ ॥
यह बर दीन्ह्यों कह स्वामी यहि करिये दया नाति निज जानि।
नियम बतावो यहि जागन को इतनी बिनय लेहु मम मानि ॥
कह्यो ब्रह्म तब सुनु लङ्कापति यह जागि है मास षट बादि।
जीति न पैहै कोउ रणमहँ यहि राख्यो कहा मोर तुम यादि ॥
यहि के सन्मुख कोउ ह्वै है ना यावत जगत सुरासुर झारि।
जबहिं जागिहै यह कुसमय महँ तबहीं जाय मृत्यु वशमारि ॥
इमि समुझायो बिधि रावण कहँ पुनि चढ़ि हंस गये निजधाम।
भयो नींद बश यह तुरतै तब मानहुँ सत्य बचन श्रीराम ॥
काँधे धरिकै द्वउ भाई यहि घर महँ लाय दीन पौढ़ाय।
आजु जगायो यहि कुसमय महँ ह्वै अज्ञान निशाचरराय ॥
आपु चिन्तवन उर करिये जनि यहिबिधि ब्रह्म कथन अनुसार।
प्रभु के तीक्षण शर जालन ते होई आज अवशि संहार ॥
बात बिभीषणकी सुनिकै इमि अति मन मुदित भये भगवान।
रचि प्रतिपालैं अरु घालैं जग ते प्रभु मनहुँ भये अनजान ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जाय पहूँच्यो उत संसदि महँ वह भट कुम्भकरण हरियान।
माथ नवायो बड़भ्राता को पगन प्रणाम कीन सबिधान॥
आशिष दैकै दशकन्धर त्यहि हृदय लगाय लीन हर्षाय।
बाँह पकरिकै अति सनेह सों आसन अर्ध लीन बैठाय॥
गिरिपर बैठे राहु केतुसम शोभित भये उभय बलवान।
लखि संदेहित तब रावण को लाग्यो कुम्भकरण बतलान॥
उतरी आभा शशिआनन की मनमहँ रही मलिनता छाय।
कौन बातते संदेहित तुम भ्राता हमैं देव बतलाय॥
हमरे अच्छत तुम चिन्तित अस तौ म्वहिं जियनकेर धिरकार।
यह तुम जानत मैं संगर महँ जीत्यों इन्द्र अनेकन बार॥
आयसु पावों यदि भ्राताकर अबहीं नाशकरौं संसार।
शोखौं बारिधि इक श्वासा महँ चर्बण करौं चन्द्र रबि तार॥
पीवों पानी सम पावक कहँ नाशौं सकल सुरन के प्रान।
मींजि सुमेरुहि दुउ लातन सों करिहौं आजु रेणु परमान॥
रसा तानिकै दुउ हाथन सों देहुँ बहाय रसातल माहिं।
कालदण्ड सम भुजदण्डै मम बलमहँ कबहुँ बिपोची नाहिं॥
कौनी गनती महँ बानर नर जिनते गयो शङ्क तुम खाय।
करौ न चिन्तन चित रञ्चक तुम मैं देखिहौं तासु ब्यवसाय॥
पै तुम इतना बतलावो म्वहिं इनते भा बिवाद क्यहि भाँति।
कुम्भकरण की सुनि बानी इमि बोलत भयो अमर आराति॥
अबलागि सोवत रहे बन्धव तुम हमपर रही बिपति बड़िछाय।
तीनिहुँ भाइन बिच भगिनी इक प्यारी शूर्पणखा बहुभाय॥
जबते बिधवा भै तबते वह शोकित रहत सदा सब काल।
भई लालसा अस ताके उर बनबासि पुजौं शम्भु शशिभाल॥
बोलि पठायों खरदूषण कहँ मैं तब तासु आश असजानि।
सहस चारि दश दै निश्चर सँग रक्षक नियत कीन अनुमानि॥
पार समुन्दर के दण्डक बन तहँ सहसैन दीन पठवाय।
CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

रही जाय सो त्यहि जङ्गल महँ आगे कहौं काह अबभाय ॥
जानिजात नहिं गति ईश्वर की करिबो काह करत धौं काह।
नगर अयोध्या इक बस्ती है दशरथ तहां बिदित नरनाह ॥
चारि पुत्र भे तिन दशरथ के तिन महँ ज्येठ राम कुबिचारि।
बाल अवस्था महँ मार्‍यो ज्यहिं सुतसह प्रबल ताड़का नारि ॥
गाधिसुवन की मख रक्षा करि पहुँचो जनकपुरीमा जाय।
चाप बिभञ्ज्यसि प्रभु शंकर को गर्ब गवाँय गये भृगुराय ॥
भर्थहि राजा किय दशरथ ने घरते काढ़िदीन बन ताहि।
अनुज लक्ष्मण अरु युवती सह आयकै बस्यो पञ्चवटि माहिं ॥
फूल लेन को इक बासर गइ बहिनी शूर्पणखा त्यहि ठाम।
लषण हँसौआ त्यहिसन कीन्ह्यों लीन्ह्यों काटि नाक अरु कान ॥
हाल पायकै खरदूषण यह चौदह सहस सैन लै साथ।
गेलड़िबे हित तिन बीरन कहँ हन्यो ससैन एक रघुनाथ ॥
ममढिग आई सुपन्याखा तब सबरो हाल कह्यसि बिलखाय।
देखि दुर्दशा तब बहिनी की मोरे हृदय क्रोध गो छाय ॥
कोपित ह्वैकै त्यहि कारण ते मैंहूं हर्‍यों राम कै नारि।
मुख्य हेतु यह कहि गायों मैं बाढ़ी यही बात ते रारि ॥
खोजत सीता कहँ भाई सह आये ऋष्यमूक स्वइ राम।
कीनि मिताई सुग्रीवा ते पठयो बालि मारि यमधाम ॥
कीन सुकण्ठहि किष्किन्धाधिप बानर सकल भये आधीन।
आज्ञाकारी कपिनायक अरु भल्लुक मिला एक मतिहीन ॥
केतक छल बल शठ जानत सो सम्मत वहै देत सबकाल।
पुनि सिय खोजन हित बानरपति पठये चहूँ ओर कपिभाल ॥
तिनमहँ अतिही खल बानर इक छल बल राशि नाम हनुमान।
सिन्धु नाँघिकै सो आवा इत कीन्ह्यसि महा उपद्रव ठान ॥
सिया निहार्‍यसि बाग उजार्‍यसि मार्‍यसि अछै आदि बलवान।
शङ्क न धार्‍यसि पुरजार्‍यसिखल टार्‍यसि सदल मोर अभिमान ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

लौटि राम के ढिग पहुँचा सो भाष्यसि लङ्कभेद सब जाय।
सेतु बाँधि के तब वारिधि महँ उतरे सैन सहित द्वउ भाय॥
लङ्क किनारे करि डेरा तिन चारिहु द्वार लीन रुंधवाय।
होत लड़ाई अब तिनहिन सँग जूझे बड़े बड़े भट भाय॥
भीरु बिभीषण महा कुबुद्धी फेरन सिया मोहिं सिख दीन।
पुनः लाज तजि कुलद्रोही ह्वै रिपुकी शरण जाय त्यहिं लीन॥
बिपतिसिन्धु महँ मैं डूबत अब कछु न उपाय दीख जब भाय।
तुम कहँ सोवत ते कुसमय महँ लिह्यों जगाय तुम्हैं भयखाय॥
सुनिकै बातैं दशकन्धर की बोल्यो कुम्भकरण बलवान।
बैन तुम्हारे सुनि भ्राता म्वहिं यह आश्चर्य परत सब जान॥
कस साधारण नर राघव हैं प्रभुता कहत जासु अस भ्रात।
शुष्कपत्र सम गिरि दीरघ बहु बारिधि सलिल माहिं उतरात॥
अपने गुणते बश कीन्ह्यो ज्यहिं बनपशु भालु कीश समुदाय।
क्यहि बिचार ते त्यहि मानव तुम मान्यो हिये निशाचरराय॥
नारद मुख ते सुनि राख्यों मैं श्रीपति जक्कनाथ कर्तार।
प्रबल निशाचर कुलध्वंसन हित रघुकुल माहिं लेहिं अवतार॥
कर्म अमानुष ये रघुपति के सुनि अस होत मोहिं अनुमान।
बंश नशैहै अब निश्चर को नारद कथन सत्य परमान॥
यद्यपि मानौं मन याही मैं की ये राजपुत्र रघुराज।
तदपि प्रशंसा के लायक यह कीन्ह्यों नहीं भ्रात तुम काज॥
अब म्वहिं निश्चय यह मालुम भा की तुव सभासदन के माहिं।
कार्य कुशल अरु दूर प्रदर्शी एकहु योग्य पुरुष है नाहिं॥
बिना बिचारे यदि भ्राता तुम कीन्ह्यों अति अयोग्य यह काज।
तौ सैनागृह सिन्धु पार फिरि काहे न नियत किह्यो महराज॥
उतर किनारा यदि सागर कर रक्षित होत भली बिधि भाय।
सेतु सिंधु महँ तौ बाँधत किमि पहुँचत लङ्क माहिं किमि आय॥
रह्यो सहायक नहिं कोऊ जब बन बन फिरत रहे द्वउ भाय।
CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तब तुम सेना सँग अगणित लै काहेन तिन्हैं सँहार्‌यो जाय॥
शूर्पणखा जब खरदूषण कर तुम कहँ निधन सुनायसि आय।
तबहीं तुम कहँ अस वाजिब रह करत्यो समर सामुहें जाय॥
बीर कर्म सो तजि दीन्ह्यो तुम औ डरपोक पुरुष की नायँ।
तिन की तिरिया हरिलायो इत दीन्ह्यों कुलै कलङ्क लगाय॥
पापी पूरुष निज पापन कर ततकालही जात फल पाय।
बिना बिचारे हित अनहित यह कीन्ह्यों काज निशाचरराय॥
कहा न काहू कर मान्यो तुम ठान्यो हृदय माहिं अभिमान।
नीति बिसार्‌यो हठि स्वामी तुम जासे लहत भूप कल्यान॥
अनुज बिभीषण सिखदीन्ह्यों भलि सुन्योन तौन सीख हितमानि।
मारि निकार्‌यो त्यहि घरहू ते कहि कहि अनादरित दुर्बानि॥
काठ के भीतर की आगी जस काठहि जारि करत है क्षार।
तैसे राजा को नाशत है यह अभिमान लङ्कभर्तार॥
कहा हमारा प्रभु मानहु यह रामहिं मनुज न करौ बिचार।
छिपे हुताशन सम राखी महँ जानहु राम जक्त कर्तार॥
कुम्भकरण की सुनि बानी इमि बोल्यो कुपित निशाचरराय।
मोहिं सिखाउब त्वहिं वाजिब नहिं पद महँ लगौं तोर बड़भाय॥
अहंकार बश या जड़ता बश या भ्रम आनि किह्यों अस काज।
बिना बिचारे करि डार्‌यों जो शोचब ताहि अकारथ आज॥
प्रीति तुम्हारी यदि हमपर है तौ संदेह छाँड़ि यहि काल।
करौ जो करिबे कहँ वाजिब है रिपु हति हरौ मोर दुखजाल॥
होय सहायक जो संकट महँ सोई सुहृद भाय जग माहिं।
निन्दा करिकै दुख देवै जो गणना तासु सुहृद बिच नाहिं॥
जो तौ त्वहिंमा कछु पौरुष है तौ हरु बिपति मोरि रिपु मारि।
बकबक करिबेको औसर नहिं सोवहु जाय फेरि चुप धारि॥
बैर बढ़ावा मैं अपने बल लेहौं समर शत्रु ललकारि।
अब लग देखत बलबीरन को कोधौं कैसि मचावत रारि॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

क्रोधित लखिकै इमि भ्राता को बोल्यो कुम्भकरण कर जोरि।
हे प्रभु गुस्सा तजि हिरदै ते तनि सुनि लेउ बिनै इक मोरि॥
कहब तुम्हारो सब सांचो यह मिथ्या तनिक बात कछु नाहिं।
प्यारे भाई वइ दुनियाँ महँ करैं उबार जौन दुख माहिं॥
पर यह बिपदा यहि औसरकी केहू बिधि न सकत हम टारि।
मुनिकी बानी को सुमिरण करि संशय देत करेजा जारि॥
मो बिचार महँ अस आवत है त्रिभुवननाथ नाथ रघुनाथ।
कर्म अमानुष हैं उनके सब करहु बिचार बुद्धि के साथ॥
सेतु पर्बतनको सागर महँ बाँधि न सकै मनुज क्यहु भाँति।
हन्यो ताड़का इक शायकते है यह बात जक्त महँ ख्याति॥

स०। गौतम नारि उधारि दई जिन डारि पदाम्बुज की रज वैसे।
मारि निशाचर तीनि करोरि सँहारि सुबाहु रख्यो मुनि भैसे॥
शंभु शरासन भञ्जन कै भृगुनायक गर्ब गिरायहु जैसे।
है सबबात प्रसिद्ध तुम्हैं फिरि जानब सो प्रभु मानव कैसे॥

कर्म बानरहुके चिन्तन करि अस मम हृदय होत अनुमान।
सिन्धु उलङ्घन करि जारब पुर सुर बिन करि न सकै कोउ आन॥
ताते मानहुँ यह कहना मम आनहुँ हृदय अपन कल्यान।
दुष्टनिकन्दन रघुनन्दन कहँ जानहुँ अविनाशी भगवान॥
अबहुँ तुम्हारो कछु बिगरो नहिं सियहि चढ़ाय सहादर यान।
चलिकै सौंपो रघुनायक कहँ अविचल होय राज श्री प्रान॥
कुम्भकरण को सुनि भाषण इमि रहि कछुकाल मौन दशभाल।
रिस बश नैना अरुणारे करि पुनि अस कहन लाग खगपाल॥
बात नदानी की भाषत तैं यहि क्षण कहाँ अहै तुव ध्यान।
कहा तुम्हारा यदि मानहुँ मैं जानहुँ सत्य तोर अनुमान॥
निश्चरकुल के संहारन इत जो इन लीन मनुज अवतार।
करब मित्रता त्यहि के सँग महँ वाजिब अहै कौन परकार॥
हम सम सुर विजयी बीरन कहँ सब दिन बाञ्छनीय यह भाय।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

रण महँ सन्मुख बिश्वनाथ के त्यागहिं जाय आपनी काय॥
नर शरणागत ते नीको बरु त्यागै काय जहर को खाय।
जानि परी अब मति तोरिउ म्वहिं तोरे हृदय बसो भय आय॥

स०। काज न आज कछू बकवादको पाँय पसारि कै सोवहु जाई।
आपुहि जाय सँहारि हौं मैं नर बानर शत्रु चमू यत आई॥
होत न पारिख बेसमयापरे तोरिहु जानि लियों मनुसाई।
मोसम कौन बली जग में ज्यहिं कालहु पै करबाल चलाई॥

अतिशय क्रोधित लखि भ्राता को कुम्भकरण अस कीन बिचार।
हित की बानी यहु मानी ना होइहि नीच मीच आहार॥
जाय सामुहें बिश्वम्भर के रण करि तजौं महूं अब प्रान।
योनि छुटावों यह निश्चर की पावों सहज मुक्ति पन्थान॥
अस बिचारिकै फिरि बोलत भो रिस ना करहु लङ्क महिपाल।
मो कहँ शङ्का नहिं लरिबे की हौं मैं प्रबल काल को काल॥
अबहिं जायकै रणबसुधा महँ नर बानरन करौं आहार।
बैठो सुखते तुम मन्दिर महँ चिन्ता देहु चित्त ते टार॥
अस कहि तुरतै उठि ठाढ़ो भो निरखे जाहि धीर भय खाय।
मानहुँ निश्चर को धारे तनु निश्चय नील मेरु यह आय॥
हाथ पकरिकै तब रावण ने अपने निकट लीन बैठाय।
हँसिकै बोल्यो अभिमानी पुनि करिहै अब सहाय तैं भाय॥
अस कहि रण को सब्ब अभरण लै आपहि सजै लाग त्यहिगात।
शोभा त्यहि की कहि गावै को भैकर काल सरिस दरशात॥
पहिरि जाँघिया करिहाँये महँ सुंदरी जड़ी रतन के जाल।
कण्ठम कण्ठा गज मुक्तन को उरमहँ लसै मणिन की माल॥
कवच सनाहे सजि अङ्गन महँ लोहेटोप शीश पर धारि।
पहिने कुण्डल कल कानन महँ दीपित सूर्य चन्द्र अनुहारि॥
मुकुट मनोहर धरि माथेपर सौगुन अधिक भानते भान।
कमर लपेटा दृढ़ फेंटा कसि सो बासुकी सरिस दर्शान॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बाहु बजुल्ला कर कङ्कण बर अंगुरिन स्वर्णमुद्रिका धारि।
सज्यो शरीरमा इमि भीमाकृति ज्वलित कृशानुकेरि अनुहारि॥
गदा लोहकी लै हाथे महँ गमन्यो भाय पगन शिरनाय।
चल्यो अकेला तकि संयुगमहि राजत जहाँ राम रघुराय॥
ताके चलिबे ते हाली महि करवँटि गये कमठ अरु नाग।
सुरगण शङ्कित भे देखत त्यहि नभ महँ छाँड़ि बिमानन भाग॥
जात अकेले लखि भाई को सुभट बोलाय निशाचरराय।
अगणित सेना अरु सेनापति पठये समरभूमि सजवाय॥
युद्धभूमि महँ चलिआयो जब वह निकषाको पूत जुझार।
भये सशंकित सब बानरगण यह को आयो काल अनुहार॥
तिन्हैं बिभीषण समुझायो कहि पुनि चलिगयो तासु के पास।
नाम आपनो कहि नायो शिर गायो सकल पूर्व इतिहास॥
हृदय लगायो त्यहिं भाई को रघुपति भक्त जानि प्रियलाग।
पुनि समुझायो लघुभ्राता को भैया जग्यो तोर अब भाग॥
धन्य बिभीषण तव बुद्धी को कहँलग करौं तोर यश गान।
भये निशाचर कुलभूषण तैं यहिते बढ़ि न बात कछु आन॥
किये उजागर तैं निश्चर कुल पाये दयाभवन भगवान।
कर्म बचन मन भजु सीतापति यामहँ होय तोर कल्यान॥
मोरे आगे ते जावहु अब निज पर सूझ मोहिं अब नाहिं।
भयों कालबश अस जानहु तुम अब मैं युक्त होत रणमाहिं॥
फिर्यो बिभीषण सुनि बानी इमि आयो जहाँ राम भगवान।
नाथ भूधराकृति गर्जत यह आवत कुम्भकरण बलवान॥
कहा बिभीषणको कानन सुनि धाये किल किलाय कपि भालु।
लैलै हाथन महँ पादप गिरि चहुँदिशि घेरिलीन जनु कालु॥
शिला शृङ्ग अरु तरु आदिक लै मारन लगे ताहि खगराय।
टरै न टारे रण पुहमी ते कौतुक देखि देखि मुसक्याय॥
जस मदार के फल लागेते हाथी अङ्ग न आवै घाव।
CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तैसिय गति है कुम्भकरण की बाढ़त जासु चौगुनो चाउ॥
हन्यो मुष्टिका तब मारुतसुत धरती गिर्यो मूर्च्छा खाय।
पुनि उठि मार्यो हनुमन्ता कहँ घुर्मित पर्यो मुहँभरा जाय॥
पटकि पछार्यसि नल नीलहि पुनि मार्यासि झपटि२ भटभूरि।
भागि बँदरवन की सेना तब सबके हृदय गयो भयपूरि॥
घायल कीन्ह्यसि युवराजहु कहँ दाब्यसि काँख माहिं कपिराज।
चला तड़ाका उड़ि अम्बर कहँ सुनिये अग्रचरित खगराज॥
गिरिजा रघुपति रण खेलत अस खगपति यथा सपेलवन साथ।
भौंह तरेरे ज्यहि ईश्वर के काँपत काल नवावत माथ॥
ताहि लराई अस सोहत नहिं पै निज भक्त उधारन हेतु।
चरित अनूपम बिस्तारत जग दीनदयाल भानुकुल केतु॥
जागी मूर्च्छा हनुमन्ता कै खोजन तबहिं सुकण्ठै लाग।
इत उत कतहूं लखि पायो ना तब संदेह हिये महँ जाग॥
उत कपिराजहु कै मूर्च्छा गै आयो निपुचि काँखते ज्वान।
पुनि धरि दांतन कुम्भकरण के लीन्ह्यों काटि नासिका कान॥
वहिंतौ जाना की मरिगा यहु यहिं जब कीन ऐस उत्पात।
काटि नासिका श्रुति भाग्यो पुनि तबभा कुपित निशाचरजात॥
धावा कपिपतिके पकरन कहँ कपिपति चल्यो गगनदिशि धाय।
पाउँ पकरिकै महि पटका त्यहिं विक्रम जासु बरणि ना जाय॥
उठे तड़ाका सुग्रीवौ पुनि त्यहि उर हन्यो मुष्टिका धाय।
पुनि चलिआयो रघुनन्दन पहँ जय जयकार करत हर्षाय॥
कुम्भकरण ने अनुमान्यो तब काट्यसि नाक कान कपिराय।
ग्लानि मानिकै फिरि लौटतिभा गुस्सा अङ्ग अङ्ग गइ छाय॥
सहज भयंकर बिन नासा श्रुति देखत भई बानरन त्रास।
पुनि रघुनायक की जय जय करि धाये एक बार सहुलास॥
तरु अरु पाथर लै डारे बहु घेर्यो चहूं ओरते ताहि।
सन्मुख धावा तब निकषासुत भट महँ प्रथम लीक है जाहि॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

पकरि करोरिन कपि मेलै मुख शोभा तासु बरणि ना जाय।
मेरुकन्दरा सम ताको मुख मानहुँ टीड़ी रही समाय॥
कोटिन मींजे धरि देही महँ कोटिन मींजि मिलावै क्षार।
आनन नासा अरु काननमग निकसि पराहिं भालु कपियार॥
युद्ध बिरुद्धा इमि राकस भट लीला चहत मनहुँ संसार।
भागी सैना कपि भालुन की सहि ना सके निशाचर मार॥
कोउ न लौटै गोहराये ते सूझ न नैन सुनै नहिं कान।
भूलि चपलता गै लरिबे की भागे अपन अपन लै प्रान॥
बानर सैना बिड़राई सब निकषा सुवन बीर बलवान।
सुनि अस निश्चर दल धायो बहु लै लै अस्त्र शस्त्र हरियान॥
लख्यो तमाशा यह रघुपति ने रिपुदल प्रबल पहूंच्यो आय।
कपिपति लक्ष्मण ते भाष्यो प्रभु तुम सब सैन सँभारहु भाय॥
मैं अब खल दल बल देखतहौं अस कहि ठाढ़ भये उठि राम।
अक्षय तर्कस करिहाँयें महँ करमहँ धनुषबाण अभिराम॥
सिंह ठवनि सों रण गमनत भे जिनकी शोभा बरणि न जाय।
प्रथम शरासन टंकोर्‌यो प्रभु रिपुदल बधिर भयो सुनि ताय॥
तानि शरासन पुनि कानन लग छाँड़े लक्षबान खरसान।
काल सर्प सम ते धावत भे फहरत चले जात असमान॥
खलभलि परिगै रिपु सेनामहँ जूझन लगे अमित बलवान।
कर पग काहू के न्यारे भे मूड़न केर लाग खरिहान॥
सौ सौ टुकड़ा भे देहिन के औ रुण्डन के लाग पहार।
घुर्मि घुर्मि कै भट घायल ह्वै धरती गिरैं डारि हथियार॥
हलुके घायन के योधा गण उठि उठि फेरि मचावैं मारु।
अपन परावा कछु सूझै ना धरु धरु मारु मारु ललकारु॥
शायक लागे ते गर्जैं कस मानौं सिन्धु रह्यो हहराय।
बहुतक भागैं शर आवत लखि तीक्षण चोट सही ना जाय॥
बिना मुण्ड के रुण्ड अनेकन धावैं मारु मारु गोहराय।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

एक मुहूरत महँ सीतापति रिपुदल मारि दीन अधियाय॥
शोचन लाग्यो तब निकषासुत इन रण हने निशाचर भारि।
सिंह कि नाईं तब गर्जत भा शोर कठोर घोर हहकारि॥
बड़ बड़ पर्बत लै धावा तब डारयसि कपि समूह महँ आनि।
पर्बत आवत लखि कौशलपति रजसम कियो शायकनि भानि॥
कोपि शरासन संधान्यो पुनि छाँड़े अति कराल बहुबान।
कुम्भकरण के तन लागे ते जनु घन बिज्जु बृन्द लपटान॥
शोणित बरसै तन कारे ते शोभा तासु कही ना जाय।
मानहुँ कज्जल के पर्बत ते झरना झरत गेरु के भाय॥
रह्यो न एकौ अँग बाकी अस लाग्यो जहँ न बान को घाव।
तबौं न मुर्क्यो रण पुहमी ते नेक न शङ्क हृदय महँ लाव॥
बिकल जानि कै त्यहि धाये कपि लै लै शिलाखण्ड तरु पानि।
पास पहूँचत मुसक्यानो सो धावा कपिन ओर रिसआनि॥
कोटिन बाँदर गहि पटकै महि औ दशभाल दुहाई खाय।
मत्त मतङ्गम सम ताको लखि भागे भालु कीश समुदाय॥
बिकल पुकारत अति आरत स्वर याक्षण राखिलेहु भगवान।
है दुकाल सम यह निश्चर खल कपि कुल देश करत वीरान॥
करुणा सागर बल आगर प्रभु मारौ याहि करौ जनि बार।
नातरु यहि के रण सन्मुख महँ भला न देखि परत कर्तार॥
आरत बानी सुनि बँदरन की धनुष सुधारि बान कर धारि।
चले सकोपित त्वर सीतापति सैना सकल पछारी डारि॥
तानि शरासन गुन कानन लग इक शत बान कीन संधान।
सो हनि मारे कुम्भकरन तन छूटत तीर शरीर समान॥
रिस करि धावा शर लागत खन मानहुँ महाभयानक काल।
डगमग बसुधा डोलन लागी कम्पे कमठ शेष बेहाल॥
शैल उपाट्यो इक दक्षिणकर डारी भुजा काटि सो राम।
ज्वलित हुताशन सम धावा पुनि लै उत्तंग मेरु कर बाम॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

काटी पाटी महि सोऊ भुज प्रभु कौतुकी बिक्रमागार।
बाहु कटेपर कस लागै खल जस बिन पंख मन्दराकार॥
दृष्टि तिरीछी करि राघव दिशि ताकत नैन लाल बिकराल।
ग्रसा चहतहै जनु तीनिहुँ पुर अस भय दशा प्रगट खगपाल॥
मुख पसारि कै शठ धावा पुनि करि अतिघोर शोर चिग्घार।
सिद्ध देवता नभ त्रासित सब करत पुकार महाहहकार॥
भीत जानिकै तब देवन को दया समुद्र सन्त सुखधाम।
तानि शरासन गुन कानन लग किय संधान बान अभिराम॥
भरे अनेकन शर निश्चर मुख तदपि न गिस्यो भूमि बलवान।
धावा सम्मुख शर पूरित मुख मानहुँ काल इषुधि सह प्रान॥
तीक्षण शायक तब लीन्ह्यों प्रभु धरते भिन्न तासु शिर कीन।
गिस्यो सो रावण के आगे शिर देखत भयो मूढ़ अतिदीन॥
धाय धाय धर धसै धरा महँ तब प्रभु काटि कीन शतखण्ड।
तेज समान्यो प्रभु आनन महँ भयो अनन्द सकल ब्रह्मण्ड॥
भई अचम्भा मुनि देवन के हर्षित फूल रहे बर्साय।
बजे नगारा हहकारा करि जय जयकार शब्द रह छाय॥
गये देवता सब बिनती करि ताही समय देवऋषि आय।
गावन लागे गुण राघवके जय जय रमारमण रघुराय॥
जैसे आतुर प्रभु मास्यो यहि तैसे हतौ बेगि दशभाल।
अस कहि नारद बिधिलोकै गे शोभित समर भये खलकाल॥
दुष्ट निकन्दन रघुनन्दन प्रभु राजत समरभूमि सह सैन।
मनहुँ पराजित करि तीनिहुँ पुर रह्यो बिराजि चैन सह मैन॥
लसत स्वेदकण स्वच्छानन पर लोचन कमल फूलसम लाल।
दर्शत अङ्गन महँ शोणित कन शोभा कहि न जात खगपाल॥
सशर शरासन कर फेरत धरि शोभित चहूँओर कपि भालु।
ज्यहि बिधि जूझयो कुम्भकरण रण तुमते भाषि कहा सब हालु॥
सुर परितापी अति पापी खल निश्चर ताहि दीन निजधाम।
CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

गिरिजा वे नर निर्बुद्धी अति जो ना भजैं दयानिधि राम॥

इति श्रीभार्गववंशावतंसश्रीमन्मुंशीनवलकिशोरात्मजस्यश्रीमुंशीप्रयाग-
नारायणस्याज्ञाभिगामी।उन्नामप्रदेशान्तर्गतमसवासीग्रामनिवासी
पण्डितबन्दीदीनदीक्षितनिर्मितश्रीविजयराघवखण्डेलङ्काकाण्डे
कुम्भकरणबधवर्णनोनामपञ्चमोल्लासः॥ ५॥

ध्याय भवानी सुखदानी को बानी माय चरण हउ ध्याय।
शाका बाँका रण शूरन का गावत फेरि तोर बलपाय॥
गये दिवाकर जब अस्ताचल हुउ दल लौटि गये निजथान।
घनी लड़ाई भै बीरन ते जूझे समर अनेकन ज्वान॥
श्री रघुराया की दाया ते कपिदल बढ़त जात बल माहिं।
दावा लागे तिनु बाढ़ै जस शङ्का जिन्हैं काल की नाहिं॥
निशिदिन निश्चर खल छीजैं कस निजमुख धर्म कहे ज्यहिभाँति।
इतै हकीकति अस बीतति भै उत अब सुनौ उरग आराति॥
कुम्भकरण के रण जूझे की पाई खबरि निशाचर राय।
माथ पीटिकै बिलखन लाग्यो पुनि पुनि बन्धु शीश उरलाय॥
उर ताड़न करि तिरिया रोवैं ताको तेज विपुल बल भाखि।
महा उदासी भै लङ्का महँ धीर न जात हृदय महँ राखि॥
त्यहि क्षण आयो मेघनाद तहँ लखि परिताप युक्त निजबाप।
बिबिध कथा कहि समुझावत भो धारिय धीर हृदय महँ आप॥
काल्हि मंसई अवलोक्यहु मम बढ़िकै काह कहौं बहु बात।
इष्टदेव से बर पायों जो सो नहिं तुम्हैं सुनायों तात॥
निशा सिरानी यहि भाँतिन ते भयो प्रभात आनि हरियान।
लङ्का गढ़ के चहुँ फटकन पर अरुझे जाय कीश बलवान॥
भयो कोलाहल तब लङ्का महँ हाहाकार गयो अतिछाय।
प्रबल निशाचर दल सजिकै पुनि पहुँच्यो चहूं द्वारपर आय॥
मुर्चा जुटिगा रण शूरन का बर्सन लाग घने हथियार।
अपन परावा कछु सूझै ना चहुँदिशि मारु मारु ललकार॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

आपनि आपनि जय इच्छाकरि जीवन आश छोंड़ि बलवान।
लरैं सामुहें ते पछरैं ना माचो महाघोर घमसान॥
माया कीन्ही मेघनाद तब रथ चढ़ि गयो बीर आकास।
घोर गर्जना करि गर्जत भो सो सुनि भई कपिन उर त्रास॥
नाना अस्त्रन की बर्षा करि कीन्ह्यसि चहूँओर अँधियार।
शक्ति शूल असि अरु अगणित शर बरसै गदा परशु खरधार॥
पूरे बानन सों दशहू दिशि मानहुँ मघा नखत झरि लागि।
खलभलि परिगे कपि सैना महँ कायर खेत छोंड़ि कै भागि॥
मारु मारु धुनि सुनि वानरगण चहुँ दिशि देखैं दीठि पसारि।
मारन वाले को पावैं ना धावैं वृक्ष मेरु कर धारि॥
माया बशते शरपञ्जर करि छायसि दशौं दिशा महँ बान।
बच्यो न कौनौ थल लोपेदिन औघट घाट बाट हरियान॥
जायँ कहाँ कित कपि ब्याकुल बहु योधा सकल उठे घबड़ाय।
मानहुँ सुरपति के कारागृह परिकै मेरु रहे अकुलाय॥
अङ्गद हनुमतलौं बानर यत नल अरु नील आदि बलशील।
सबकोउ ब्याकुलभे औसर त्यहि जीवन आश दीनि उरढील॥
इत कपिसैना सब ब्याकुल करि फिरि उतगयो बीर घननाद।
जहां बिभीषण अरु बानरपति राजत शेष सहित उरगाद॥
अगणित बानन की बर्षा करि सब तन ताय दीन बहु घाय।
पुनि रघुनन्दन के सन्मुख ह्वै कीन्ह्यसि बाण बृष्टि झरिलाय॥
अहि ह्वै लागें शर छाँड़े जो फण फटकारि लैयँ फुफकार।
ब्याल फांस बश भे सीतापति स्वबश अनन्त एक अबिकार॥
बिबिध तमाशा करि मोहैं खल नटइव इन्द्रजाल करि भान।
सब सुखराशी अविनाशी प्रभु सदा स्वतन्त्र राम भगवान॥
आपु बँधायो रण शोभालगि दशा सो देखि दुखित भे देव।
सिद्ध मुनीश्वर सब त्रासित भे जानत जे न स्वामिको भेव॥
छूटिजात नर भव बन्धन ते जपि जिन रामचन्द्र को नाम।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सो प्रभु आवै कस बन्धन तर व्यापक विश्ववास भगधाम ॥
सगुण चरित ये रघुनन्दन के तर्कि न जाहिं बुद्धि मन बानि।
अस मन निश्चयकरि पण्डितजन रामहिं भजैं तर्क सब भानि ॥
यहिबिधि व्याकुल कपि सैनाकरि पुनि भा प्रकट दुष्ट घननाद।
अहंकार करि वहि औसरपर लाग्यो कहन मूढ़ दुर्वाद ॥
जामवन्त कह खल ठाढ़ोरहु सुनि अस महाक्रोध उरआनि।
भल्लुकपति ते अस भाषत भा तोरिहु मीच मूढ़ नगिचानि ॥
बूढ़ जानिकै खल छाँड़्यों त्वहिं लागे अधम प्रचारन मोहिं।
अस कहि तीक्षण शूल चलायासि चली सो जामवन्तके सोहिं ॥
करगहि धायो सो भल्लुकपति माख्यो मेघनाद उर माहिं।
पख्यो धड़ाका गिरि धरती महँ घुर्मित रह्यो चेत कछु नाहिं ॥
इतनौ कीन्हे पर गै ना रिस तब गहि एक हाथ द्वउपायँ।
लाग घुमावन त्यहि बङ्गीसम पुनि महि पटाकि दीन कइदायँ ॥
मख्यो न मारा बरदानी खल तब लङ्कापर दीन चलाय।
इतै हकीकति अस बीततिभै सुनिये अग्र चरित मुनिराय ॥
अहि बन्धन लखि रघुनन्दन को नारद गरुड़हि दीन पठाय।
सपदि सो आयो रघुनायक ढिग धरिधरि सकल सांपगे खाय ॥
बचे बचाये ते गिरिजा झट माया नाग भाग भयखाय।
छूटि ततक्षण गो बन्धन तब हर्षे भालु कीश समुदाय ॥
गहि गिरि पादप अरु पत्थर नख धाये कीश बीर बरियार।
भगे निशाचर भय ब्याकुल ह्वै छाँड़्यो समर लरन को कार ॥
उत घननादहु कै मुर्च्छा गै पितहि बिलोकि लागि बड़िलाज।
गयो सो तुरतै गिरि कन्दर महँ करिबे अजय यज्ञ के काज ॥
खबरि बिभीषण ने पाई यह तब राघव ते कह्यो बुझाय।
यज्ञ करत है इन्द्रजीत प्रभु जो वह कबहुँ सिद्धि ह्वै जाय ॥
तौ फिरि जीतबु मुश्किल ह्वै है इतना बचन करौ प्रभु कान।
बचन बिभीषण के सुनिकै अस अतिशै खुशी भये भगवान ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अङ्गद आदिक भट बृन्दन कहँ लीन बुलाय राम रघुराय।
हाल बतायो कहि तिनते सब लक्ष्मण संग जाहु सब भाय॥
जाय बिनाशौ मख निश्चर की नातरु काज बादि ह्वै जाय।
लक्ष्मण मारौ तुम ताको अब देउता सकल रहे भयखाय॥
बीर बिभीषण अरु भल्लुकपति सह सुग्रीव रखावैं सैन।
सुनि असबानी धनुपानी की भये तयार बीर रिपु जैन॥
अहिपति बाँध्यो कटि तर्कस कसि कर महँ लीन शरासन बान।
प्रभु प्रताप को उर धारण करि उठिकै सभा मध्य बतलान॥
बारिदनादहि संहारे बिन जो मुख आनि देखावौं आज।
तौ रघुनन्दन को सेवक नहिं अस कहि कुपित भये अहिराज॥
एक यज्ञकी कछु गनती ना जो सौ यज्ञ करै मनलाय।
आजु न छाँड़ौं त्यहि मारे बिन साँची शपथ स्वामि की आय॥
श्रीरघुनन्दन पद बन्दन करि चले अनन्त बीर असभाषि।
अङ्गद हनुमत से बाँके भट गमने साथ युद्ध अभिलाषि॥
जाय कुम्भिला महँ दाखिल भे जहँ पर यज्ञ करत घननाद।
शोणित भैंसा दै आहुति खल माँगत बिजय सहित अहलाद॥
लाग बिध्वंसै मख बानर भट सामा सकल दीनि बिथराय।
उठा न तबहूं वह आसन ते तब धरि बार घसीटैं धाय॥
लात मारिकै कोउ भागत भे कोऊ हनै मुष्टिका घात।
भई दुर्दशा यहि भाँतिन जब तबखल उठा क्रोध भरि गात॥
चला कपिन तन कर त्रिशूल लै भागे सकल कीश भय खाय।
आय पहूंचे अहिनायक ढिग आवा तहौं इन्द्रजित धाय॥
घोर गर्जना करि केहरि सम छाँड़न लाग घने हाथियार।
अङ्गद हनुमत कहँ मुर्च्छित करि प्रभु तन चला मारि ललकार॥
भयो सामना द्वउ बीरन का इकते एक दई के लाल।
शूल चलायसि अहिनायक पर सो प्रभु काटि गिराई हाल॥
तौलौं अङ्गद अरु मारुतसुत मुर्च्छा बिगत उठे रिसिआय।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मारन लागे इन्द्रजीत कहँ आवत पै न अङ्गमहँ घाय॥
मरै न मारो रिपु आथे फिरि धावा पुनि चिघारि घननाद।
क्रुद्ध कालसम त्यहि आवत लखि भये सरोष शेष उरगाद॥
तीक्षण शायक हनि मारत भे फर फर चले बान बिकराल।
आवत देख्यासि शर निश्चर तब अन्तरधान भयो त्वरचाल॥
बिबिध बेष धरि रण ठानै खल प्रगटै कबहुँ कबहुँ दुरि जाय।
देखि अजयरिपु मन डरपे कपि भे तब महाकुपित अहिराय॥
शोचन लागे मन लक्ष्मण अस अबलगि बहुत खेलायों याहि।
जियत न छाँड़ौं अब मारौं यहि जाते सकल काज बनि जाहि॥
अस बिचारि उर रघुनायक को प्रबल प्रताप सुमिरि मन माहिं।
धनु गुन तान्यो संधान्यो शर तनिक बिलम्ब कीन तब नाहिं॥
छाँड़्यो शायक अहिनायक ने लाग्यो तासु हृदय महँ जाय।
गिर्यो अचेतन ह्वै बसुधामहँ दीन्ह्यों कपट जाल बिसराय॥
राम राम कहि रामानुज कहि दीन्ह्यसि छाँड़ि प्रान हरियान।
धन्य इन्द्रजित तव माता को भाषत अस अङ्गद हनुमान॥
तासु मरण सुनि सब देउतागण आये नभ महँ साजि बिमान।
करि करि बर्षा बर फूलन की लागे करन स्वामि गुणगान॥
बजे नगारा हहकारा करि जय जयकार शब्द रह छाय।
जय रघुनन्दन दुष्टनिकन्दन जय अहिराय सन्त सुखदाय॥
भले सँहार्यो प्रभु पापी यह सुर परितापी दुष्ट महान।
आपदि टार्यो मुनि देवन की जय भगवन्त अनन्त सुजान॥
यहि बिधि अस्तुति करि देउता सब हर्षित गये आपने धाम।
लक्ष्मण आये रघुनायक ढिग कीन्ह्यों माथ नाय परणाम॥
इतै हकीकति अस बीतति भै उत कर हाल सुनो खगपाल।
भयो कोलाहल गढ़ लङ्कामहँ सुत को मरण सुन्यो दशभाल॥
गिर्यो धरित्री महँ मुर्च्छित ह्वै लाग्यो माथ पीटि पछिताय।
हाय बिधाता का मर्जी भै जूझ्यो मोर पुत्र उमराय॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

खोई ठकुरी सब लङ्का की बेड़ा कौन लगै है पार ।
हाय गोसइँयाँ यह कीन्ह्यों कह जूझ्यो मोर पुत्र सरदार ॥
यहि बिधि खलभलि भै लङ्कामहँ रोदन करै मँदोदरि रानि ।
छाती पीटै महि पटकै शिर कहि कहि महा दुखारत बानि ॥
भये दुखारी नर नारी सब आपस माहिं रहे बतलाय ।
नीच निशाचर पति समुझैना मानत मनुज ईश्वरहि भाय ॥
तियन बुझावै तब निश्चरपति धीरज धरो कुऔसर जानि ।
शोच बिसारौ सब हिरदय ते मिथ्या जग प्रपञ्च यह मानि ॥
ज्ञान बुझावत खल औरन कहँ छोंड़त आपु दुष्टता नाहिं ।
पर उपदेशक बहुतेरे नर जे आचरैं ते न बहु आहिं ॥
निशा सिरानी यहि भाँतिन ते सविता उये भयो भिनुसार ।
बिषधर फौजै कपि भालुन की रूंध्यो लङ्क चारिहू द्वार ॥
खबरि दशानन ने पाई यह घेरी लङ्क बँदरवन आय ।
बेगि बुलायो रण शूरन का तिनते कहन लाग समुझाय ॥
डरै लराई ते जाको मन सो बरु अबहीं जाय पराय ।
जो कोउ भागी रण सन्मुख ते त्यहि कै खाल लेहौं कढ़वाय ॥
बैर बढ़ायों मैं अपने बल देखिहौं शत्रु केरि मनुसाय ।
अस कहि साज्यो पवन बेग रथ शोभा जासु बरणि ना जाय ॥
करैं तयारी सब योधागण साजन लगे आपने साज ।
बजो नगारा तब लश्कर मा साजत शस्त्र निशाचरराज ॥
मारूबाजा बाजन लागे बैरख ध्वजा लाग फहरान ।
ढाढ़ी करखा बोलन लागे घूमन लागे लाल निशान ॥
हाथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगे घोड़न चढ़े छबीले ज्वान ।
रथी महारथि रथपर चढ़िगे कीन्ह्यों युद्धभूमि प्रस्थान ॥
ज्यहिक्षण रावणचल्यो समरका अशकुन अमितभये त्यहिकाल ।
गनै न तनकौ अभिमानी सो जावा चहत काल के गाल ॥
गिरैं हाथते छुटि आयुध महि रथते गिरैं लुढ़िकि सरदार ।
CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

हाथी घोड़ा चिघरि चिघरिकै भागैं साथ छाँड़िकै यार॥
गदहा रेंहकैं करि तीक्ष्णस्वर करैं सियार मङ्गलाचार।
गीध चिल्हारिन मण्डल बांधे रोवैं श्वान छांड़ि बुँबुकार॥
कालदूत सम गदहा बोलैं भीषण बोल सुने ना जायँ।
तऊ न मानत भय निश्चरपति बलकरि जितो चहत जगसायँ॥
ताको संपति सुख शकुनाकहँ किमिकै होय क्षेम कल्यान।
भूतद्रोह महँ रत रातिउ दिन रघुपति बिमुख मूढ़ अज्ञान॥
आगे स्यन्दन दशकन्धर का घन घन घण्ट रहे घहनाय।
जोते खच्चर त्वरबाहक युग बैरख ध्वजा रहे फहराय॥
सब दल बादल त्यहि पीछे है चतुरंगिनी अनी अप्रमान।
बिबिध भांतिके रथ बाहनबर शोभा करै कौन कबि गान॥
चले दँतारे मतवारे गज पावस मेघ सरिस तन श्याम।
नवल बछेड़ा चञ्चल गतिके अगणित जाति पांति अभिराम॥
बिबिध वर्णके निशिचारी भट भारी शूरबीर सरदार।
समर अशङ्का अति बङ्काखल मायाकार माहिं हुशियार॥
हहर छाय गै दशहू दिशि मा काधौं होनहार कर्तार।
बजैं नगारा जहँ सँड़िनिन पर औ गजघण्ट शब्द झनकार॥
मारु मारु कहि मोंहरि बाजैं बाजैं हाव हाव करनाल।
शंख नफीरिन की धुनि छाजे ह्वै रहे प्रलय काल के हाल॥
डगमग डगमग धरती कम्पै डोलन लगे कमठ अहिराज।
देउता कम्पे आसमान मा देखत महा समर को साज॥
छई अँधेरिया चारिहु दिशि मा लोपे समर क्षारसों भान।
गर्जैं योधा गज केहरि से एकते एक बीर बलवान॥
कहै दशानन तब बीरन ते तुम रण हनौ हाँकि कपिभालु।
राजकुँवर द्वौ संहरि हौं मैं जिनको आय पहूँच्यो कालु॥
अस कहि साम्हू चलि सैना सह आयो युद्धभूमि मैदान।
खबरि पाय उत खबरदार ह्वै धाये भालु कीश बलवान॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जुटिगे मुर्चा दुहुँ ओरन ते ज्वानन धरे अस्त्र निज पानि ।
भिरे बीर इत रघुनायक के उत दशशीश ईश जय ठानि ॥
निकषा नन्दन है स्यन्दन पर बिन रथ रामचन्द्र भगवान ।
देखि बिभीषण मन चिन्तित भो औ राघव ते लाग बतान ॥
नाथ न चढ़िबे को स्यन्दन है औ ना चरणकमल महँ त्रान ।
कौन भाँतिते रण करिहौ प्रभु मरिहौ कसस शत्रु बलवान ॥
कहो बिभीषण को सुनिकै इमि बोले बिहँसि राम भगवान ।
सखा न संशय उर आनौ कछु ज्यहि जय होय तौन रथ आन ॥
धीर्य शूरता हैं पहिया ज्यहि ध्वजा पताक शील औ सांच ।
बल बिबेक दम अरु पराय हित जोते चारि अश्व करि जांच ॥
क्षमा दया अरु समदृष्टी ये तिलरी बाग डोरि है लागि ।
भजन ईश्वर को सारथि स्वइ सकै न भागि जौन रथ त्यागि ॥
ढाल बिरति की अति सुन्दरि दृढ़ संतुष्टता स्वई तरवारि ।
दान कुल्हाड़ा अरु सांगी बुधि ज्यहिते हनै शत्रु ललकारि ॥
अमल अचञ्चल मन तर्कस है संयम नियम अनेकन बान ।
ब्रह्म चिन्तवन सो धनुहाँ है कवच अभेद बिप्र सन्मान ॥
शत्रु जीतिबे हित यहिते बढ़ि दुजो उपाय नहीं है भाय ।
सखा धर्ममय रथ जाके अस ताके शत्रु न परै दिखाय ॥
जीति सकै सो भट सहजे महँ अतिशय अजय शत्रु संसार ।
अस दृढ़ स्यन्दन है जाके लग मानहुँ सखा कथन यह सार ॥
शारँगपानी की बानी सुनि निश्चर बंश हंस हर्षाय ।
माथ नवायो प्रभु पायँन महँ दीन्ह्यों भले नाथ समुझाय ॥
उत दशकन्धर ललकारत है अपनी घनी अनी के ज्वान ।
आजु बीरता को अवसर है सुभटौ गहौ समर मैदान ॥
इत युवराजा अरु अञ्जनिसुत हाँकत कीश भालु बलवान ।
जोरी जोरी कै भिरनी भै निज निज स्वामि केरि करि आन ॥
अपने अपने तब मुर्चन पर योधा करन लाग घमसान ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बलकरि दपटैं इत उत झपटैं तकि ताकि हनै सुघरुआ ज्वान॥
खटखट खटखट तेगा बरसै बोलै छपक छपक तलवार।
शेल दुधारा बाजन लागे गाजन लगे शूर सरदार॥
शायक बरसैं दूनौ दलमा मानौ मघा नखत झरि लागि।
शूल तमंचा कड़ाबीन औ भरि पिस्तौल चलावत आगि॥
गदा प्रहारैं मुद्गर मारैं झारैं कतौं तेग के हाथ।
छुरी कटारिन के झरि लागी गोली चलै हवा के साथ॥
खाँड़े दुधारा बाजन लागे भाजन लगे भगैया ज्वान।
तीर कैबरी छूटन लागे बरसन लगे अगिनियाँ बान॥
शिलाखण्ड अरु तरु आयुधलै कोपे समर कीश अरुभालु।
अगणित योधा भुइँमा गिरिगे लागे अङ्ग घाउ बिकरालु॥
सिद्ध मुनीश्वर ब्रह्मादिकसुर देखैं युद्ध खड़े असमान।
गिरिजा हमहूं रहे तहाँपर देखत समर चरित धरिध्यान॥
रणमहँ माते भट दोऊ दिशि पै जय होत बँदरवन केरि।
जिन्हैं सहायक रघुनायक प्रभु तिनको कहाँ कबहुँ अवसेरि॥
भिरैं प्रचारैं इक एकन कहँ मर्दैं एक एक महिडारि।
धरैं पछारैं नख फारैं तन शीशन हनैं शीश फटकारि॥
भुजा उखारैं उदर बिदारैं पदगहि पटकिदेयँ महि माहिं।
प्रबल लड़ाई त्यहि औसर भे निज पर सूझि परत क्यहु नाहिं॥
हनै भालुकपि ज्यहि निश्चर को ताको करैं फेरि असहालु।
गदा खोदिकै महि गाढ़हिं भट ऊपर डारिदेहिं बहुबालु॥
युद्ध बिरुद्धे अति बन्दरगण क्रुद्धे मनौ अनेकन काल।
शोणित बुन्दा तनमहँ दरशैं फागुन मनौ रङ्गके ख्याल॥
कटक निशाचर भट मर्दैं बहु गर्जैं प्रलय मेघ की नायँ।
दांतन काटैं अरु डाटैं पुनि थपरन मारि मारि भगिजायँ॥
उदर बिदारैं मुखफारैं धरि पहिरैं गले आंतकी माल।
धरे अनेकन तन नरहरिजनु खेलत समर भूमि बिकराल॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

गरुई गाजै कपि भालुनकी निश्चर सहि न सके खगराय।
भगे भयातुर ह्वै संगर ते भूले युद्ध करन के चाय॥
भागत सेना लखि लङ्कापति दश कोदण्ड धरे दश हाथ।
रिसकरि गर्जा समरभूमिमा दशा सो कहि न जाय खगनाथ॥
लौटौ लौटौ कहि योधन ते अपना धर्यो धनुष पर बान।
सुमिरि भवानी जगदम्बाका लाग्यो करन युद्ध घमसान॥
युद्ध उपस्थित लखि रावणको बानर भालुभये हुशियार।
गहिगिरि पादपकर धावतभे सन्मुख मारि मारि किलकार॥
बृक्ष पहारन सों तोप्यो रथ लागत शैलबज्र तन तासु।
रुधिर पनारन बरसन लाग्यो फूट्यो अङ्गअङ्गको माँसु॥
रह्यो रोंकि रथ तउ भाग्योना दुर्मद यातुधान बलवान।
परम क्रोधते शर बर्षाकरि दीन्ह्यों तोपि भूमि असमान॥
इत उत झपटै अरु डपटै कपि मर्दै परम क्रोध उर आन।
भगे भालु कपि भय ब्याकुल ह्वै अङ्गद त्राहि त्राहि हनुमान॥
पाहि पाहि हे रघुनायक प्रभु यह खल खाय कालकी नायँ।
भगे भालु कपि अस देखा त्यहिं दश धनुधरे दशौं कर मायँ॥
तानि शरासन गुन काननलग बरसनलाग अग्निवत बान।
लगैं उरगह्वै सो देहिनमा दशा सो कहि न जाय हरियान॥
दशौं दिशामहँ शायक पूरे धरणी आसमान रहछाय।
भयो कोलाहल कपि सैनामहँ यहि क्षण राखिलेहु रघुराय॥
बिचलत आपन दल देख्यो तब लक्ष्मण नाय राम पदमाथ।
चले सरोषित कटि भाथा कसि लैकै बान शरासन हाथ॥
आय सामुहे दशकन्धर के कह्यो पुकारि लक्ष्मण लाल।
ऋक्ष बानरनका मारत खल मोहिं बिलोकु तोर मैं काल॥
बांक हांक सुनि भट लक्ष्मण की बोल्यो कुपित निशाचरराज।
रे सुतघाती तोहिं खोजत मैं हतिरण हृदय जुड़ावहुँ आज॥
असकहिछांड्यसिअतितीक्षणशरत्यहिदुइखण्डकीन अहिराय।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कोटिन आयुध फिरि छांड़तभो तिलसम काटि दीन महिनाथ ॥
पुनि संधान्यो धनु लक्ष्मण प्रभु तीक्षण बान कीन परिहार।
चूरण कीन्ह्यों रथ रावणका औ सारथी कीन संहार ॥
सौ सौ शायक दश भालन महँ मारे तानि तानि अहिराज।
मेरु कँगूरन जनु प्रबिशैं अहि ब्याकुलभयो निशाचरराज ॥
सौ सौ शायक उर मारे हनि धरती गिरचो मूर्च्छा खाय।
एक मुहूरत महँ मुर्च्छा गै तब उठि ठाढ़ भयो रिसिआय ॥
साँगि बिधाताने दीन्हीसो लीन्ही अति प्रचण्ड करधारि।
ताकि चलाई सो लक्ष्मण पर लागी हृदय बीच उरगारि ॥
गिरे मूर्च्छित ह्वै बसुधा महँ रह्यो न चेत तनक तन माहिं।
चहत उठावा दशकन्धर खल जानत कछु प्रभाव ज्यहि नाहिं ॥
ब्रह्म अण्ड सब इक माथेपर राजत धूरि कनीकी नायँ।
चहत उठावन त्यहि रावणखल जानत नहिं त्रिलोक के सायँ ॥
देखतै धावा भट अञ्जनिसुत कहत कठोर बचन ललकारि।
आवत मारचसि त्यहि छाती महँ मुष्टिप्रहार घोर निशिचारि ॥
गिरचो न तबहूं महि अञ्जनिसुत रहिगो जाँघ टेकि कै ठाढ़।
रिसभरि धावा फिरि रावण तन अँग अँग बढ़्यो क्रोधबे खाढ़ ॥
मारचो घूंसा इक हनुमत त्यहि धरती गिरचो मुर्च्छि दशभाल।
गिरै मेरु ज्यों पवि लागे ते होइगो महा हाल बेहाल ॥
एक मुहूरत महँ मुर्च्छा गै जागा तबहिं निशाचरराय।
लाग सराहन कपि बिक्रमको धनि त्वहिं प्रसव कीन ज्यहिं माय॥
क्रोधित बोल्यो पुनि अञ्जनिसुत है म्वहिं सहसबार धिक्कार।
धिक है मोरे बल पौरुष का जो तैं जियत उठे बदकार ॥
असकहि आयो ढिग लक्ष्मण के लीन उठाय गोद अनयास।
देखि दशानन संदेहित भो आगे कथा सुनौ मतिरास ॥
लायो शेषहि कपि राघव ढिग तब रघुबीर कही यह बात।
हौ तुम अन्तक अन्तकहू के अस उर समभि जागिये भ्रात ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

उठे तड़ाका अहिनायक तब गगन गई सो शक्ति कराल।
धरि धनुशायक पुनि आये चलि रण सामुहें जहाँ दशभाल॥
तानि शरासन गुन कानन लग तीक्षण बान कीन संधान।
स्यन्दन भञ्जन करि सारथि हति दश आननहिं कीन हैरान॥
मारे बानन के छेद्यो तन धरती गिर्‌यो निशाचरराय।
दुजो सारथी त्यहि रथमा धरि लङ्का लै गयो प्रान बचाय॥
महा प्रतापी अहिनायक प्रभु प्रभु ढिग आय नवायो माथ।
हाथ पकरिकै निज गोदी महँ लियो बिठाय राम रघुनाथ॥
इतै हकीकति अस बीतति भै अब उत सुनौ लङ्कको हाल।
बिगत मूर्च्छा ह्वै निश्चर उत कीन्ह्यों मखारम्भ ततकाल॥
राम बिमुख ह्वै जय चाहत शठ हठ बश करत अज्ञ को काम।
यह नहिं जानत रघुनायक प्रभु हैं खलघायक बिक्रम धाम॥
इहाँ बिभीषण सुधिपाई यह प्रभु सों कह्यो जाय सब हाल।
नाथ दशानन मख साधत यक बिगरै सिद्धि भये सब ख्याल॥
मरी न कौनिउँ बिधि मारे फिरि इतना कहा मानिल्यो नाथ।
बेगि पठावो भट बँदरन कहँ करैं बिध्वंस आव दशमाथ॥
भये सबेरा पहु फाटत प्रभु लीन बुलाय कीश बलवान।
भाषि बुझाये ते धाये सब अङ्गद हनुमदादि बहुज्वान॥
कौतुक कूदि चढ़े लङ्कापर पैठ अशङ्क दशानन धाम।
यज्ञकरत त्यहि अवलोक्यो जब कोपे सकल कीश बलधाम॥
भागि समर ते शठ आये गृह इत बक ध्यान लगाये आय।
शर्म न तनिकौ बेशर्मा त्वहिं है धिक बल पौरुष मनुसाय॥
असकहि क्रोधित ह्वै तारासुत लात प्रहार कीन खगराय।
चितवन तबहूं शठ स्वारथरत चाहत बिजय करन जगसाँय॥
देखत नाहीं जब कीशन तन तब अस करन लाग उत्पात।
कचगहि दांतन सों काटत अरु मारत गात मुष्टिका लात॥
केश पकरिकै महरानिन के लावत खैंचि धाम के द्वार।
CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बिकल पुकारत अति आरत ते दशा सो कहि न जातहै यार ॥
आरत बाणी सुनि रानिनकी उठ्यो कृतान्त सरिस रिसि आय।
गहि पदपटकै महि कीशन को भागे सुभट महाभय खाय ॥
पायबीच अस मख ध्वंसन करि कपि सब गये राम के पास।
चल्यो लङ्कपति तब क्रोधित ह्वै हियते छांड़ि जियनकी आस ॥

इति श्रीभार्गववंशावतंसश्रीमन्मुंशीनवलकिशोरात्मजस्यश्रीमुंशीप्रयाग नारायणस्याज्ञाभिगामीउन्नामप्रदेशान्तर्गतमसवासीग्रामनिवासीपण्डित बन्दीदीनदीक्षितनिर्मितश्रीविजयराघवखण्डेयुद्धकाण्डेमेघनादयुद्धव धवश्रीलक्ष्मणरावणप्रथमयुद्धवर्णनोनामषष्ठोल्लासः ॥ ६ ॥

श्रीरघुनन्दन पद बन्दन करि उरधरि चरण कमल अभिराम।
परम बीरता युत बर्णत हौं रावण राम केर संग्राम ॥
भये सबेरा पहु फाटत खन उठा सकोप निशाचरराय।
बोलि नगरची को आयसु दिय डङ्का ठोंकु बीर रसछाय ॥
बजो नगारा हहकारा करि निश्चर सकल भये तय्यार।
प्रथम नगारा मा जिनबन्दी दुसरे बाँधि लीन हथियार ॥
तिजे नगारा के बाजत महँ सब दल सजा निशाचर क्यार।
अस्त्र शस्त्र धरि सजि लङ्कापति अपनौ रथपर भयो सवार ॥
गमन्यो आतुर युद्धभूमि को लैसँग अप्रमान बलवान।
अशुभ भयंकर भे गमनत महँ सो सब कहि न जायँ हरियान ॥
गीध शिरन पर उड़ि उड़ि बैठैं बोलैं काग अमङ्गल बानि।
रेंहकैं गर्द्दभ अति उच्चस्वर मानत सो न दुष्ट हठ ठानि ॥
मारूबाजा बजवावत खल पहुँच्यो युद्धभूमि महँ आय।
दल निशाचरी बतलावै को जाको वार पार नहिं भाय ॥
बाजि अपारन बहुवारन दल रथी पदादि सुतर असवार।
प्रभुके सोहीं खल धाये कस जस आगी पर शलभ अपार ॥
इत सुर बिनवैं रघुनन्दन को प्रभु यह दुष्ट महा दुखदाय।
अब न खेलावो यहि संगर महँ बहु दुख लहत जानकी माय॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

देव बचन सुनि मुसकाने प्रभु धस्यो सुधारि शरासन बान ।
बांध्यो शिरपर जटाजूटकसि बिच २ सुमन गुच्छ अरुझान ॥
अम्बुज दल सम रतनारे चष तन घनश्याम प्रभा अभिराम ।
कटि दृढ़ फेंटा अरु तर्कस कसि कर लै धनुषबाण बलधाम ॥
लसैं मनोहर भुज आयतउर तामहँ बिप्र चरणको अङ्क ।
बीररूप इमि लखि प्रभुको तन खल दल सकल भयो युतशङ्क ॥
धनुशर कर लै प्रभु फेस्यो जब दिग्गज कमठ शेष थहरान ।
धरा धराधर डोलन लागे उछलन लग्यो सिन्धु को पानि ॥
अनुपम शोभा लखि राघव की देउता फूल रहे बरसाय ।
सुयश सुनावैं गुणगण गावैं जय जय शब्द रह्यो अति छाय ॥
त्यही समइयाके अवसरमहँ निश्चर सैन देखि कपि भालु ।
धाये इत उत करि उच्चस्वर नानारङ्ग रूप बिकरालु ॥
प्रलयकालके जनुबादल दल शोभा कछू कही ना जाय ।
दूनौ फौजै इक मिल ह्वै गई धरु २ मारु शब्द रह छाय ॥
खड्ग चमंकैं दुहुँओरन महँ दामिनि दमकि रही जनु भाय ।
चिघरैं हाथी रथ हिकरैं हय गर्जत मनहुँ मेघ समुदाय ॥
पूंछैं बँदरन की छाईं नभ मानहुँ उये इन्द्रधनु यार ।
उड़ैं क्षार जनु जल बर्सत हैं बाण बुन्द भइ बृष्टि अपार ॥
मेरु प्रहारैं दुहुँ ओरन ते जनु पवि पात होत बहुबार ।
लोपे दिनकर समर क्षार सों चहुँदिशि छाय रह्यो अँधियार ॥
कीन्ही शायक झरि राघव तब घायल भये निशाचर भूरि ।
शायक लागे ते चिघरैं भट जहँ तहँ गिरैं घूमि महि पूरि ॥
झरे पहारन ते झरना जनु शोणित नदी रही उमड़ाय ।
देखत डरपैं मन कादरजन दशा सो कहि न जाय खगराय ॥
द्वऊ किनारा हैं दोऊदल रथ सो रेत सरिस दिखराय ।
रथ के पहिया सो भँवरै जनु देखत हृदय जाय भयछाय ॥
हाथी घोड़ा अरु खच्चरखर प्यादे परे जूझि त्यहि माहिं ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सो जनु जलचर हैं नदियामहँ बूड़त बहत परे उतराहिं ॥
तोमर शायक अरु सांगी अहि चाप तरङ्ग कमठ जनुढाल ।
गिरे जूझि भट सो तट के तरु मज्जा स्वई फेन खगपाल ॥
समर योगिनी मङ्गल गावैं धावैं भैरव भूत पिशाच ।
हार बिराजैं हिय आंतन के करैं अनेक भांति के नाच ॥
खप्पर साजे चामुण्डा गण लरि लरि माँसहि करैं अहार ।
झुण्ड चिल्हारिन के रणवर ये सब दिशि तोपे काग सियार ॥
अमित चुरैलै रणमा घूमैं लीन्हे कुण्ड शीश सजि हाथ ।
उठैं कबन्ध बीर रण नाचैं भैरव भूत नाथ के साथ ॥
भयो कोलाहल अति संगरमा गीधन लियो सुमण्डफ छाय ।
भये बराती सब जम्बुकगण भैरव नाचैं मौर धराय ॥
काक कङ्कलै भुज बीरन के रहे उड़ाय गगन महँ भाय ।
धाय जाय कै इक एकन ते झपटि छँड़ाय लेत हैं खाय ॥
एक एक ते समुझावैं तब अरे दरिद्रिहु बात बनाव ।
यहि बहुतायत पर ऐस्यो क्षण छूटत नहिं दरिद्रको दाव ॥
परे कराहैं भट घायल तट जहँ तहँ मनहुँ अर्ध जल आहिं ।
बहे जात भट खग बैठे तहँ खेलत जनु नेवार सरि माहिं ॥
गीध किनारे ते बैठे प्रिय आँतैं खींचि रहे यहि भाँति ।
बालक बंसी जनु खेलत हैं दशा बिचित्र बरणि नहिं जाति ॥
बिना मुण्डके धड़ धावैं बहु लीन्हें कर कृपान तरवारि ।
शीश परे महि जय बोलत हैं माची महा भयंकर रारि ॥
जे कोउ योधा सम्मुख जूझैं सुरपुर जाहिं बैठिकै यान ।
मारि निशाचर दल मर्दन करि बानर भालु लाग किलकान ॥
रामचन्द्र के शर घायन ते सोवहिं सुभट अजिर संग्राम ।
सैन सिरानी सब निशिचर की कोउ २ भगे प्राण लै धाम ॥
हृदै बिचार्यो दशआनन तब भे सब यातुधान संहार ।
मैं एकाकी कपि भल्लुक बहु सम्मुख लरे न पैहौं पार ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

माया बिरचौं यहि औसर पर तब चाहै कछु चलै उपाय।
करि उर चिन्तन इमि निश्चर खल माया करनलाग खगराय॥
सुरन पयादे प्रभु देखे इत तब उर संशय भयो अपार।
सुरपति आपन रथ पठयो त्वर अति दृढ़ परम ज्योति आगार॥
मातलि सारथि लै आवा सो त्यहि पर चढ़े हर्षि रघुराय।
चारि बछेड़ा ज्यहिमा जोते चाल बिलोकि बाय सरमाय॥
रथारूढ़ लखि रघुनायक को धाये कपि बिशेष बलपाय।
लगे प्रहारन तरु पाथर गिरि व्याकुल भयो निशाचर राय॥
मारु कपिन की सहिजावै ना तब मायाकर किह्यसि पसार।
छाड़ि अकेले रघुनन्दन को मानी सबन सत्य सो यार॥
सैन निश्चरी बँदरन देखी ज्यहिमा अमित कीश बलवान।
अङ्गद लक्ष्मण कपिनायक बहु बहुतक जामवन्त हनुमान॥
देखि तमाशा अस वानरगण जहँ तहँ चित्र लिखे से ठाढ़।
चकित बिलोकैं दिशि चारिहु महँ शङ्कित हृदय भीतबेखाढ़॥
आपनि सैना लखि व्याकुल तब मन मुसकान राम भगवान।
तानि शरासन गुन कानन लग तीक्षण बान कीन संधान॥
एक मुहूरत महँ माया हरि कीन्ह्यो दशौंदिशा उजियार।
कीश भालुगन हर्षाने मन जय जयकार करत बहुबार॥
देखि बानरन दिशि बोले प्रभु होवहु सावधान सब ज्वान।
द्वन्द्व युद्ध अब अवलोकहु इत करि रण थके सकल बलवान॥
दुष्टनिकन्दन रघुनन्दन प्रभु कहि अस सैनपतिन सों बात।
स्यन्दन हाँक्यो युद्धभूमि कहँ द्विजपद शीशनाय कै तात॥
रथ रघुनन्दन को आवत लखि क्रोधित भयो निशाचर राय।
सम्मुख आवा गर्जि तर्जि कै प्रभुतन चितै लाग बतलाय॥
खबर्दार हो समरभूमि मा तापस मोर बचन करु कान।
अब लगि योधा रणजीते जो मोकहँ तिन समान मति जान॥
जगमहँ जाहिर है कीरति मम जानत सकल मोर व्यवसाय।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

लोकप जाके गृह बँधुश्रा हैं रावण नाम निशाचर राय॥
मारि कबन्धहि खरदूषण कहँ छलसे हन्यो ब्याध इव बालि।
अगणित निश्चर संहारे रण घनस्वन कुम्भकर्ण बलशालि॥
बदला लेहौं इन सबहिन का पौरुष आज देखिहौं तोर।
समरभूमि ते जो भगिहैना तौ हठिकरौं कालको कौर॥
पस्यो न पाले केहु योधा के ताते हृदय बढ़्यो अभिमान।
आज सामना है रावण का बचिबो महाकठिन है प्रान॥
दुष्टवार्ता सुनि रावणकी यहिबिधि ताहि कालबश जान।
दुष्टनिकन्दन रघुनन्दन प्रभु हँसि मुसक्याय लाग बतलान॥
सत्य बीरता जग जाहिर तुव जल्पासि जनि देखाव मनुसाय।
बृथा बार्ता करि नाशत यश सुनु शठ नीति रीति मनलाय॥
तीनि भाँतिके नर दुनियाँमहँ पनस गुलाब आँबकी नायँ।
केवल फूलहि को दाता इक इक फल फूल सहित दरशायँ॥
इक महँ केवल फल लागत है है यह बात बिदित जगमाहिं।
करत न एकै कहि डारत हैं यक कहि करैं तौन शक नाहिं॥
एकै केवल कहिबेही के कछू न कीन होय तिन क्यार।
तिन महँ त्वहिंका मैं जानतहौं शठ बकबाद करत बेकार॥
रामबचन सुनि हँसि भाष्योखल अबम्वहिं लगे सिखावन ज्ञान।
करत शत्रुता डरलाग्यो ना अब कसलगैं पियारे प्रान॥
दुष्टबचन इमि कहि लङ्कापति कानन लगे शरासन तान।
बान बज्र इव संधानत भा भभकी हृदय कोपकी सान॥
अगणित शायक बर्षावत भो महि आकाश दीन शर छाय।
लोपे दिनकर शर पञ्जर ते बिदिशा दिशा देखि ना जाय॥
तजे हुताशन शर रघुबर तब क्षण महँ जरे निशाचर बान।
भयो उजेरा चौगिर्दा ते नशितम गयो भान प्रगटान॥
मनखिसियानो तब निश्चरपति छांड़यासि ब्रह्मशक्ति रिसिआय।
फेरि पठाई प्रभु शायक सँग बसुधा गिरी जाय भहराय॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कोप प्रज्वलित भो रावण को छाँड़्यसि कोटि कोटि हथियार ।
चक्र शूल शर बहु भाँतिन के बर्सत यथा मेघ जलधार ॥
बिना परिश्रम प्रभु काटे सब मिलिगे तौन भूमि रजमाहिं ।
बिफल होत कस शर रावण के उद्यम यथा खलन के जाहिं ॥
सौ शर मार्‌यसि तब सारथि के धरती गिर्‌यो भाषि जयराम ।
ताहि उठायो प्रभु दायाकरि कोपे हृदय माहिं भगधाम ॥
युद्ध बिरुद्धे रघुनायक तब शायक धनुष कीन सन्धान ।
भयबश निश्चर काँपनलागे सुनि कोदण्ड चण्ड घहरान ॥
काँपनलागो मन्दोदरि उर भूधर कमठ शेश थहरान ।
चिघरैं दिग्गज महि दन्तन गहि कौतुक देखि देव मुसकान ॥
तानि शरासन गुन काननलग करि चषलाल सन्त सुरपाल ।
भरि असि शायक बर्सनलागे गमने लहलहात जनु ब्याल ॥
पहिले सारथि हयमार्‌यो प्रभु भञ्ज्यो केतु पताका यान ।
थाको अन्तर बल निश्चर को देखि प्रभाव मूढ़ खिसियान ॥
चढ्यो तड़ाका रथ दूजेपर कीन्ह्यसि अमित बान सन्धान ।
हनि हनि मारै सो रघुपति पर निष्फल जात तौन हरियान ॥
बिफल होयँ जस परद्रोही के उद्यम सकल भाँति ते बाम ।
ताही बिधि ते शठ रावण के आयुध सकल होत बेकाम ॥
शूल चलावा तब रावण ने कीन्हे ब्यथित मारि हयचारि ।
गिरे धरामहँ बिन चेतन ह्वै तब उर कोप कीन असुरारि ॥
बाजि उठाये रघुनायक पुनि धाये कोपि धारि धनुबान ।
अगणित शायक बर्सावत भे छाये भूमि और असमान ॥
मानहुँ दशमुख शिर अम्बुज सम तिनके नाश करन के हेतु ।
शायक रघुपति के बारन हैं मानहुँ सत्य बात खगकेतु ॥
इक इक माथे महँ दश दश शर मारे ताकि सिया भर्तार ।
प्रविशि निसरिगे सो बाहर का शोणित श्रवै पनारन यार ॥
शोणित स्रवतै महँ धावत भो रिसकरि बीस बाहु बलवान ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बाँक हाँक दै ललकारत भो पुनि प्रभु धनुष कीन संधान॥
तीस शिलीमुख हनिमारे प्रभु भुजन समेत शीश किये नाश।
भये नवीने काटतही पुनि काटे फेरि राम अनयास॥
कटे भड़ाका जमि आये फिरि बीसौ भुजा दशौ शिरभाय।
अमित बार लगि प्रभु काटे सो कौतुक नयो भयो खगराय॥
शिरभुज छाये आसमान महँ मानहुँ अमित केतु अरु राहु।
धावत आवत नभ मारग ते शोणित स्रवत देखियत ताहु॥
लागत बिषधर शर रघुबर के एकौ गिरन न पावत भूमि।
इक इक शायक महँ छेदे शिर अगणित रहे तौन नभ घूमि॥
उपमा तिनकी बतलावत इमि जनु करि हृदय कोप दिननाहु।
किरण समूहन बिस्तारित करि पोहे अमित केतु अरु राहु॥
ज्यों ज्यों काटत प्रभु ताके शिर त्यों त्यों बाढ़त जात अपार।
जैसे बिषयिन के सेवन ते नित नित नयो बिबर्द्धत मार॥
बाढ़ि शिरन की लखि लङ्कापति बिसरा मरण कोप अधिकान।
घोर गर्जना करि गर्ज्यो शठ दशकर दशौ शरासन तान॥
कोप्यो अतिशै रण पुहमी महँ बर्सन लग्यो बान खरसान।
तोप्यो स्यन्दन रघुनन्दन को दशा सो कहि न जाय हरियान॥
रथ न दिखानो द्वै घटिका लगि लोपे जस निहार महँ भान।
कीन देवतन अति हाहा स्वन प्रभु तब धर्यो कोपि धनुबान॥
अमित नराचन की बर्षा करि काटे शत्रु शीश बहुबार।
ते सब पाटे दिशि बिदिशन महँ महि आकाश कीन बिस्तार॥
नभ पथ धावैं उपजावैं भय जयजयकार शब्द मुखभाखि।
राम लषण कहँ कहँ बानर पति कहँ हनुमान कहतअसमाखि॥
यहि बिधि हल्लाकरि धावैं शिर लखि भयभीत भाग कपिभाल।
धरि धनुशायक रघुनायक पुनि बेधे शरनि शीश करिमाल॥
शीश मालिका गहि हाथन महँ घूमत समर कालिका माय।
शोणित सरिमहँ करि मज्जन जनु पूजन जात समर बटभाय॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

महाक्रोध करि पुनि रावण ने छाँड़ी अति प्रचण्ड खरसाँगि ।
चली बिभीषण के सम्मुख सो दशहू दिशा गई द्युति जागि ॥
कालदण्ड सम सो आवत लखि श्रीरघुराव दया दरियाव ।
तुरत बिभीषण को पीछेकरि अपना सह्यो शेल को घाव ॥
लगे शक्ति के कछु मुर्च्छा भै देउता सकल उठे अकुलाय ।
प्रभु को कौतुक यह जानत नहिं होवै समाधान किमिभाय ॥
लख्यो बिभीषण प्रभु पायो दुख धायो गदाधारि रिसियाय ।
खबर्दार हो अभिमानी शठ अब तुव काल गयो नियराय ॥
अरे अभागे अब भागेहु ते बचैं न तोर समर महँ प्रान ।
शिवहि सहोदर शिर अर्पे स्वइ इक के भये अनेकन आन ॥
बाचे अबलगि त्यहि कारण ते अब तव काल आय मड़रान ।
राम बिमुख शठ सुख चाहसि तैं ह्वै अभिमान बश्य अनजान ॥
अस कहि मार्यसि बिच छाती महँ गदा प्रहार बज्र सम यार ।
गिर्यो मूर्च्छित ह्वै धरती महँ स्रावित मुखन रक्त की धार ॥
सावधान ह्वै द्वै घटिका महँ धायो महा क्रोध उर आनि ।
भिरे काल सम बलवत्ता दुउ दुऊ अपार ओज की खानि ॥
मल्लयुद्ध करि इक दूजे कहँ मारत लात मुष्टिका तानि ।
उभै प्रचारत ललकारत अति हारत कउ न हारि हिय मानि ॥
जासु सहायक रघुनायक प्रभु शङ्का ताहि कौन की होय ।
मारनवारो त्यहि दुनियाँ महँ देखि न पर्यो आजुलगि कोय ॥
उमा बिभीषण दशआनन तन चितयो कबहुँ स्वप्न में नाहिं ।
भिरत काल सम सो रावण ते जाहिर प्रभु प्रभाव जगमाहिं ॥
थके बिभीषण अनुमान्यो अस अति बलवान बीर हनुमान ।
धायो पर्बत कर धारन करि रावण निकट जाय नियरान ॥
हय रथ सारथि हनिमारे सब एकैबार पहार प्रहारि ।
हन्योलात इक त्यहि छाती महँ करि किलकार घोर उरगारि ॥
काँपन लाग्यो तन रावण को सम्हर्यो गिर्यो नहीं महि माहिं ।
CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

गये बिभीषण रघुनायक ढिग कौतुक देखि नाथ मुसकाहिं ॥
बङ्का हङ्का दै लङ्कापति पुनि हनुमन्तहि हन्यासि प्रचारि।
चल्यो अञ्जनीसुत अम्बर तन पूंछ पसारि मारि किलकारि ॥
पूंछ पकरि कै हनुमन्ता की नभ तन चल्यो रावणौ धाय।
योधा अभिरे दुउ अम्बर महँ एकहि एक हनत रिसिआय ॥
मल्लयुद्ध भा दुउ बीरन ते मारत लात मुष्टिका तानि।
खेलत कुश्ती जनु अम्बर महँ कज्जल अरु सुमेरु गिरि आनि ॥
लरैं अञ्जनीसुत छल बल करि निश्चर प्रबल जीति ना जाय।
तब रघुनायकको सुमिरण करि इक मुष्टिका हन्यो रिसिआय ॥
उठ्यो निशाचर गिरि धरती ते पुनि हनुमन्तै हन्यो प्रचारि।
लखैं तमाशा सुर अम्बरते दुइमा एक न मानत हारि ॥
जय जय भाषत सुर दोउन कहँ इकते एक दईके लाल।
देखि दुखारी हनुमन्ता को गर्जत चले अमित कपि भालु ॥
युद्ध बिरुद्धो भट लङ्कापति सब कहँ मारि दीन बिचलाय।
कौनौ योधा अस देख्यो ना जो दुइ घरी खेतआड़िजाय ॥
पाय सुआयसु तब स्वामी को धाई सैन बँदरवन केरि।
लै गिरि पादप करि हाहा स्वन चहुँदिशि लियो रावणै घेरि ॥
हृदे बिचाख्यो तब लङ्कापति मैं हौं एक अमित कपिभालु।
पार न पैहौं छल कीन्हें बिन जाना भली भाँति मम हालु ॥
असकहि माया दर्शावत भो ज्यहिते कीश जायँ घबड़ाय।
भो अन्तर्हित द्वै घटिका लग पुनि खल प्रकट कीन बहुकाय ॥
जिते भालुकपि प्रभु सैना महँ तहँ तहँ तिते प्रकट दशमाथ।
अमित दशानन लखि व्याकुल ह्वै भागे कीश भालु खगनाथ ॥

स०। बीर अधीर भये सिगरे तजि संगर भूमि जहाँ तहँ भागे।
त्राहि पुकारत आरत ह्वै न सँभारत काहु कोऊ भय पागे ॥
हे रघुनायक होहु सहायक कोप कियो दशमाथ अभागे।
होत उबार न याकरते अब मारत अस्त्र हुताशन दागे ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

गर्जि भयावन स्वर दशहू दिशि कोटिन रावन रहे विधाय ।
भगे सशङ्कित सुर अम्बर ते जियकी आश तजौ अब भाय ॥
एक दशानन सुर जीते सब अब बहु भये लेहु अस जान ।
छिपौ कन्दरनके अन्दर भागि तौ बचि जायँ बरुकु यह प्रान ॥
शिव ब्रह्मादिक मुनि ज्ञानी यत जानत प्रभु प्रभाव कछु लेश ।
रहे अशङ्कित थित नभ महँ ते मानो शत्रु सांच अवशेश ॥
भगे बँदरवा भय कातर ह्वै हाहाकार गयो अति छाय ।
जनसुखदायक हे रघुनायक या क्षन हम कहँ लेहु बचाय ॥
बड़े लरैया जे संगर महँ अङ्गद हनूमान नल नील ।
कोटिन रावन गहि २ मर्दैं करैं न नेक समर महँ ढील ॥
पार न पावैं मायाबी ते कपटी यातुधान बलवान ।
हिये हारिगे सब योधागण जान्यो यह चरित्र भगवान ॥
ब्याकुल देखे सुर बानरगण मन मुसक्याय अयोध्या नाथ ।
साजि शरासन यक शायकहनि क्षणमहँ हते सकल दशमाथ ॥
हरी मुहूरत महँ माया सब जिमि रवि उदय अँधेरा जाय ।
देखि दशानन इक हर्षे सुर नभते फूल रहे बरसाय ॥
भुज उठायकै रघुनायक ने फेरे सकल भालु कपिबीर ।
एक दूसरे के टेरेते लौटे हृदय आनि कछु धीर ॥
पाय सहारा प्रभु अपने को पहुँचे आय समर महि धाय ।
लगे पवाँरन पुनि पादपगिरि ज्यहि दिशि खड़ो निशाचरराय ॥
करत प्रशंसा नभ देउतागण सो सुनि कुपित भयो दशमाथ ।
मोहिं अकेला करि जान्यो इन ताते बदत हर्षके साथ ॥
मोर मरायल तुम सब दिनके दुष्टौ भूलि गयो सो आज ।
असकहि धावा नभ मारग का भागे सुरन सहित सुरराज ॥
बाँक हाँकदै ललकार्यासि तब अब कहँ खलहु भागिकै जाव ।
पहिले मरिहौं अब तुम्हीं कहँ नातरु हिये रहै पछिताव ॥
देखि देवतन को ब्याकुल अति धायो बालितनय युवराज ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कूदि चरणगहि निशिचारी कहँ पटक्यो धरा लवा जस बाज ॥
हन्यो लत्वारा इक ऊपर ते फिरि भाजि गयो रामके पास।
उठ्यो सँभरिकै दशकन्धर त्वर गर्जि कठोर घोर नभबास ॥
दशौ शरासन कर धारन करि कीन्ह्यों अमित बान संधान।
झरि असि शायक बर्सन लाग्यो माच्यो महाघोर घमसान ॥
घायल कीन्हें बहु योधागण ब्याकुल भये कीश अरु भालु।
अपन परावा कछु सूझै ना लोपे समर क्षार दिनपालु ॥
देखि भयाकुल कपि सैनाको भयो प्रसन्न मूढ़ दशमाथ।
दुष्टनिकन्दन रघुनन्दन प्रभु धार्यो फेरि शरासन हाथ ॥
खैंचि तड़ाका गुन कानन लग किय सन्धान सुतीक्षण बान।
भुजा बीसहू बिशिखासनसह दश शिर काटि कीन खरिहान ॥
देर न लागी जमि आये सब जैसे दुष्कर्मिन के पाप।
शिर भुज बाढ़त लखि बैरीके उपज्यो भालु कपिन सन्ताप ॥
मरै न शठ शिर भुज काट्यहुपर धाये कोपि कीश अरुभालु।
मारुतनन्दन अरु अङ्गद नल नील कपीश द्विविद बलआलु ॥
गय गवाक्ष अरु पनस दरीमुख दधिमुख जामवन्त बलवान।
धावा बोल्यो इक साथै सब करत प्रहार वृक्ष गिरि तान ॥
चोट बचावत सब राकसपति आवत अङ्ग एक नहिं घाउ।
स्वइ गिरि तरुगहि संहारै कपि चहुँदिशि मारुमारु करिधाउ ॥
कोपित ह्वैकै कपि धावैं तब एकै नखन बिदारैं गात।
लात मारिकै भगिजावैं इक कौतुक देखि देव मुसकात ॥
अति बल शीला नल नीला दुउ चढ़िगे शिरन कुदक्का मारि।
नखन बिदारे दशौ भाल भल बह्यो अपार रुधिर उरगारि ॥
रक्त बहत लखि खल कोप्यो अति तिन्हैं गहनको भुजा पसारि।
पकरन चाहत गहि पावत नहिं पीसत दांत क्रोध उरधारि ॥
फिरैं शिरन पर नल नीला दुउ भवँरा यथा कमल बन माहिं।
धरयसि कूदिकै तब दोउन कहँ रिस बश अङ्ग अङ्ग फरकाहिं ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

पटकन चाह्यसि इउ धरती महँ भागे भुज मरोरि बलवान।
बङ्क लङ्कपति पुनि कोपित ह्वै लीन्ह्यसि दशौ हाथ धनुतान॥
झरि इव शायक बर्सन लागो धरती आसमान दिय छाय।
घायल कीन्ह्यों कपिसैना सब भागे भालु कीश भय खाय॥
मारुतसुतसे भट मुर्च्छित करि दीन्ह्यसि घाय सबन तनताय।
तब हर्षान्यो दशकन्धर मन सन्ध्या समय सुऔसर पाय॥
देखि अचेतन सब बीरन को धायो जामवन्त ललकारि।
संग भालु भट तरु भूधर धर मारन लगे प्रचारि प्रचारि॥
क्रुद्ध बिरुद्धो रण रावण तब बिक्रम बिदित जासु संसार।
गहिपद पटकै महि नाना भट जस पट रजक देत फटकार॥
निजदल मारत लखि भल्लुकपति मार्‍यो हृदय मांझ त्यहिलात।
लात घातते अति ब्याकुल ह्वै धरती गिर्‍यो बिकम्पित गात॥
गहे भल्लुकन कहँ बीसौ कर शोभा तासु कहा किमि जाय।
बसे भवँरवा जनु कमलन पर रजनी समय जानि खगराय॥
जानि मूर्च्छित त्यहि भल्लुकपति फिरि इकलात हृदय महँमारि।
गयो भड़ाका निज सैना कहँ राजत जहाँ राम असुरारि॥
इतैदशाननको मुर्च्छितलखि स्यन्दनद्वितिय आनि निशिजानि।
गयो सारथी लै लङ्का कहँ गे कपि भालु आपनी थानि॥
उतै दुर्दशा लखि रावण की उपजी निशाचरन उर त्रास।
घेरि रावणहिं चौगिर्दा ते शोचत मलिन चित्त नभबास॥
काह बिधाता कै मर्जी है कौतुक कछू जानि नहिं जाय।
जिते चराचर ज्यहि रावण ने ताकी दशा आजु अस हाय॥
अदिन आयगो अब लङ्काका बेड़ा दई लगावै पार।
आयु खुटानी निशिचारिन की है यह होनहार कर्तार॥

इति श्रीमुंशीप्रयागनारायणस्याज्ञाभिगामीउन्नामप्रदेशान्तर्गतमसवासीग्रामनिवासीपण्डितवन्दीदीनदीक्षितनिर्मितश्रीविजयराघवखण्डे युद्धकाण्डेरामरावणसंग्रामवर्णनोनामसप्तमोल्लासः॥ ७॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

गिरिजानन्दन पद बन्दन करि उर पुर मदन कदन को ध्याय।
बुद्धि बिशारद श्रीशारद भजि भाषत युद्ध मनोहर गाय॥
इतै हकीकति अस बीतति भै उत अब सुनौ सिया को हाल।
पहुँची त्रिजटा लग सीता के वोही राति माहिं खगपाल॥
कथा समर की बतलायसि सब जो कछु वृत्त भयो ज्यहि भाँति।
शिर भुज बाढ़त सुनि बैरी के जगदम्बिका हृदय बिलखाति॥
उपजी चिन्ता उर अतिशै करि मुख अरबिन्द गयो मुरझाय।
ब्याकुल बोलीं तब त्रिजटा ते होइ है काह कहसि किनमाय॥
जग दुखदायी अन्यायी यह मरिहै कौन भाँति दशभाल।
मरै न राघव शर काट्यो शिर है बिपरीत दई को ख्याल॥

स०। मोर अभाग जियावत है त्यहि हौं ज्यहि ते निज स्वामि बिछोही।
है बिपरीत सबै बिधि को कृत काह कहौं सखि जात न जोही॥
मायिक स्वर्ण कुरङ्ग रच्यो ज्यहिं कीन कुरङ्ग दिखाय कै सोही।
द्रोही भइउँ प्रिय देवर की बिधि वोही अबौं लगि मोपर कोही॥

राम बिरह स्वइ बिष शायक खर तकि २ हन्यो मोहिं बहुबार।
रखे प्रान ज्यहिं यहु बिपदा महँ ज्यावत मोहिं स्वई कर्तार॥
जनकदुलारी इमि ब्याकुल ह्वै बिलखत आँशु दृगन ते डारि।
करुणानिधि को करि सुमिरण उर शोचत बार बार उरगारि॥
लागी त्रिजटा समुझावन तब राजकुमारि धरौ उर धीर।
और भाँति ते यहु मरिहै ना मरिहै लगे हृदय महँ तीर॥
बास तुम्हारो है ताके उर ताते प्रभुहिय हनैं न बान।
कारण यामहँ प्रभ शोचत अस सुनिये जनकसुता धरि ध्यान॥
बास जानकी को याके हिय जानकि हृदय माहिं मम बास।
ब्रह्म अण्ड सब मम हिरदै महँ लागत बान होय सब नास॥
सुनिकै बानी इमि त्रिजटा की शोचन लगीं जानकी माय।
हाय गोसइयाँ तुम कीन्ह्यों कह दीन्ह्यों महा बिपति इतलाय॥
देखि जानकी को आकुल अति त्रिजटा लगी फेरि बतलान।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सुन्दरि संशय सब छाँड़हु अब यहि बिधि मरी शत्रु बलवान॥
होई ब्याकुल शिर काटे ते जाई छूटि तुम्हारो ध्यान।
बान मारिहैं तब रावण उर दयानिधान राम भगवान॥
जनकसुता को दै धीरज इमि करि उपदेश बेश समुझाय।
गमनी त्रिजटा निज मन्दिर कहँ सुनिये अग्र चरित मुनिराय॥
शुभ सुभाव श्रीरघुनन्दन को बारम्बार सुमिरि सियमाय।
भई दुखारी अति जियरे महँ भारी ब्यथा गई उरछाय॥
निशा निशाकर को निन्दति बहु युग सम भई सिराति न राति।
बिलखत ब्याकुल अतिमनहीमन दुःखित दशाकहीकिमिजाति॥
बिरह दाह उर जब बाढ़ी बहु फरक्यो तबहिं बाम दृग बाहु।
शकुन जानिकै कछु धीरज धरि आन्यो हृदय मांझ उतसाहु॥
निश्चय मिलिहैं अब जीवन धन आरत हरन राम भगवान।
तजि ब्याकुलता चुप बैठी तब धरि उर सुखद स्वामि को ध्यान॥
इतै हकीकति अस बीतति भै उतको हाल सुनो खगपाल।
आधी रजनी के बीते पर जाग्यो महामूढ़ दशभाल॥
खीझन लाग्यो निज सारथि को शठ रणभूमि छुड़ाये मोहिं।
दागु लगाये रणशूरी में धिक धिक अधम मन्दमति तोहिं॥
रोषित लखिकै निज स्वामी को सारथि शीश पगन महँ नाय।
लाग बुझावन त्यहि आछी बिधि सुनिये बिनै निशाचर राय॥
काम सारथी को याही है रक्षै रथी प्रान सब काल।
तुम्हैं अचेतन लखि लायों मैं प्रान बचाय धाम ततकाल॥
बचन सारथी के सुनिकै इमि कीन्ह्यों क्रोध शान्त दशभाल।
इतै हकीकति अस बीतति भै सुनिये अग्र चरित खगपाल॥
उदै दिवाकर भे पूरुबदिशि निद्रा त्यागि निशाचर राय।
टेरि बोलायो सब बीरन का तुरतै हुकुम दीन फुरमाय॥
यावत सेना है लङ्कामहँ साजि साजि चलै समर के हेत।
आजु बीरताको अवसरहै माड़ो युद्ध घोर रण खेत॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अमर न कोऊ है दुनियामा इकदिन काल सबहि को खाय।
निर्भय जूझौ समरभूमिमा शोहरा चला अगारी जाय॥
सुनि अस आयसु लङ्कनाथको सबरे सजन लाग सर्दार।
प्रथम नगारा मा जिनबन्दी दुसरे बाँधिलीन हथियार॥
तिजे नगाराके बाजत महँ सैना सबै भई तय्यार।
मारू बाजा बाजन लागे जिनकी प्रलयकार हहकार॥
अपनौ रथपर चढ़ि बैठतिभा शोभा अङ्ग अङ्ग रहि छाय।
धारे आयुधबर हाथन महँ मानहुँ इन्द्र अखारे जाय॥
चल्यो निशाचर दल लङ्काते पहुँच्यो समरभूमिमा आय।
आगे स्यन्दन दशकन्धरका गर्जत प्रलय मेघसम जाय॥
इतै आगमन सुनि रावणका कपिदल खरभर भयो अपार।
जहँ तहँ भूधर अरु पादपलै धाये बीर मारि किलकार॥
दूनौ फौजैं इकमिल ह्वैगईं अपन पराव बूझि ना जाय।
इत उत आयुध बर्सन लागे पावस बृष्टि होत जनुभाय॥
झुके बँदरवा चौगिर्दा ते पादप पर्बत करत प्रहार।
नखन बिदारत तन काटत मुख डाटत मारि चपेटन यार॥
भगे सिपाही सब रावण के करते डारि डारि हथियार।
गरुई गाजे कपि भालुन की सही न जाय भयंकर मार॥
प्रखर लड़ाई लखि कीशन की रावण मनमा करै बिचार।
मैं एकाकी अरु बानर बहु सन्मुख लड़े न पैहौं पार॥
ताते माया बिस्तारित करि अन्तर्धान होहुँ यहिकाल।
अस बिचारिकै दशकन्धर भट लाग्यो करन कपटको ख्याल॥
जन्तु अनेकन प्रगटाने तब भूत पिशाच प्रेत बैताल।
धरे शरासन शर धावतरण योगिनि गहे हाथ करबाल॥
मनुज खोपड़ी इक हाथे महँ भरि भरि करत रुधिर को पान।
नाचैं गावैं भाव बतावैं धावैं मुख पसारि हरियान॥
कलबल बोलैं करैं कलोलैं धरु धरु मारु मारु रटलाय।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

को गति बरणौ वहि समया कै भागे भालु कीश भयखाय ॥
जाहिं जहाँपर भाजि मर्कट भट तहँ तहँ बरत बिलोकैं आगि ।
अतिशै ब्याकुल भे भल्लुक कपि सबके हृदय गयो भयपागि ॥
उष्ण बालुका पुनि बर्सत भो ताते अधिक बीर घबड़ान ।
तज्यो सहारा तब जीवन का अब धौं काह करैं भगवान ॥
यहिबिधि सैना सब ब्याकुल करि गर्ज्यो बहुरि बीर दशभाल ।
भई सनाका कपि सैना महँ जनु प्रत्यक्ष आय गो काल ॥
सहित लक्ष्मण अरु सुकण्ठ के भये अचेत सकल बलवान ।
हाय राम हा रघुनन्दन कहि मींजैं हाथ महा हैरान ॥
पुनि शठ मायाकृति ठानत भो जानत कपट ख्याल बहुभांति ।
अद्भुत कौतुक अवलोकत सो बानर सैन महा घबड़ाति ॥
प्रगटि देखायसि बहु मारुतसुत धाये गहे हाथ पाषान ।
जाय गरास्यो तिन राघव को चहुँदिशि पुच्छ कुण्डली तान ॥
जाय न पावैं धरि मारौ अब तपसी राम लषण दुउभाय ।
दन्त कटकटा करि भाषैं इमि पूंछ उठाय रहे डरवाय ॥
दशदिशि पूरे लंगूरे बहु तिन बिच अवधराज बिरराज ।
शोभा साँवल तन सोहत जस मोसन कहि न जात खगराज ॥
इन्द्र शरासन के थाल्हा महँ मानहुँ तरु तमाल दरशाय ।
ऐसी शोभा रघुनन्दन की गिरिजा बरणि कौन पै जाय ॥
हर्ष शोकबश सब देउतागण देखत यह चरित्र प्रभुक्यार ।
जय जय भाषत अभिलाखत अस अब प्रभु करहु दुष्ट संहार ॥
आपनि सैना अरु देवन को ब्याकुल देखि दयानिधि राम ।
एकबान सों हरि माया सब कीन्ह्यों सत्य आपनो नाम ॥
नशी निशाचर की माया जब तब सब भालु कीश हर्षान ।
गहि गिरि पादप फिरि धावत भे कहि जय रामचन्द्र भगवान ॥
तानि शरासन गुन कानन लग छाँड़े अमित बान रघुनाथ ।
देव दुखारी निशिचारी के काटे सकल बाहु अरु माथ ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दोऊ दिशि ते शरछूटे तब छाये धरा और असमान।
दशौदिशा महँ अन्धकार भो लोपे बान जाल सों भान॥
दशरथनन्दन दशकन्धर को समरचरित्र बिचित्र अपार।
सबो कलपलग कहि पावैं ना शारद शेष आदि वक्कार॥
उपमा अम्बर की अम्बर जिमि सिन्धु समान सिन्धु मतिधाम।
राम रावण के सङ्गर सम रावण रामकेर संग्राम॥
ताके गुणगण कछु गाये मैं आये यथाबुद्धि महँ भास।
अपने पौरुष के माफिक जिमि मशक उड़ाहिं जाहिं आकास॥
काटे शिर भुज बहु बारक प्रभु तबहुँन मरत दुष्ट लङ्केश।
प्रभु तौ क्रीड़त समरभूमि महँ सुरन अँदेश होत लखि क्लेश॥
बाढ़त अतिशय शिर काटेते जिमि प्रतिलाभ लोभ अधिकाय।
मरै न मारो अरि काहू बिधि गे थकि लरत लरत रघुराय॥
लगे बिभीषन तन देखन तब कौतुक हेत भानुकुल केत।
मरै कालहू ज्यहि इच्छा ते सो जन प्रेम परिच्छा लेत॥
कह्यो बिभीषण कर सम्पुट करि सुनु सर्वज्ञ चराचरनाथ।
नाभि कुण्ड महँ है अमृत रस ताबल जियत नाथ दशमाथ॥
सुनत बिभीषण की बाणीबर धर्यो सुधारि शरासन हाथ।
बिषधर शायक सन्धानित करि छोंड़न चल्यो अयोध्यानाथ॥
अमित अमङ्गल दिखराने तब व्याप्यो चहूं ओर हहकार।
अन्धकार भो दशहूदिशि मा लोपे भानु समर की क्षार॥
हाव हाव करि जम्बुक बोलैं रथपर गीध झुण्ड मड़रायँ।
रक्क कि धारा बादर बरसैं कौवा काँव काँव चिचिहायँ॥
डगमग डगमग धरती डोलै हालन लगे कमठ अहिराज।
हवा हहारा करि हहरत भै घहरत मेघ गिरत भै गाज॥
देखि अमङ्गल यहि भाँतिन के जय जय बदत देव भयमान।
चरित अपूरब अब आगेकर सुनिये सावधान हरियान॥
देखि अमङ्गल मन कोप्यो अति बङ्क अशङ्क लङ्क भर्तार।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

रथारूढ़ कर बिशिखासन गहि बर्सन लग्यो बान अनियार ॥
इतते धाये कपि भल्लुक भट लै लै शिला खण्ड तरुपानि।
गर्जि तार्जिकै त्यहि सम्मुख भे लागे लरन अस्त्र संधानि ॥
सैना सैनाकै भिड़नी भै बीरन तजी जियन की आस।
इत रघुनन्दन चढ़िस्यन्दन पर दशमुख समुख भये मतिरास ॥
महा भयंकर रणमाच्यो तब जीवन आश त्यागि दशभाल।
श्रीरघुनायक के सम्मुख ह्वै बर्सनलाग अस्त्र के जाल ॥
छुरी कटारी तरवारी अरु बिषधर साँगि नाँगि अहिपास।
छाँड़न लाग्यो रघुनायक पर कौतुक लखैं देव आकास ॥
बर्सै बिषधर शर निश्चरपति ब्याकुल कीन सुभट्टन मारि।
भागि लुकाने प्रभुपाछे सब याक्षण राखिलेहु असुरारि ॥
देह आपनी की भूली सुधि दशमुख करत घोर संग्राम।
ब्रह्मबाण तब लिय हाथे महँ खलदलदलन देव श्रीराम ॥
तानि शरासन गुनकाननलग किय संधान बान खरसान।
सिद्ध देवता मुनि देखत छबि चढ़े बिमान खड़े असमान ॥
गर्द़नि अजूबा त्यहि शायक की आनन बन्यो हंस आकार।
चारु पुरट सम त्यहि आभाते भासित भयो सकल संसार ॥
गुप्तभाव ते त्यहि आनन महँ पावक बास करत हरियान।
पशुपति ताके मध्यभाग महँ औ उंचास पवन सबिधान ॥
बर्ण बिलक्षण नीलाञ्जन इव चमकत सकल अङ्ग ज्यों भान।
बसै सर्बदा त्यहि अन्तर्गत अलखित भाव मृत्यु हरप्रान ॥
करि अभिमन्त्रित रघुनायक त्यहि जब आकर्ण कीन संधान।
तब शर आननते उत्थितभो कालो धुआँ शृङ्ग अनुमान ॥
तासों प्रज्वलित भै ब्रह्मानल उठी बिशाल ज्वाल ततकाल।
प्रलय मेघसम शरगर्ज्यो तब करिकै शब्दमहाबिकराल ॥
तासु शब्द सों जगपूर्यो सब काँपी भूमि बारहीं बार।
उखरि २ कै गिरि पादप बहु गिरिगे बसुन्धरा महँ यार ॥
CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

उछलन लाग्यो जल बारिधि को भे जग जीव सकल बेहाल ।
मनो उपस्थित भो तौने क्षण सचमुच प्रलयकाल खगपाल ॥
मरणप्राय भो दशआनन तब आपन मृत्युबान पहिंचान ।
जान्यो याही ब्रह्मअस्त्र ते निश्चय नाश होयँ मम प्रान ॥
कौशिक पायँन को सुमिरण करि शायक तज्यो राम रघुराय ।
महाबेग ते सो रावण उर लाग्यो आय घोर क्षत छाय ॥

स० । बक्ष बिदारि दशानन को धँसि बान तुरन्त गयो पातालहि ।
स्यन्दनते भुविमाहिं गिस्यो तनचेतन नाहिं रह्यो दशभालहि ॥
बन्दि अनन्दित भे सुरबृन्द झरैं नभ ते कुसुमावलिमालहि ।
जै रघुनन्दन दुष्ट निकन्दन जै जै जै दशस्यन्दन लालहि ॥

गिस्यो मूर्च्छित ह्वै बसुधामहँ निश्चरनाथ बीर दशमाथ ।
रक्त कि धारा बह आनन ते इत उत छटपटात खगनाथ ॥
शेष निशाचर भय पागे अति भागे आपन प्रान बचाय ।
हाय हाय करि रोवनलागे कही न जाय दशा सो भाय ॥
भूमि गर्भ महँ जाय ब्रह्मशर करि पाताल गङ्ग असनान ।
राजहंस को तन धारण करि आयो जहां राम भगवान ॥
रूप आपनो पुनि धारण करि प्रबिश्यो रामतूण महँ जाय ।
भये अनन्दित कपि भल्लुक सब जयजयकार करत हर्षाय ॥
सूर्य चन्द्रमा बिधि देवाधिप बरुण कुबेर आदि दिगपाल ।
तैंतिस कोटि देवता नभ महँ ठाढ़े लखैं हाल दशभाल ॥
करैं चिन्तवन बहु भाँतिन सब जेते तहाँ अमर समुदाय ।
कोऊ भाषत हैं अब की तौ निश्चय मस्यो निशाचरराय ॥
करपग एकौ कछु डोलत नहिं अब सन्देह नाहिं मृतुमाहिं ।
कोऊ कहैं यहि बदकारी को है बिश्वास नेकहू नाहिं ॥
निश्चय होवै हमैं कौनबिधि यह मरि जियो अनेकन बार ।
कपटभाव ते परो समर महँ है यह महाछली बदकार ॥
जीवत रहिगा यदि कौनिउँ बिधि अबकीबार लङ्क भर्तार ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

याके करते तौ जान्यो ना हम सबको उबार दिन चार॥
ताते लङ्काढिग घोरुयो महँ तबलग कोऊ जाय ना भाय।
जबलग आछीबिधि निश्चय नहिं दशमुख चिताधूम दरशाय॥
होत बतकही यह देवन ते उत जहँ परो निशाचरराय।
दूतआय तहँ हरिशंकर के वाको देखि देखि फिरिजायँ॥
श्वास न आवत अब कोऊकह कोउकहै जियतभगैं भयखाय।
रह्यो दशानन यहि बिधिको भट मर्यो न जासुत्रास बिनशाय॥
इते हकीकति अस बीतति भै उत अब सुनौ राम को हाल।
करन चिन्तवन उरलागे अस यह मम परमभक्त दशभाल॥
शाप पायकै सनकादिक को तन धरि भयो निशाचर आय।
पर्यो दुखित अब यहि औसरपर तजै परान नहीं शकभाय॥
दर्शन दैकै करौं मुक्तयहि यहि क्षण उचित अहै यह बात।
पै उर आशय त्यहि जानन को भेजौं प्रथम तासु ढिगतात॥
यह बिचारिकै प्रभु दायानिधि लषणहिं बोलि कह्यो समुझाय।
तुमसन शिक्षा इकभाषौं मैं बन्धव बचन सुनौ मनलाय॥
हम तुम दोऊ राजबंश महँ सम्भव भये लेहु असजानि।
पै अभाग्यबश तजि आपन गृह बनमहँ बसे आनिकरि थानि॥
रहे मुनिनसँग कछु बासरलगि अबसँग रहत कीश औ भालु।
बीती इतनी बय धोखेहि महँ जान्यो कछु न नीति को हालु॥
ब्याहि जानकी निमि मन्दिर ते आयन जबै आपने धाम।
नीति महीपन की जानन को रह्यो हमार बहुत मन काम॥
पै विधि करणी अरु भावीबश भई न पूरि हमारी आस।
होय वही जो होय भागमहँ प्रापत भयो आय बनबास॥
नगर अयोध्या कहँ जैबे जब तब अब करन परी म्वहिंराज।
पै बिनु सीखे राजनीति के करिबे कौन भाँति नृप काज॥
नीति सीखिबो अब वाजिब है इतना कहा मानिल्यो तात।
रावण राजा यहु राजन महँ अहै प्रधान जगत बिख्यात॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बुद्धि निश्चरी महँ परिकै यहिं यदपि अधर्म कर्म बहु कीन।
राजनीति के ढँग जानन महँ है यह सब प्रकार परबीन॥
जाय तासु के ढिग आतुर तुम आवहु राजनीति सिखि भाय।
रत्न कुठामहुँ में त्यागिय नहिं आगम निगम कहत अस न्याय॥
पाय सु आयसु रघुनायक को लक्ष्मण गये जहाँ दशमाथ।
शराघात ते है ब्याकुल अति शक्ति न उठन केरि खगनाथ॥
देखि लक्ष्मण कहँ आवत ढिग रावण बिनय सहित शिरनाय।
कोमल बाणी सों बोलत भो सुनिये नाथ दया दरिआय॥
महा मोहबश शत्रुभाव गहि तुम्हरे सङ्ग किह्यों संग्राम।
अति अपराधी मैं स्वामीकर कीन्ह्यों महा नकारो काम॥
मरण समैया अब पासै मम ताते क्षमौ मोर अपराध।
धरौ शीशपर पद पङ्कज प्रभु पुरवो मोरि चित्त की साध॥
लषण लाल तब समुझायो त्यहि या महँ दोष तुम्हारो नाहिं।
लेख बिधाता को होवै हठि है यह बात बिदित जगमाहिं॥
मुखिया भूपति यक क्षिति महँ तुम जानत सर्व शास्त्र मतिमान।
नीति सिखन के हित तुम्हरे लग पठयो मोहिं भानुकुल भान॥
लषण लालकी सुनि बानी बर लाग्यो कहन निशाचर राय।
कौन नीतिहै अस दुनिया महँ जानत ज्यहि न आपु रघुराय॥
हम कुमारगी नय कहिबे का निश्चर बुद्धि महा अज्ञान।
नीति रीतिहै यत दुनिया महँ उनहिंन सकल कीनि निर्मान॥
पै यदि सेवक के मुखते कछु स्वामी सुनन चहैं यहिकाल।
मम ढिग आवैं तौ दाया करि दर्शन देहिं हरण अघजाल॥
इक तौ यहि क्षन हौं निर्बल तन दूजे भये कण्ठ गत प्रान।
जाय सकौं ना प्रभु अन्तिक महँ इतना बचन करौ परमान॥
दाया करिकै यदि आवैं इत दर्शन देहिं आनि जनजानि।
थोर बहुत जो कछु जानत मैं कहिहौं तौन भाषि मृदुबानि॥
बैन दशानन के सुनिकै इमि लक्ष्मण कह्यो राम सों जाय।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

नीति न भाषत प्रभु हमसों वह अस अभिलाष रह्यो दरशाय ॥
दर्शन चाहौं दीनबन्धु के पै अब उठन शक्ति म्वहिं नाहिं ।
नतु चलिजातिउँ ढिग स्वामी के यह लालसा तासु मनमाहिं ॥
सुनि यह आशय दशआनन को करुणासिन्धु राम रघुनाथ ।
गे चलि तुरतै त्यहि अस्थल कहँ जहँ पर पस्यो बीर दशमाथ ॥
जाय सामुहें प्रभु ठाढ़े भे दशआननहिं कीन परणाम ।
दिव्यदृष्टि ते दशकन्धर तब लख्यो बिराटरूप श्रीराम ॥
देखि विश्वमय रघुनन्दन कहँ रावण उर बढ़ाय अनुराग ।
हाथ जोरिकै मृदुबाणी ते प्रभु को करन संस्तवन लाग ॥

स० । हे प्रहलादपती धरतीधर शूकर मच्छप कच्छप नामी ।
बावन क्षत्रि नशावन पावन रावन दावन हे सियस्वामी ॥
हे भ्रम फन्दन दुष्ट निकन्दन हे नँदनन्दन हे खगगामी ।
भक्तनको बिसराम थली सियराम सबन्धु नमामि नमामी ॥
लाखनदासनकी अभिलाखन राखन सत्य बिभाखनस्वामी ।
हे बलसिन्धु दुखारिन बन्धु शुभानन इन्दव अन्तर्यामी ॥
बन्दि अनन्दन आँनदकन्दन हे दशस्यन्दन नन्दन नामी ।
भक्तन को बिसराम थली सियराम सबन्धु नमामि नमामी ॥

तुम सुखराशी अविनाशी प्रभु व्यापक विश्व ओज भगधाम ।
करुणासागर सब गुणनागर आरत हरण शरणप्रद नाम ॥
जानि आपनो जन दायाकरि धरिये चरणरेणु ममनाथ ।
दास पुरानो मैं स्वामी को निश्चर भयों शाप लहि नाथ ॥
जन्म बीति गे द्वै भर्मत जग सुनिये रमारमण भगवान ।
बुद्धि आसुरी ते कीन्ह्यों ना कछू अधर्म धर्म को भान ॥
करिकै करुणा अब करुणाकर क्षमिये सकल मोर अपराध ।
दास आपने को भूलौ जनि हेरिय नेक नजर पल आध ॥
मोसन पूछत राजनीति प्रभु यह तौ बातयुक्त कछु नाहिं ।
केवल कारण इक आपहि हौ जेतक नीति अहै जगमाहिं ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अस सामर्थी को दुनिया महँ सिखवै तुम्हैं नीति ब्यवहार ।
सुनि असबानी दशआनन की बोले रमारमण कर्तार ॥
सत्यवार्ता तुम भाषत जो सुनिये लङ्कनाथ बलवान ।
अवशि बतावो नयमारग कछु तुम प्राचीन भूप मतिमान ॥
भल कै जानत राजनीति तुम भुजबल जित्यो सकल संसार ।
सकल सुरासुर बश कीन्ह्यों तुम अति बिक्रमी बोध आगार ॥
हाल तुम्हारो जो जानो है धर्माधर्म केर दशभाल ।
यथातत्थ्य सो यहि औसर पर जानत नहीं अन्य महिपाल ॥
भाषि सुनावो सो हमका कछु यहि बिधि कह्यो राम रघुनाथ ।
कोमल बाणी ते बोल्यो तब अतिशै धीर बीर दशमाथ ॥
अंतिम समया है स्वामीमम निकरत बचन न प्रान बिहाल ।
तद्यपि मति सम कहि भाषत कछु सुनिये धर्मनीति को हाल ॥
उत्तम कारज के करिबे कहँ आनै जबहिं चित्त में ख्याल ।
तजि कै आलस त्यहि कारज को पूरण करै अवशि ततकाल ॥
त्यहिमहँ आलस के कीन्हे ते महा असाध्य होत सो काम ।
इक दुइ बातैं यही बिषय की सुनिये दयाधाम श्रीराम ॥
इकदिन सुरपुर ते आवत मैं स्यन्दन चढ़ो गगन की राह ।
तहँ ते यमपुर अवलोक्यों मैं बने दुआर चारि नरनाह ॥
तीन द्वारमहँ तौ सज्जन गण आनँद सहित करैं तहँ बास ।
चौथ दुअरवा दिशि दक्षिण जो तहँ पर रहैं पातकी खास ॥
जानि जात नहिं तहँ निशिदिन कछु छायो रहै तिमिर सब काल ।
विविध भाँति के नरक कुण्ड तहँ बने अनेक महा बिकराल ॥
तहँ पर बोरैं लै पापिन को यम के दूत देयँ बहु त्रास ।
मूंड़ निकारैं जब ब्याकुल ह्वै मारैं बिषम गदा यम दास ॥
कठिन दण्ड ते अति आरत ह्वै त्राहि त्राहि सब करैं पुकार ।
दशा देखिकै अस तिनकी तब मोरे हृदय भयो दुखभार ॥
दाया लागी प्रभु मो कहँ तब मैं अस चितमा किह्यों बिचार ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अवशि एकदिन इन पापिन को देहौं मैं असह्य दुख टार॥
चिन्तित आयों चलि लङ्का कहँ उर सो ठनी रही रघुराय।
अवशि एकदिन चलि जैहौं तहँ देहौं सकल कुण्ड पटवाय॥
टारत आयों आजु कालिह करि यहि बिधि बीति गयो बहुकाल।
मनकी चीती रहि मनहीं महँ अब तौ पर्यों काल के गाल॥
तत्पर होत्यों यदि ताही क्षण पूरण होत संकलप म्वार।
आलस कीन्हे ते रहिगा सो शोचे अब न होत कछुकार॥
कथा दूसरी बतलावत हौं सुनिये सावधान भगवान।
यकदिन मोरे चित आई अस बर्णत ताहि होत मनम्लान॥
लङ्क हमारी यह सोने की शोभा जासु बरणि ना जात।
जा महँ बसिबे की इच्छा करि सब दिन देव रहत ललचात॥
खार सिन्धु मधि सो राजत है अनुचित महा एक यह बात।
क्षीर घृतादिक के ब्रह्मा ने जग महँ रचे पयोनिधि सात॥
तीनि लोकको अधिकारी मैं ममपुर उचित नहीं निधिखार।
करौं क्षीरनिधि यहि सागर कहँ अस उर गुनत रह्यों कर्तार॥
काज करन को जब चाहौं वह तब फँसि अन्य बिषय महँ जाउँ।
करत हेलना दिन बीते बहु अब यहि दशा माहिं पछिताउँ॥
आलस करिकै फल पायों यह रहिगो तासु खेद हिय माहिं।
ताते स्वामी शुभ कारज महँ आलस करब नीक है नाहिं॥
अन्यवार्ता इक भाषौं प्रभु बिगरी वहौ आलसै माहिं।
अब तौ केवल कहिबेही को हिय ते मिटी खेद सो नाहिं॥
रचे बिधाता के जगती महँ यावत भूत प्रेत निशिचारि।
भूचर खेचर नागादिक नर अगणित जीव जौन असुरारि॥
सदा अमरपुर महँ जैबे को सब के हिये रहत अनुराग।
पै अति दुर्गम सो ठाहर है कीन्हे बिना योग जप याग॥
कोऊ कोऊ जन करणी करि आनँद सहित देवपुर जाहिं।
यावत पापीजन दुनिया महँ सुरपुर जाय सकत ते नाहिं॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

इकदिन मनमा मैं शोच्योंअस करिहौं जक्ककेर दुख नास।
जामहँ दिविके अभिलाषी जन सुरपुर चलेजाहिं अनयास॥
देहौं आयसु विश्वकर्मा को देई बाँधि स्वर्ग सोपान।
तत्पर होत्यों यदि ताहीक्षण बनि सब कामजाति भगवान॥
आजु शोचिबेका होतैना सबकर सिद्ध होत मनकाम।
कीरति अचला मम होतैजग रहतै युगन युगन लौं नाम॥
पै आलसते फलपायो यह निष्फल भई रहीयत आस।
सुनि दशआनन की बानी इमि बोले रामचन्द्र सहुलास॥
पाप विषयकी अब शिक्षा कछु कहिये लङ्कनाथ मतिमान।
कहन लाग तब दशआनन पुनि सुनिये रामचन्द्र भगवान॥
पापकर्म मैं बहु कीन्हे प्रभु कहँलग कहौं तौन सबगाथ।
शर प्रहार ते तन ब्याकुल अति बोलत पीरहोत बड़ि नाथ॥
तद्यपि तुमसन इक मिसाल मैं भाषत अहौं सुनौ भगवान।
शूर्पणखाके श्रुति नासा जब काट्योरहे लषण बलवान॥
रोवत आई वह मोरे ढिग बदन मलीन क्षीन तनदीन।
कहि निजगाथा सिय हरिबे की शिक्षा वहीं मोहिं प्रभुकीन॥
एक बार तौ चितआई अस यहि क्षण नहीं उचित यह काम।
समय पायके पुनि हरिहौं सिय असगुनि टारि दिह्यों मतिधाम॥
थोरिहि बेरामहँ शोच्यों पुनि राखत जो यह काज उठाय।
पूर न ह्वैहै तौ पाछे फिरि यहिते हरौं यही क्षण जाय॥
पाप लालसा बड़िभारी है वहि क्षण चल्यों लङ्कते धाय।
लायों सीता हरि कानन ते दीन्ह्यों बंशनाशि करवाय॥
केवल सीताहित मेरोकुल ह्वैगो नाथ हाथते नाश।
मैंहूं ताकोफल पायों यह मानिय सत्य बचन जगबास॥
ऐसि शीघ्रता जो करत्योंना यदि यहि पापकर्म के माहिं।
तौ प्रभु करते यहि अवसर पर होतै बंशनाशि मम नाहिं॥
याते नरको अस वाजिब है करि चिन्तवन आनि उरज्ञान।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जात पापदिशि मन रोकै हठि तौ सब भाँति होय कल्यान ॥
यहिबिधि कहिकै दशआनन ने प्रभु कहँ नीतिदई समुझाय ।
गिरामूक ह्वै पुनि बिह्वल भो आयो मृत्यु समय नियराय ॥
एक दृष्टिते प्रभु पायँन दिशि निरखत भयो सहित अनुराग ।
त्रिभुवन बिजयी लङ्कनाथ ने कीन्ह्यो पुनः प्राण परित्याग ॥
बजे नगारे तब देवन के नभते सुमनमाल झरिलाय ।
गावनलागे गुण राघव के जय जय सियारमण रघुराय ॥
सिद्ध देवता मुनि मोदित सब देखैं रामरूप सुखपाय ।
देव अङ्गना आरति साजैं नितैं विविध भाव बतलाय ॥
सूर्यकिरण सम दशआनन के तनते कढ़ी ज्योति इकभाय ।
सकल देवतन के देखत सो प्रभुपद लीनभई खगराय ॥
देखि तमासा यह देउतागण करि आश्चर्य लगे बतलाय ।
लङ्काधिप सम बड़भागी कोउ जगमहँ अन्य नाहिं दरशाय ॥
युक्त सत्त्वगुण हम देउता सब निशिदिन करैं बिष्णुगुण गान ।
तदपि भयापदि युत दुनिया महँ भर्मत सदा रहत हैरान ॥
सुर द्विजघाती उतपाती यह रत परदार महा बदकार ।
अधम निशाचर सो सहजे महँ प्रभुपद प्रविशि मुक्तभो यार ॥
बिना परिश्रम लह्यो परमपद जो देवन को नहीं ठिकान ।
काहे न पावै सो शुभगति अस ध्याये बैरभाव भगवान ॥
इतै हकीकति अस बीतति भै उत अब सुनौ लङ्कको हाल ।
भयो प्राणहत जब लङ्कापति संगरभूमि माहिं खगपाल ॥
गयोदूत तब रनिवासे महँ दुःखित कह्यो वृत्त सब जाय ।
स्वामिमरण सुनि महरानी सब बिलखन लगीं महाअकुलाय ॥
लाल कमलहू ते कोमल अति जिनके चरण अङ्ग सुकुमार ।
ब्याकुल धाईं रण पुहमी कहँ रोवत झरत नैन जल धार ॥
देखि दुर्दशा निज स्वामी की लगीं बिलाप करन सब बाम ।
जे गजगमनी नृपरमनी सब लोटैं धरा रूप अभिराम ॥
CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

हाथ प्रहारैं दोउ छातीपर पटकैं बिकल धरातल माथ।
भुजबल सवँरन करि स्वामी को बिलपैं नाथ नाथ हानाथ॥
भीजि चुनरिया गईं आँशुन सों मिलिगे धूरि रेशमी पाट।
केश बिथुरिगे छुटि धरतीपर लागी हिये दुःखकी हाट॥
बहैं पनारा जलधारादृग मानहुँ गङ्ग यमुन की धार।
अङ्ग आभरण सब ध्वंसित भे सबतन मलिन भये शृङ्गार॥
हाय समानी सब तन मनमा मुखअरबिन्द गये कुँभिलाय।
बायु झकोरन ते मानौं भुवि कदली खम्भ गिरे हहराय॥
बदन सूखि गे ब्याकुलताबश नशिगो हृदय केर उतसाहु।
धूरि धूसरित मुख मैले भे मानहुँ ग्रस्यो चन्द्रमन राहु॥
अति अधीर ह्वै मन्दोदरि तिय पुनि २ माथ पीटि बिलखाय।
गावनलागी गुण स्वामी के दशा सो कहि न जाय खगराय॥
मोहिं अकेली तजि लङ्कामहँ तुम केहि ओर सिधारे नाथ।
तुव बियोग महँ किमि राखौं मैं आपन प्रान नाथ हानाथ॥
कौन कुअवसर महँ लाये हरि तुम पिय काल अहिनि सियबाम।
रह्यो न बाकी कोउ लङ्कामहँ सूनो भयो राजसी धाम॥
हा शिवरानी शिवदानी अति जगमहँ बिदित तुम्हारो नाम।
लख्यो तमासा यह नैनन ते आये बिपति समय ना काम॥
बहिनि तुम्हारी पिय तुमहीं का भई कृतान्त सरिस यहिकाल।
जाके सम्मत ते लायो हरि बिना बिचार राम की बाल॥
बिदित बीरता तुव तीनिहुँ पुर भुजबल जिते चराचर झारि।
कँपैं सुरासुर तुव साहस ते कोउ न करत सामुहें रारि॥
खेल अनोखो पै बिधना को ऐसो समय दिखायो आनि।
नर औ बनरन के सङ्गर मा भई तुम्हार प्रान की हानि॥
रहैं सशङ्कित तुव शङ्का ते सबदिन धर्मराज सुरराज।
नर शर लागे ते लोटत भुवि लागत तुम्हें तनक ना लाज॥
जगत पुरन्दर बल मन्दर प्रभु खल दल दलन देव प्रतिपाल।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तिन सों रिपुता करि पायो फल आयो तुरत शीश पर काल ॥
काह बिगार्यों मैं बिधना तव जो म्वहिं किये पुत्र पति हीन ।
गये कौनदिशि तजि स्वामी म्वहिं तुमना कर्म उचित यह कीन ॥
शिव निवास गिरि अरु नन्दनबन मन्दर चैत्ररथादिक ठाम ।
कहाँ न बिहरिउँ पति तेरे सँग पूरण भये मोर मन काम ॥
नगर अनेकन दिखलाये म्वहिं सङ्गै लिये यान आरूढ़ ।
सो सुख दुर्लभ भा स्वामीबिन बिधि कर्तब्य सत्य अरु गूढ़ ॥
मैं प्रिय कन्या मयदानव की लङ्का अधिप केरि प्रिय बाल ।
इन्द्रजीत की महतारी मैं जो सुर दर्प दलन बिकराल ॥
आजु गर्ब मम यहु चौपट भा बिधनै छीनि लीन अहिवात ।
हाय गोसइयाँ गति जानी ना बिगरी बनी बनाई बात ॥
हा पति लोटत तुम बसुधा महँ भे सब धूरि धूसरित गात ।
मुख कछु बोलौ दृग खोलौ तनि मोसन करत आजु किन बात ॥
त्यागि तुम्हारो भय लङ्का महँ देखौ घूसे जात शशिभान ।
इन्द्र पवन सुर निशशङ्कित सब घूमैं तुम्हैं परत नहिं जान ॥
शैन करत तुम निश्चिन्तित कस देखत लङ्क दशा कस नाहिं ।
दया न आवत कछु तुम्हरे हिय हम सब तिया दुखित बिलखाहिं ॥
प्रभुता तुम्हरी जग जाहिर भल अतिबल सुत कुटुम्ब अधिकार ।
राम बिरोधे गति ऐसी भै कुल कोउ रहा न रोवनहार ॥
वेही मुख हैं ये स्वामी के जिनको देखि चन्द्र सरमात ।
तिनपर बैठे खल कागादिक मारत चोंच मांस लै खात ॥
नाथ माथ ये जिनपर रुचि सह धारत मुकुट सूबरण क्यार ।
फोरत तिनको धरि दाढ़न सों निर्दय गिद्ध श्वान औ स्यार ॥
अञ्जन आँजे ये खञ्जन दृग जिन रुख देखि डरत सब आम ।
तिन्हैं चिल्हारिन खँदि चोंचन सों राख्यो नहिं निशान को नाम ॥
शाल शाख से भुज डारे ये जे प्रिय गरे होत जयमाल ।
जिन भुज धार्यो शर धन्वन को जीत्यो बड़े बड़े महिपाल ॥
CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जे भुज देखे अरि कम्पैं हिय कोउ न समर माहिं समुहान।
ते भुज मेले रज बसुधा महँ दांतन दाबि चिचोरत श्वान॥
कितकबार मैं समुझावा पति किह्यो न कालबिबश कछु ख्याल।
मानुष मान्यो नारायण को जो बलशालि काल को काल॥
भज्यो न कबहूं त्यहि स्वामी को ज्यहि ब्रह्मादि नवावत माथ।
बैरौ कीन्हे सुर दुर्लभ गति तुमका दीनि नाथ रघुनाथ॥
रावण रानी की बानी सुनि सुर मुनि सिद्ध सबै हरषान।
शिव ब्रह्मादिक सनकादिक मुनि प्रभुहि सराहि करत गुणगान॥
देखि दुर्दशा प्रिय भाई की लाग्यो बिभीषणौ बिलखान।
आयसु दीन्ह्यो लघुबन्धव कहँ करुणासिन्धु राम भगवान॥
तिन बिभीषणौ समुझावा भल आवा तौन राम के पास।
राम बुझावा तब आछी बिधि रावण क्रिया करौ सहुलास॥
पाय सुआयसु रघुनायक को बिधिवत देशकाल गति जानि।
कर्म मृतक को यत कीन्ह्यों सब रानिन दीनि तिलाञ्जलि आनि॥
निबृत ह्वैकै क्रिया कर्म ते प्रभु ढिग गये बिभीषण फेरि।
माथ नवायो प्रभु पायँन महँ करुणादृष्टि दीन प्रभु हेरि॥
फेरि बुलायो लघुबन्धव कहँ तिनते बचन कह्यो समुझाय।
तुम कपिनायक नल मारुतसुत भल्लुक अङ्गदादि लै भाय॥
साथ बिभीषण के जावहु मिलि सारहु तिलक कह्यो रघुनाथ।
तबहिं बिभीषण उत्साहित ह्वै प्रभुसन कह्यो जोरि युगहाथ॥
हे प्रभु दाया करि सेवक पर सुन्दर चरण कमल रजडारि।
पावन करिये यह लङ्कापुर अनुचर बिनय मानि असुरारि॥
बिनय बिभीषण की सुनिकै इमि लागे कहन राम सुखधाम।
पिता बचनके प्रतिपालन हित जाय न सकौं सखा तुव ग्राम॥
प्यारो बन्धव निज समताको पठवत ताहि तुम्हारे साथ।
पाय सुआयसु इमि स्वामी को चलिभे सकल नायकै माथ॥
आय पहूंचे सब लङ्कामहँ करि एकत्र सकल सामान।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जन बिभीषणै सिंहासन पर दियो बिठाय लषण भगवान॥
राजतिलक करि अति आछीबिधि दियो बनाय निशाचरराय।
भेंट गुजारी सब काहूने अस्तुति करत महा हर्षाय॥
फेरि बिभीषण सह आये सब जहँ सुखधाम राम भगवान।
यही हकीकति अस बीतति भै सुनिये अग्र चरित हरियान॥
राम बुलायो पुनि बनरन कहँ बोले बचन सहित अनुराग।
धन्य तुम्हारे बल पौरुषको हौ तुम सकल बीर बड़भाग॥
तुम्हरे बलते रिपु मारा मैं कीन्ह्यो बिजय बिषम संग्राम।
भये बिभीषण नृप लङ्कामहँ पूरण भये सकल मन काम॥
सहित हमारे यश तुम्हरो यह प्रीति समेत करिहि जो गान।
बिना परिश्रम नर तरिहै सो यह संसारसिन्धु बिन यान॥
कोमल बानी सुनि स्वामीकी सब कपि भालु गये हरषाय।
पुनि पुनि देखत मुख राघवको पायँन माहिं जात लपटाय॥
पुनि प्रभु टेर्यो हनुमन्ता को तुरतै पास पहूंचे आय।
पुत्र जाहु तुम अब लङ्का कहँ सीतहि खबरि सुनावहु जाय॥
तासु कुशल लै चलि आवहु इत सुनि अस बचन बायुकेलाल।
गये तड़ाका चलि लङ्का कहँ पहुँचे नगर मध्य उत्ताल॥
अमित निश्चरी अरु निश्चरगण हनुमत निकट पहूंचे आय।
पूजाकीन्हीं तिन आदर सों दीन्हीं जनकसुता दिखराय॥
माथ नवायो कपि दूरिहिते चीन्ह्यो रामदूत सिय माय।
पूछन लागीं मृदुबानी ते हे सुत! कहौ मोहिं समुझाय॥
कुशल कोशलाधिप बन्धव लघु कपिदल सहित अहैं केहिठाम।
सुनि अस बानी सियरानी की बोले हनूमान बलधाम॥
कुशल अयोध्यापति नीकी बिधि जीत्यो समर माहिं दशमाथ।
राज बिभीषण को अविचल भो भयो प्रसिद्ध जगत यशगाथ॥
सुनि कपिबानी हर्षानी सिय नैनन प्रेम आँशु उमगान।
तन पुलकावलि उठि आई भलि मनमहँ महामोद सरसान॥
CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

हे सुत हनुमत यहि औसर मैं प्रति उपकार करौं का त्वार।
सुखद पदारथ तुव वाणी सम मो कहँ लखि न परत संसार॥
आज राज मैं सब दुनिया की पायौं मातु लेहु असजानि।
जीतिसमर रिपुदल बन्धव युत सकुशल लखत स्वामि धनुपानि॥
यावत सद्गुण श्रुति भाषे सुत तुम्हरे हृदय बसैं हनुमान।
सदा सर्वदा सानुकूल रहँ बन्धव सहित राम भगवान॥
करौ यतन सो सुत बेगिहि अब देखौं नयन श्याम मृदुगात।
सुनि अस बानी सियरानी की गमने बातजात हर्षात॥
कुशल जानकी की राघव ते भाष्यो आय यथाबिधि गाय।
बोलि बिभीषण अरु अङ्गद कहँ अस समुझाय कह्यो रघुराय॥
मारुतसुत के सँग जावहु तुम लावहु सियहि सहादर भाय।
पाय सुआयसु रघुनायक को गे सब जहाँ जानकी माय॥
रहैं निशचरी जे सेवा महँ लङ्कप तिन्हैं दयो समुझाय।
सादर सीतहि अन्हवावा तिन भूषण बसन दिब्य पहिनाय॥
साजि सुखासन लै आये पुनि तापर चढ़ीं हरषि सियमाय।
चहुँदिशि रक्षक चोपदार बर गमने जहाँ राम रघुराय॥
त्रिजटा निशचरि है साथै महँ आये राम ठाम नियराय।
देखन धाये कपि भल्लुक सब रक्षक मना करत रिसिआय॥
कह्यो बिभीषण ते राघव तब आनौ सियहि पियादे पायँ।
देखैं माता की नाईं कपि यहि बिधि बिहँसि कहा रघुराय॥
राम बचन सुनि हर्षाने सब यावत भालु कीश समुदाय।
बजे नगारा नभ देवन के सुन्दर सुमन रहे झरि लाय॥
राख्यो सीता प्रथम अग्नि महँ चाहत प्रकट करन सो राम।
याही कारण ते करुणानिधि कछु दुर्बाद कह्यो मति धाम॥
सुनत निशचरी सब शङ्कित ह्वै लगीं बिषाद करन मनमाहिं।
मेटिसकै को प्रभु आयसु पै अस जग देखि परत कोउ नाहिं॥
स्वामि बचन सो धरि माथेपर अतिव बिनीत गुणनकी खानि।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

परम पुनीता यश गीता सम बोलत भईं जानकी रानि॥
देवर लक्ष्मण यहि अवसर तुम होहु हमार धर्म रखवार।
आगि बेगही प्रकटावो सुत लावो अब न नेकहू बार॥
सुनि सियरानी की बानी प्रिय सानी धर्मनीति पथमाहिं।
ज्ञानी बिरह सों सरसानी शुचि उत्तर लषण दीन कछु नाहिं॥
दृगन बारि भरि कर अञ्जलि करि प्रभुतन चितै रहे मनमारि।
भाषि सकैंना कछु आनन ते स्वामि निदेश सकैं नहिं टारि॥
लखि रघुनायक रुख लक्ष्मण पुनि इन्धनलाय आगि दइबारि।
प्रबल हुताशन की ज्वाला लखि कह्यो अशङ्क बिदेहकुमारि॥
कर्म बचन मन जो मोरे मन तजि रघुबीर आनगति नाहिं।
तौ तुम सबकी गति जानत हौ पावक मलय होहु हम काहिं॥
असकहि प्रभुपद उर धारणकरि चन्दन सरिस हुताशन जानि।
भईं प्रवेशित जगदम्बा तब कीरति अति पुनीत सिधिखानि॥

स०। यावत लोक कलङ्करहे प्रतिबिम्ब समेत दहे क्षणमाहीं।
देखत देव खड़े नभमें प्रभु कौतुक गुप्त लख्यो कोउ नाहीं॥
ह्वै द्विज पावक सत्य रमाश्रुति भाषत सो सियकी गहिबाहीं।
क्षीरसमुद्र यथा कमला तिमि आनि समर्प्यो राघवकाहीं॥

राम वाम दिशि सो राजत सिय शोभा सुभग कही ना जाय।
मनहुँ नीलनव बर बारिद ढिग कञ्चन कमल कली दरशाय॥
देव अनन्दित ह्वै गावैं गुण सुन्दर सुमन रहे बरसाय।
नचैं अङ्गना मन मोदित अति जय जयकार शब्द रह छाय॥
सहित जानकी रघुनन्दन प्रभु शोभा अति अपार रतिमार।
देखत हर्षे कपि भल्लुक सब जय जय करत मारि किलकार॥

इति श्रीभार्गववंशावतंसश्रीमन्मुंशीनवलकिशोरात्मजस्य श्रीमुंशीप्रयाग-
नारायणस्याज्ञाभिगामीउन्नामप्रदेशान्तर्गतमसवासीग्रामनिवासीपण्डित
बन्दीदीनदीक्षितनिर्मितश्रीविजयराघवखण्डेयुद्धकाण्डेश्रीरामचन्द्र
विजयवर्णनोनामाष्टमोल्लासः॥ ८॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

श्रीरघुनन्दन पद बन्दन करि सब बिधि ध्याय जानकीमाय।
कथा अगारी की गावों पुनि करो सहाय प्रभञ्जनजाय॥
मातलि सारथि सुरनायक को त्यहि रघुनायक लीन बोलाय।
आयसु दीन्ह्यों त्यहि जैबे को मातलि चल्यो चरण शिरनाय॥
सदा स्वारथी सुर आये तब परमारथी सरिस कहि बैन।
गावन लागे गुण राघव के हे प्रभु कमलनैन सुखदैन॥
दायाकीन्ह्यों प्रभु दीननपर अहो दयाल देव प्रतिपाल।
विश्वद्रोहरत यह कामी खल निज अघ गयो कूर दशभाल॥
ब्रह्मरूप तुम अविनाशी प्रभु सहज उदास एक रसभास।
अनघ अनामय अज करुणामय निर्गुण निराकार जगवास॥
मीन कमठ नरहरि शूकर बर बामन परशुराम बपुधारि।
जब २ देवन दुखपायो प्रभु धरि तन तुमहिं दीन त्यहि टारि॥
सुरपरितापी अतिपापी खल कोही निरत मोह मद काम।
अधम निशाचर तन रावन यह सोऊ गयो नाथ तुवधाम॥
हमरे मनमा यह बिस्मय बड़ि सुनिये दीनबन्धु भगवान।
हम परपद के अधिकारी सुर स्वारथ रत तुव भक्ति भुलान॥
बूड़त उछरत भव बारिधि महँ पावत नहीं थाह नरनाह।
रक्षाकरिये उद्धरिये प्रभु हरिये महा बिपति की दाह॥
सिद्ध देवता करि बिनती इमि जहँ तहँ खड़े जोरि दुउहाथ।
अतिव प्रेम सों चतुरानन तब अस्तुति करत नाय महिमाथ॥
हे रघुनायक धनुशायकधर हे सुखधाम राम घनश्याम।
सदा तुम्हारी जय दायामय आमयरहित रूप अभिराम॥
यहि भववारन के दारन हरि समरथ गुणागार कर्तार।
सुयश उजागर नय नागर प्रभु चरित उदार जक्त भर्तार॥
काम करोरन ते सुन्दरछबि रबिइव भासमान भगवान।
हन्यो दशानन अहि खगपति सम सुरमुनि सिद्ध करत गुणगान॥
शोक बिभञ्जन जनरञ्जन बिभु गत अभिमान ज्ञान आगार।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ब्रह्म निरञ्जन महिभर भञ्जन धारत अति उदार अवतार ॥
सर्वव्यापक अज अनादि इक राम नमामि नमामि नमामि ।
रघुकुलभूषण दुखदूषण हर दीनदयाल भक्त अनुगामि ॥
शरणागत के प्रतिपालक तुम कीन्ह्यों भूप बिभीषण दीन ।
अतुल बाहुबल अबल सहायक खलदल दलन माहिं परबीन ॥
नाथ तवानन शशि देखत शुचि भे कृतकृत्य कीश समुदाय ।
हम सब देवन को जीवन धिक भौ निधि भ्रमत भक्ति बिसराय ॥
दायाकरिये अब दायानिधि हरिये बुद्धि भेद अज्ञान ।
जाते दुख सुख को एकै सम गुनिकै सुखी होन भगवान ॥
हे खलखराडन महिमराडन कर सेवित शिवा शम्भु युगपाद ।
देहु अनन्दित बर याही प्रभु बन्दौं चरण कमल करि याद ॥
बिविध भाँति सों करि बिनती बिधि भये सप्रेम प्रफुल्लितगात ।
बदन बिलोकत रघुनायक कर लोचन नहिं अघात ललचात ॥
आये दशरथ त्यहि औसर तहँ तनय बिलोकि नैन जलछाय ।
देखत यकटक छबि राघव की गये सनेह भाय बिकलाय ॥
किय प्रणाम प्रभु लघुबन्धव सह आशिर्बाद पितैं तब दीन ।
तात तुम्हारे शुचि प्रभाव ते रण महँ शत्रु बिजय मैं कीन ॥
बढ़ी प्रीति बहु सुत बानी सुनि दृग जल देह रोम उमगान ।
प्रेमभाव लखि रघुनायक प्रभु दीन्ह्यों पितै चितै दृढ़ज्ञान ॥
भेद भक्ति महँ मन लायो नृप ताते मोक्ष न पायो वाम ।
सगुण उपासकगति चाहत नहिं तिन कहँ भक्ति देत निज राम ॥
प्रभु पद बन्दन करि नीकी बिधि दशरथ हर्षि गये सुरधाम ।
अनुज जानकी युत रघुकुलमणि राजत भूप रूप अभिराम ॥
अति आनन्दित ह्वै सुरपति तब अस्तुति करत भाषि गुणग्राम ।
जय श्री रघुबर सुख शोभा घर अशरन शरन कल्पतरु नाम ॥
शारँगशर करवर तरकसधर प्रबल प्रताप शत्रुकर ताप ।
खल दल खराडन अतिप्रचराड भुज मराडन मही महीय शथाप ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अति अभिमानी शठ लङ्कापति सुर गन्धर्व सर्व बशकीन।
सिद्ध मुनीश्वर अहि मानव खग सब कहँ बिबिध भाँति दुखदीन॥
अतिशय क्रोही परद्रोही खल मल आगार महा बदकार।
ताको उत्तम फल दीन्ह्यो प्रभु दयाअगार चित्त औदार॥
सुनौ दयानिधि अब बिन्ती मम मो कहँ रह्यो महा अभिमान।
मोसम नाहीं कोउ दुनिया महँ सो अब सबप्रकार बिनशान॥
भयों अनन्दित अब सबही बिधि लखिकै स्वामि चरण जलजात।
पूरण करिये अभिलाषा अब भाषत जौन हृदय की बात॥

क०। कमल ललाम दाम सुन्दर शरीर श्याम शोभा अभिरामक्रीट मुकुट कसे रहो। कर धनुतीर धीर बीर सो तुणीर कटि आनन अमन्द चन्दमन्द बिहँसे रहो॥ उर बरमाल सुबिशाल बलशाल बाहु स्वजन दयाल दया दृग दरशे रहो। हर हृदि हेतु बन्दि रघुकुलकेतु भवसागर के सेतु मम मानस बसे रहो॥

दास आपनो म्वहिं जानिय प्रभु रमानिवास पूरि करु आस।
भक्ति आपने पद कञ्जन की हम कहँ देहु लेहु हरि त्रास॥
जनसुखदायक सब लायक तुम हे सुखधाम राम तन श्याम।
हे रघुनायक धनुशायकधर प्रणवत चरण कमल अभिराम॥
अब करि दाया अवलोकहु म्वहिं आयसु देहु करौं मैं काह।
सुनि पवि पानी की बानी इमि बोले बचन राम नरनाह॥
परे निश्चरन के मारे महि यावत भालु कीश समुदाय।
केवल ममहित तन त्यागे इन देहु जियाय सबहि सुरराय॥
गिरिजा रघुपति की बानी यह है अति गूढ़ लेहु अनुमानि।
जाहि जनावैं जन जानै स्वइ सकै न स्वामि दया बिन जानि॥
एक मुहूरत महँ त्रिभुवन को मारि जियाय सकैं भगवान।
केवल प्रभुता के देबेहित अस सुरपतिहि दीन फरमान॥
सुधा बर्षिकै सुरनायकने दीन जियाय सर्व कपि भालु।
प्रभु ढिग आये आनन्दित ह्वै खगपति सुनौ अग्र को हालु॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सुधा वृष्टि भै हुउ सेना महँ केवल जिये कीश औ भालु।
जिये न निश्चर क्यहि कारण ते त्यहिकर सुनौ भवानी हालु॥
राममयी भे तिन सब के मन ताते मुक्त भये नभवास।
वैर भाव ते भगवन्तहि भजि छूटे बे प्रयास भव पास॥
देवअंशभव कपि भल्लुक गण सब जी उठे राम रुख पाय।
दीनहितू को रघुनायक सम कीन्हें मुक्त अधम समुदाय॥
अतिशै बिषयी उत्पाती खल मल आगार निशाचर राय।
सुर मुनि दुर्लभ गति पाई सो अस रघुराय दया दरिआय॥
रुचिर बिमानन पर चढ़ि चढ़ि पुनि गमने देव फूल बरसाय।
जानि सुऔसर शिव आये तहँ राजे जहाँ राम रघुराय॥
परम प्रेम सों कर संपुट करि सुभग सरोज दृगन भरि बारि।
गदगद बाणी सों पुलकित तन लागे बिनै करन त्रिपुरारि॥
रघुकुलनायक धनुशायकधर स्वामी रक्षा करौ हमारि।
जन सुखदायक सब लायक तुम हे खरदूषणारि असुरारि॥
बायु बिडारै जस बादल दल औ जिमि अनल देत बनजारि।
तस प्रभु नाशत मोहादिक भ्रम समरथ सब प्रकार सुखकारि॥
प्रबल अज्ञता तमहारी रबि निर्गुण सगुण गुणाकर नाथ।
बसहु निरन्तर मम मानस महँ माँगत बन्दि जोरि युगहाथ॥
काम कोह मद मोहादिक गज मारनहेत सिंहबल धाम।
बसौ सदा जन मन काननमा सीता अनुज सहित श्रीराम॥
बिषै मनोरथ बहु अम्बुज बन पाला सरिस बिनाशक ताहि।
भौनिधिमन्थन को मन्दर सम आपदिहरण बेदकह जाहि॥
दुस्तर संसृति ते तारहु प्रभु धारहु बेश बिरद की लाज।
बसौ निरन्तर उर अन्तर मम सीता अनुज सहित रघुराज॥
कौशलपुरमा ज्यहि औसर पर होइहि राजतिलक प्रभुक्यार।
चरित मनोहर अवलोकन हित ऐहौं तहँ अवशि मैं यार॥
यहि बिधि बिन्तीकरि गिरिजापति गे जब बिदामाँगि निजधाम।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

आय बिभीषण प्रभुअन्तिक तब कहशिरनाय बचन अभिराम ॥
मारि दशानन कुलसैना सह प्रभु जग सुयश कीन बिस्तार ।
अधम हीनमति मो दुखिया पर कीन्हीं कृपा दीन अधिकार ॥
अब पुनीत करि घर अनुचर को मज्जन करिय युद्धश्रम जाय ।
कोश संपदायत मन्दिर महँ देहु दयाल कपिन बँटवाय ॥
सबबिधि मोकहँ अपनाइय प्रभु फिरि पुरचलिय मोहिं लै साथ ।
बचन बिभीषण के सुनिकै मृदु पुल के सजलनैन रघुनाथ ॥
धाम खजाना तुव मेरो सब मानिय सखा सत्य मम बात ।
दशा भरतकी उर चिन्तन करि मोकहँ निमिष कल्पसमजात ॥
बेष तपस्वी को धारण किये कृशातन जपै निरन्तर मोहिं ।
लखों बेगिही प्रिय बन्धव को सो करु सखा निहोरौं तोहिं ॥
अवधि ब्यतीते पर जैहौं जो पैहौं जियत नाहिं प्रिय भाय ।
प्रीति भरत कै उर चिन्तन करि पुनि २ पुलकगात रघुराय ॥
सदा सर्वदा मोहिं सुमिर्‍यो मन मुदसह करौ कल्पभरि राज ।
फेरि सिधार्‍यो मम मन्दिर कहँ जहँपर जात सन्त शिरताज ॥
बचन मनोहर सुनि राघव के गहे बिभीषण पद हर्षाय ।
भये अनन्दित कपि भल्लुक सब जय २ कार करत गुणगाय ॥
फेरि बिभीषण गे मन्दिर कहँ मणिगण बसन यान भरवाय ।
धर्‍यो आनिकै प्रभुआगे सो तब हँसि कह्यो राम रघुराय ॥
सखा बिभीषण चढ़ि पुष्पक पर नभमहँ जायदेहु बर्षाय ।
जाय बिभीषण तब अम्बर महँ बर्षे पटाभरण समुदाय ॥
रुचि सह जाके मनभावै जो स्वइ स्वइ लूटि लेहिं उरगारि ।
फलको धोखाकरि बानर कोउ मणि मुख मेलि देहिं महिडारि ॥
देखि तमासा यह बनरन को बिहँसैं अनुज सीय सहराम ।
परमकौतुकी प्रभु दायानिधि दासन सदा देत बिश्राम ॥
ध्यान न पावत हैं जाको मुनि गावत नेति नेति कहि वेद ।
सो करुणाकर कपि भालुन सँग करत बिनोद मोद बिनखेद ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

योग तपस्या व्रत नानामख कितनौ नेम धर्मकर कोय ।
इनते रीझैं ना रघुपति तस जस परसन्न प्रेम ते होय ॥
पहिनि पहिनि कै आभूषणपट आये भालु कीश प्रभु पास ।
नानारङ्गन के बानरभट देखत हँसत राम सहुलास ॥
चितै सबन तन करि दाया अति बोले मधुर बचन रघुराज ।
मार्‍यो रावण मैं तुम्हरे बल कीन्ह्यों बिभीषणौ महराज ॥
निज २ मन्दिर अब जावहु सब सुमिर्‍यो मोहिं डर्‍यो जनिकाहु ।
सुनि प्रभुबानी अकुलाने कपि सबकर भङ्ग भयो उतसाहु ॥
हाथ जोरि कै सब बोलत भे तुव मुख कहत नीक सब नाथ ।
मोह होत है हम सबहिन का सुनि तुव बचन अयोध्यानाथ ॥
दीन जानि कै अपनायो कपि तुम त्रैलोक्य ईश भगधाम ।
मशाकौं कस हित खगपति को लेहु बिचारि दयानिधि राम ॥
प्रभु अनुमान्यो कपि भालुन की इच्छा गेह जानकी नाहिं ।
ताते इनकहँ दुख लागत है हैं सब मगन प्रेमरस माहिं ॥
हठकरि पठयो रघुनन्दन तब कपि अरु भालु बिनै बहु भाखि ।
हर्ष बिषाद सहित गमने तब सुन्दर रामरूप उरराखि ॥
जामवन्त अरु कपिनायक नल तारासुवन बीर हनुमान ।
सहित बिभीषण अरु सेनप जे रहिगे शेष कीश बलवान ॥
बिकल प्रेमबश कछु भाषैं ना भरि भरि नैन पुटन महँ बारि ।
सम्मुख चितवैं रघुनायक तन नैन निमेष टारि उरगारि ॥
बिकल प्रेमबश तिन सब को लखि लीनचढ़ाय यानपर राम ।
माथनाय कै द्विज पायँन महँ कीन्ह्यों गमन अयोध्याधाम ॥
भयो कोलाहल त्यहि औसर बहु जय २ करत कीश समुदाय ।
उच्चमनोहर सिंहासनपर बैठे सिया सहित रघुराय ॥
मेरु शृङ्गपर ज्यों दामिनिद्युति सोहत तथा राम सह वाम ।
गमन्यो पुष्पक अति आतुरगति हर्षित भये देवगण आम ॥
बजे नगारे हहकारे करि बर्सत फूल माल झरिलाय ।
CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जयरघुनन्दन जयसीतापति मुदसह कहत देव समुदाय ॥
चली बयारी सुखकारी त्रय शीतल मन्द सुगन्धित यार।
सागर सरिता जल निर्मल भो सुरपुर होत मङ्गलाचार ॥
शकुन सुमङ्गलयुत आसा सब उज्ज्वल दिपन लाग आकास।
मुद उमगानी मन सबही के कहत न बनै तौन नभबास ॥
कह्यो जनकजा ते राघव तब लखु प्रिय युद्धभूमि मनलाय।
लषण सँहार्यो मघवारी को यहिठां बिषम युद्ध दरशाय ॥
बालिसुवन अरु हनुमन्ता के मारे यातुधान बलवान।
अगणित डारे रण पुहमी महँ भारे नील अचल अनुमान ॥
कुम्भकरण अरु दशआनन दुउ मार्यो यही ठाम मैं बाम।
जे दुखदाता मुनि देवन के जग बिख्यात नाम बलधाम ॥
सेतु बिलोको यह बारिधि महँ बाँध्यों कीश भालु सहपाय।
ताकी रचना प्रिय देखौ तौ तुम्हरेइ हेत भयो व्यवसाय ॥
यह गृह देखौ अहिभूषण को अतिउत्तङ्ग शृङ्ग दिखरायँ।
किह्यों थापना जय आशाकरि पूरी तौन शिवा के सायँ ॥
असकहि सीता लघुबन्धव सह कीन प्रणाम राम रघुराय।
चल्यो अगारी फिरि पुष्पक उड़ि गमनत यथा बेग गतिबाय ॥
जहँ जहँ कानन मधि करुणानिधि बिलँबे कीन बास बिश्राम।
सकल दिखायो प्रिय सीता को कहि सब केर यथोचित नाम ॥
पुनि तहँ पुष्पक चलि आवत भो दण्डक विपिन जहाँ खगराय।
कुम्भजादि जे मुनिनायकबर सब कहँ मिले थलन प्रभुजाय ॥
सकल ऋषीशन ते आशिष लै आये चित्रकूट रघुनाथ।
तहँ संतोषित करि मुनियन को चल्यो बिमान बेग के साथ ॥
फेरि तरणिजातट आयोचलि तब प्रभु सीतहि कह्यो बुझाय।
तरलतरङ्गिनि अघभङ्गिनि ये यमुना लखौ प्रिया चितलाय ॥
सुगति निसेनी तिरबेनी यह देखहु प्रिया करो परणाम।
दुखहरिलेनी सुखदेनी अति महिमा बदत वेद गुणगाय ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

स०। तारत न्हातक के कुलसातक पातकघातक सिंहमतङ्गम।
नाशतहै यमफांसकि त्रासविकाशत दिव्यप्रभाअँगअङ्गम॥
बन्दि उधारत है जड़जंगम जारतहै दुख दारिद दङ्गम।
भङ्गकरै भ्रम भेक भुवङ्ग पतङ्गजा गङ्ग तरङ्गम सङ्गम॥
लख्यो अयोध्या अतिपावन पुर ख्वावन तीनिताप भवदाप।
दावन दूषण दुख दारिद को जग महँ अति प्रसिद्ध परताप॥
तब रघुनायक प्रभु सीतासह कौशलपुरै कीन परणाम।
सजल बिलोचन अति पुलकित तन हर्षित बार २ श्रीराम॥
आय त्रिवेणी महँ राघव पुनि आनँद सहित कीन असनान।
भालु कपिन सह महिदेवन कहँ दीन अनेक भाँतिके दान॥
निकट बोलायो हनुमन्तहि पुनि कह्यो बुझाय ताहि रघुराय।
रूप ब्राह्मण को धारण करि पहुँचो बेगि अवध महँ जाय॥
कुशल हमारी कहि भरत्थते तिनके समाचार लै यार।
आवो बेगिहि तुम मोरेढिग जावो सुत न लगावो बार॥
पाय सुआयसु रघुनायक को गमने तुर्त प्रभञ्जनजात।
भरद्वाज पहँ चलिआये प्रभु सँगमहँ जनकसुता लघुभ्रात॥
पूजा कीन्हीं मुनि नानाविधि गये सनेह भाय हर्षाय।
अस्तुति करिकै पुनि आशिषदै कीन्हे बिदा राम रघुराय॥
मुनिपद बन्दनकरि आनँद सह श्रीरघुनन्दन बैठ बिमान।
चल्यो अगारी अति आतुरगति गङ्गा निकट आय नियरान॥
मिली खबरिया गुहराजा को आये लषण सिया सह राम।
धाम छोड़िकै तब धावत भो सेवक वृन्द बोलाये आम॥
नाव किनारे लगवाई सब इतने समय माहिं चलियान।
पार सुरसरी के आयो तब उतरन हुक्मदीन भगवान॥
उतरि तड़ाका सुर सरिता तट किय जलपान औ असनान।
जनकदुलारी ने पूजाकरि बहुविधि दीन द्विजन कहँ दान॥
आशिष दीन्ही सुरसरिता ने होय अभङ्ग तोर अहिवात।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

गङ्गा मुखकी सुनि आशिष शुचि भई प्रसन्न जानकी मात ॥
सुनतहि धायो प्रेमाकुल गुह आयो जहाँ राम सुखधाम।
माथ नायकै अति आनँद सों कीन्ह्यों पगन माहिं परणाम ॥
सियसह शोभा लखि राघवकी मगन सनेह भाय अकुलाय।
पर्‍यो धरातल महँ बेवश ह्वै दीन्हीं देहदशा बिसराय ॥
प्रेम अवस्था लखि ताकी प्रभु दयानिधान भक्तके प्रान।
हर्षि उठायो उरलायो त्यहि सो मुद कहि न जाय हरियान ॥
कुशल बूझिकै पुनि करुणाकर प्रेम समेत पास बैठाय।
हाल हकीकति सब बूझत भे कह्यो निषाद पगन शिरनाय ॥
भयोंकुशल अब पदपङ्कज लखि सेवत जिन्हैं शम्भु अजदेव।
आजु कृतारथ भे लोचन द्वउ प्रभु लखि मिटी अनट अवरेव ॥
नीच बतावत ज्यहि सबही बिधि तौन निषाद हृदयमहँ लाय।
मिले प्रेमसह रघुनायक प्रभु भरत समान मानि खगराय ॥
ऐसे दायानिधि स्वामी कहँ जे शठ भजत नाहिं मन लाय।
तिनको जीवन धिक दुनियामहँ जन्मी कुलकलङ्क त्यहिमाय ॥
रावन अरिको यशपावन यह सब दुख दोष नशावन हार।
सिद्ध देवता मुनि गावत ज्यहि कलिमलहरन सुगतिदातार ॥
युद्ध बिजै यश श्रीराघव को जे जन सदा सुनैं धरिध्यान।
तिनकहँ सन्तति सुखसम्पति यश बिनय बिबेक देहिं भगवान ॥

स० । है कलिकाल कराल महा भ्रमजाल बिषै बश कै बहँकावै।
लालच क्रोध कुकर्मन सों यह माया मनुष्यन बुद्धि भ्रमावै ॥
बन्दि सहाय न राम विना कोइ जो भवसागर पार लगावै।
याते तजै सब राम भजै मन जाविधिते भजिबो बनिआवै ॥

इति श्रीभार्गववंशावतंसश्रीमुंशीप्रयागनारायणस्याज्ञाभिगामीउन्नामप्रदेशान्तर्गतमसवासीग्रामनिवासीपण्डितवन्दीदीनदीक्षितनिर्मितश्रीविजयराघवखण्डेयुद्धकाण्डेश्रीरामचन्द्रसमरविजयतथाअयोध्यागमनवर्णनोनामनवमोल्लासः ॥ ९ ॥ समाप्तोयंयुद्धकाण्डः ॥

इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

इश्तहार ॥

सम्पूर्ण महाशयोंको प्रकट होवे कि इस पुस्तकको मालिक मतबा अवध अख़बार ने बहुतसा रुपया व्यय करके अपनी ओरसे उल्था कराके निज यन्त्रालय में मुद्रित कराया है इस कारण से कोई महाशय इसके छापने का इरादा न करें-

मैनेजर-नवलकिशोर प्रेस,
लखनऊ.

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

इश्तिहार ॥

नाम किताब	क़ीमत
रामायणगुटका तुलसीकृत मूल सातोकांड	॥=)
रामायणछन्दावली तुलसीकृत मूल	)॥।
तथा मय टीका बैजनाथजी	-)
रामायणतुलसीकृत टीका बैजनाथ	५॥)
रामायणमानसदीपिका	-)॥।
रामायण मानसप्रचारिका	।-)
रामायण रामनिवास	॥=)
अद्भुतरामायण	-)।
रामाश्वमेध भाषा	=)
रामायण उमरावसिंह कृत	॥)
गीतरामायण	-)॥।
श्यामरामायण पत्रानुमा	।-)
अध्यात्मरामायण भाषा टीकासहित	१॥)
अध्यात्मरामायण भाषा टीका व नक़्शा सहित	३)
अध्यात्मविचार रामायण भाषा कामिल	२॥)
महारामायण	)॥।
श्रीपदबन्दरामायण	=)॥
तुलसीकृतरामायण की मानसप्रचारिका	।-)
अवधबिलास रामायण	=)
बरवैरामायण सटीक	-)
कुंडलियारामायणसटीक	।=)
उभयप्रबोधक रामायणभाषा	१)
शब्दार्थ किष्किन्धाकांड	)।
विजयराघवखंड आल्हा कामिल	१॥।=)॥
तथा बालकांड	॥-)
तथा अयोध्याकांड	।=)
तथा आरण्यकांड	≡)
तथा किष्किन्धाकांड	=)॥
तथा सुन्दरकांड	।)
तथा उत्तरकांड	-)

मिलने का पता:-

रायबहादुर मुंशी प्रयागनारायण भार्गव,

मालिक नवलकिशोर प्रेस—लखनऊ.

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor